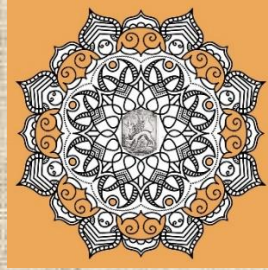


इषषम रररर-५४ ७श वरररररर

वरररर ३६८ म अंक १५ अर्पणै २०२३ (वर्ष १६ मास १८४ अंक ३६८)

[वरररर (सगये २०००) इषषम रररर-५४ ७श वरररररर (सगये २००४) [\[वररररररर\]](#)]



वरररर मैथयि साहयि आगुठगः मागुषमहि संसकृताम्



वरररर- पुनथम मैथयि पाकषकि इ-पुनकि

सम्पादकः गणगुद्गु गकुन।



© શ્રુતેનાથશાસ્ત્રી (સાધેસવદિહબાપિયોન)
વદિહો-હોનાથ: ૨૨૨૨ ૨૨ ૩૬૮ ૧૧ વદિહયોન

અનુક્રમ

૯ અંકમે અર્થ:-

૧૧૭૫૦૬૧ ડાકુ- ગૂઝ અંક સમ્પાદકોય

૧૨અંક ૩૬૭ ૫૧ ટપ્પામી

કથા વર્મિન્સ વર્ણિષાંક

૨૧અટ-૫૮૧, ગાડ-૩૬૫૧ શિવ-સક્તિક પૂજા ઇડિ-યોગિક નુપમે

૨૨સોની ગીઠ હા- આયુગિકાક પૃથિવે મે આયુગિક યાત્રિકથા

૨૩સંપૂ દાસ- કથાકૃતિ અસ્થિભા

૨૪ગૌરીગાય- કુમાર પવનક પૃથિવે કથા 'પર' ક સંગ પૃથકશિ સંપૂ
દાસક કથાકૃતિક સમ્વર્ણમે

૨૫મૈથિલિક "સને કહા થા" માને કુમાર પવનક દીર્ઘકથા "પર"
(યાત્રિકા સંપૂ દાસ)

२६ मुन्गी कामा- समकाषिण यत्निका संजु दास

२७ मुकेश दा- अपन सैषी आ नकनीकक वँ आधुनिक कथा मे अछि
पह्याग वना गहीह संजु दास

२८ गोबिन्द यन्दा दास- कामसूत्र के वना कोनो यत्नि सैषी नहि छैक-
छैक कथा के साक्षात् वसिष्ठवर्द्धिदाय गुमनाम गायक कृष्ण कुमार कश्यप
(आ सशिविठा)

२९ गोबिन्दा कुमार दास- पत्रिका सहयोग सवसऽ जूनी

३० संजु दासक कछि वीछै कथाकृति

३१ गोबिन्दा दा- कृष्ण कुमार कश्यप आ सशिविठा- एकटा पत्रिका

३२ गोबिन्दा दा, जगदु- भविष्य यत्निका- गेपाठ प्रसंग

३३ गोबिन्दा दा- श्वेता दा यौवनी- एकटा पत्रिका

ऐ अंकक अग्रगण्य नयना

३४ दास

३१७० उदयनाथ हा 'अशोक'-गामक गानकालः एक पत्रिशिष्ट

३२संगोष कुमार नाथ 'वटोहि'-मंगलौगा (एगा१हम प्येप)

३३संगोष कुमार नाथ 'वटोहि'-समीक्षा-पनिगी गान वनिगी

३४वीरगद्ग गानाप्रसन्न भस्मि-मार्तृभूमि (उपग्यास)-रप म प्येप

३५कुमार मनोप कश्यप-ओ दधीया

३६नर्मिषा काल-अग्निसिद्धि (प्येप-१७)

३७प्रसन्न हा-कर्मगद

३८आयान्त्र गामगद्ग मसुड-मथिषि के ठाः उपग्यास सम्राट
श्रीसीस्रवनाथ गेसु आ पानो

३९७० कशिन कानोपान-ठोगी डैस(हास्य कटाक्ष)

३९०० देव कामल-मथिषिमे मांगेन पत्रास छः! (आगाँ) व्रत्ताति नस् याह
पोपना'क अन्ध पानिगीठुँ (उद्युक्था) उद्युक्था-पनयाक गहितान्थ यथा
मुनानी छकवय (उद्यु कथा) उद्यु कथा-हृदयैन् मैथिषि वहिन कथा- -
सापनपट्टा गान पागठ-वहिन कथा सुनेना वेटी - मैथिषि सामाजिक

ઉપન્યાસ ઇપિ પટાપેટ માન્ય દયહ (ઇલુકથા) ઇલુકથા- ફ ગુડ ખેનૈ કાન
 છેદૈને અન્વોહ પાનિ ૩૬૭-ઇલુકથા (મૈથિલિ) ગોળ સેન્ટેડ ઇચી (ઇલુકથા)
 ઇલુકથા -નાની કેં નૈય છે નાના

૪૫૬૫ પામ્ડ

૪૬નાળ કશીન મશિન-અંતસ્-નમ

૪૭નિમલ કામ્- પૂડ શીન

૪૮કશિન કાનોગન- આ ને સુગ્ગા આ આ (વાઇ કવનિ)

૪૯કલ્પના હા- વ્યગ્ના

૫૦ સુમંગલ હા- મૈથલિ



ॐ દ્યૌઃ શાન્તનિન્ત્રક્ષિઃ ગ્વંગ શાન્તિઃ પૃથ્વી શાન્તિપઃ શાન્તિૌષધયઃ
શાન્તિવ્રજસપાત્રઃ શાન્તિવ્રશિવે દેવાઃ શાન્તિવ્રહ્મ

: :: ::

વ્રહ્માસૈ પ્નાત્રના ળે દ્યુલોકમે, અંત્રક્ષિમે, પૃથ્વીપત્ર, ળભે, ઔષધમે,
વ્રજસપાત્રિ, વ્રશિવમે, સઞ દેવતાગાસમે આ વ્રહ્મમે શાન્તિહિઅપ્ર।

ૐ-વ્રહ્માસ, દ્યૌ-સૂત્ર-ત્રેગાસ, અંત્રક્ષિ- પૃથ્વી આ દ્યુલોકક વીય,
આપઃ-ળભ, વ્રશિવેદેવા- સઞ દેવતા, વ્રહ્મ- સ્પાત્ર।

, , , , , , ,

|

-, --, - , :-, - , - ।

ૐ, સ્સૌશીષાં પુત્રૌષઃ। સ્સૌક્ષઃ સ્સૌપાત્ર।

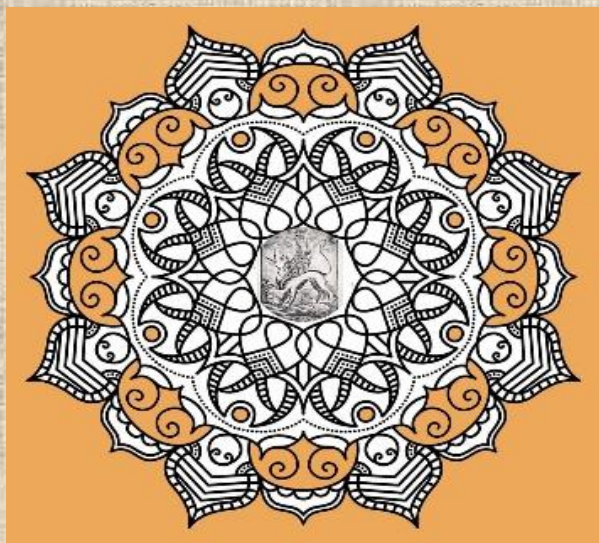
, ↓↑↓ ↑। ↓↓↓ ↑↑।

સ શ્રૂતિં ગ્વંગ વ્રિશ્વતોં વૃત્ત્વા। અપ્રંત્રિષ્દ દશાહ્નુંભ્ ॥

↑ ↓↑↓ ↑↑ ↓ ॥

હજાત માથ, હજાત ઔપ્તિ, હજાત પપ્ત્ર સંગ વ્રશિવકેં આય્ષાદતિ કેને અઘ્તિ,
દસ આંગુત્રક ગગતીક વ્રશમે ગૈ અઘ્તિઓ।

(થમિહુના અગળા, અગકુસહોડ ઘાગેસહળા, પભાયેદ 11 નહે વેગનિગનિગોડ
સોમેનહનિગા)



११।।जेण्ड-१ डाकु-१- गूगल अंक सम्पादकीय

१२ अंक ३६७ ५१ टिप्पणी

9

୧୦ ମେ ୬ ବ୍ରାହ୍ମଣ + ୧ ଗର୍ବ-ବ୍ରାହ୍ମଣସଦୃଶୀ ଆ ସମାଗାଗ୍ରୀ ଧ୍ୟାନାକ ଏକ୍କୋଟା
 ଗାଏ-ସବ୍ରୀଣ ଥେପକ ଗର୍ବ ଛର୍ଥୀ, ଧେ ଗା ୧୫ ବ୍ରୀପ ସଠ ସୀମାଗି ଆଧ୍ୟାକି
 ସଂସାଧକ ଅର୍ଥେ ମୈଥାସି ଥେ ଗାଗ-ପ୍ରୀଣ ଅନୋପେ ଛର୍ଥୀ ଗ୍ୟାକିନା ଧୀକ ଈ
 ପ୍ରୀମାନ୍ସଦାଗ୍ରୀ ସମାଗି ଏଠି ଅର୍ଥ, ଆ ଈ ଅଗାଢ଼-ପଞ୍ଚିଢ଼ା ଢୁଗୁକ ଏଠି ଥେ
 କାଠ କ୍ରୀନ, ସାହିତ୍ରୀଧେ ଧେ ଏଠି ଛର୍ଥୀ ସେ କ୍ରୀଆଧିଧେ ନହା, ଗାଢ଼େବ୍ର ମାନ୍ସଠ
 ଧୀକ ନ୍ୟଗା ଧୁଗ୍ରୀ ବାଢ଼େ ଛର୍ଥୀ ସେ ବାଢ଼େ ନହା। ସମାଗାଗ୍ରୀ ଧ୍ୟାନାକ
 ସାହିତ୍ରୀକାନ୍ ଠେକନା ଥେ ଈ ଧ୍ୟାନାକ ଅଗ୍ରୀମ ଅର୍ଥ ଆ ସେ ଢୁଗୁକା ଢୁଗ୍ରୀ କାଠ
 କ୍ରୀଧ ପଢାଗ୍ରୀ

उपोक्तानिम्ह प्यान, सुभाषयन्द् ए प्राद्व, पुनोद कुमान हा, देवशंकर गवोग, तानानन्द वरियोगी, वरिध्यानन्द हा, नमस् कुमान सहि, अण्य हा, वोम्हा शकुन, गयकिता।

२

કઠો આસ્વાદન ઓ કઠો સમીક્ષા- સૈદ્ધાંતિક પક્ષ

9

૧૦ મે દ વ્નાહ્મામ + ૧ ગવ-વ્નાહ્મામવાદિ આ સમાનાગ્તી યાનાક એકોટા
ગાન-સવનામ એવક ને છર્થા, ખે ગા ૧૫ વન્ય સડ સીમતિ આનથકિ

સંસાધનક અઘૈન મૈથાથિ ઘેઠ ડાન-પુનામ અનોપને છથા ગયકિના ડોક ઈ પનામ્સદાત્ની સમતિાણટિ અછા, આ ઈ અગડા-પછિડા દુગ્ધક ણટિ ઘેઠ કાળ કનન, સાહિત્યમે ડે ણટિ છથાસે કાઠિઆપ્ઘે નહા, નાળદેવ મામ્ડઠ ડોક નયના ડૂનો વાડને છથા સે વાડે નહા। સમાગાનન યાનાક સાહિત્યકાન ઠેકનિઘેઠ ઈ પ્પાનાક અઠાનમ અછાઆ સે હુનકા દુગ્ધા ગાનિસં કાળ કનય પડનગી

ઠિસ્ટ:

ઉપાકનિમ પ્પાન, સુમાધયનદ્ન પ્રાદવ, પુનમોદ કુમાન દા, દેવસંકન નવીન, નાનાનનદ વ્રિયોગી, વ્રદિપ્રાનનદ દા, નમમ કુમાન સહિ, અપ્પ દા, વ્રીમા ડાકુન, ગયકિના।

૨

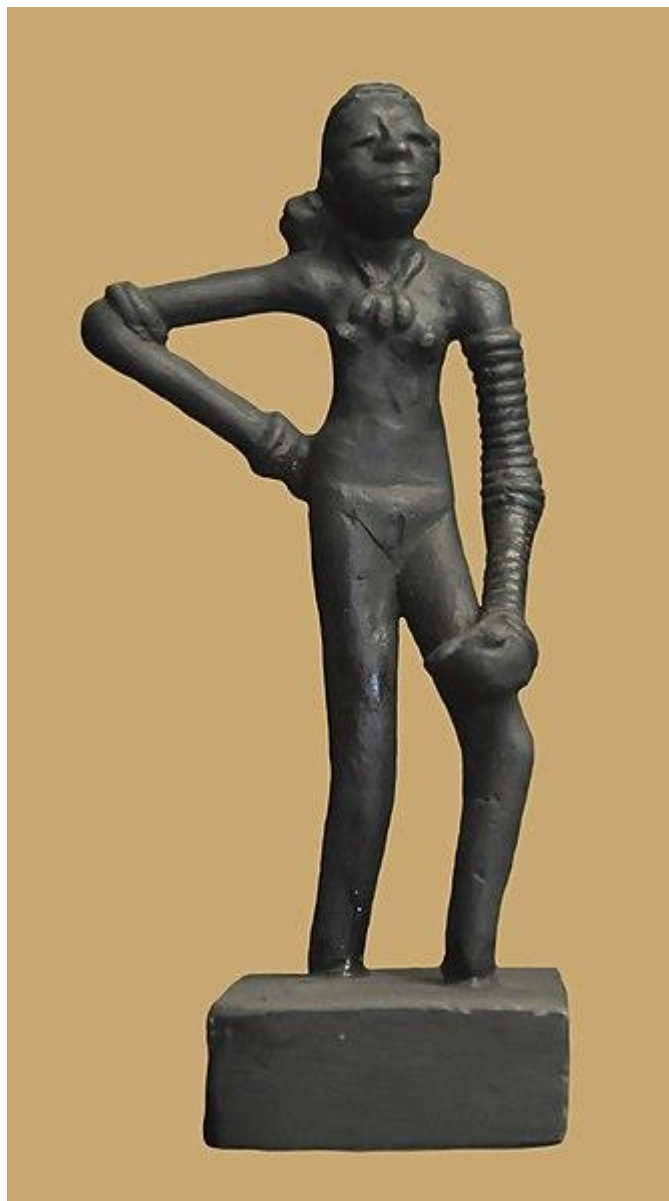
કઠા આસ્વાદન આ કઠા સમીક્ષા- સૈદ્ધાંતિક પક્ષ

૧

નૂતની (!) વા મહિષિક મૂર્તિ (૨૫૦૦ વીસીઈ)

જાનનમે પુનાયીનનમ કઠાકૃતિ સિન્ધુ ઘાટી સગ્ધનાસં પુનાપ્ત સામગ્ની સજ અછા

નૂતની (!) વા મહિષિક મૂર્તિ ડે યાનુ (કાંસ્ય) ક અછાસે મોહનડોદાડેસં ઝેટઠ। કઠાકાનક નામ અપ્પાન અછામુદા ડાકૃષ્ટનામે ઈ મોહનડોદાડેક કઠાક પનમિતિ અછા મોટામોટી યાનિંચી ડૂંચ, દૂંચી યાકન આ એક ચંચી મોટ ઈ કઠાકૃતિ આર-કાઠ્ઠી નાપ્ટનીય સંગ્નહાપ્ત દિવિષિક સિન્ધુ ઘાટી સગ્ધના ગૈઠીમે નાપ્પઠ અછા



(સામાન યો નવિ, વિકિ છછ-ઘૈ-૫૨-૩૦)

કઠા આસ્વાદનક છેવ આવ દેખી ખે એમે કી અછાખે એકના અક્ષ્ટ વનવૈન
અછાખી

૧૬ એકટા પાત્ન દુવ્વન મહિષિક અનુકૃતિઅછાખી

રમહિષિ ગઢ અછાખી વામ હાથ વામ ખાંધ આ દહનિ હાથ ડાંખન પાછુ દસિ છે।

રૂઝાંખા પૈઘ-પૈઘ છે।

૪કેશ ઔઠિયા છે।

પનાક થોપછ છે।

દમહિષિ ગગ્ન અછાખાત્ન ગાનામે કંઠહાન આ હાથમે યૂઢી દેખા પડીનહ છે।
વામ હાથમે ૨૪ ટા યૂઢી મુદા દહનિ હાથમે માત્ન ૪ ટા।

૭કકવા કણ કેશ પાછાંમે ખૂઢી વાગ્નહ છે।

દમાથ પાછાં દસિ ઝાગ છે।

દંહાથ સાપેક્ષ નૂપેં નમ્હન વુહપિડે છે।

૬ મહિષિક અનુકૃતિઅછાખી એકના નાનાકી કાપે કહછ ગેઠ? કી અહાંકેં એમે
મહિષિ નાનાકીક કોનો ટા ઉક્ષમ દેખા પડે? નાષ્ટનીય સંગ્રહાણ આ
શાહિસક પોથી પાના સગમે ૬ નાનાકીક નૂપમે વાનામાનિ મેટા ખે પુનુષ
માનસિકતાક પનામાન અછાખામે મહિષિ છેખાકા નોમિષિ થાપડ ખે માત્ન
શાહિસકાન છથા, સેહે અપનાકેં ઓહના છેને છથા કઠા-શાહિસ આ
પુનાનાત્વક અચ્ચપ્પન અછાખે એનાહક નામ અપ્પન હેશ અછાખી

अग्न्याक पक्षिः गंगक गङ्गाकुमारी (२०० बीसीई सँ ४८० सीई)

अग्न्याक एकटा गुह्यपन भवितुयित्ति (सभसँ पुनान यत्तिनका) एकटा पक्षिः गंगक अग्निसिन्धु गङ्गाकुमारीक यत्तिनास, जे गहना पहिने अर्ध आ केशमे सेहो गहना छै।

३

प्युनाहो (८५० सीई सँ १०५० सीई)

[प्युनाह (वयिछू- वृक्षयिक संस्कृति)- एकटा अप्सना अपन पांघ उद्यान किऽ देखा रहै अर्ध पक्षि वृक्षयिक यत्तिनि छै, नहि सँ प्युनाहो नाम]।

नोमि थोपड़ एका कथाक किं पथायनक कथा कहै छथि तेनहम शताब्दीक पक्षदेवक गीत गोवर्गि सेहो नोमिके नव ठो छन्ही कथाक शहिसकाम आ पुनातवर्गि नोमिक गपसँ असहम छथि कथा शहिसकाम देवांगना देसा कहै छथि जे योगि आ ठिगि आन्येन सन्ध्यामे वदियमान छै, वातस्ययनक काम सूत आ काविसक कुमानसन्धव प्युनाहो आ गीत गोवर्गिसँ वहुन पहिनेहिसँ अर्ध आ कहै छथि जे वृक्षयिक तुपना काम ठेठपना नूपी वपिसँ कए जाइत अर्ध आ सह संकल्पना अप्सनाक पांघपन यत्तिनि अर्ध।

- घाणेनना थहाकुन, दिति, वदिह (मे पानाउ वदिह वदिहयोगि -सेनह युन औहासअपन गो तो +८९८५६०८६०७२९ सो नहात नि याग वे ।६०६६ तो नहै वदिह औहासअपन नोहादयास ठिसि।)

अपन भान्वे दिति गिठिसना उडवदिहगामाठियोन पन पडाउ।

१२अंक ३६७ प५ टपिपामी

आशीष अगयगिहाम

संगोष नाय वटोहि जोक डायनी गीक जा नहथ अछी मुदा हुनकन उपन्यास
मंगनौना कने पाछू यथ नहथ अछी आशा अछिजे ओ अपन उपन्यासकें
शीघ्र पूना कनगा।

अपन मंगवृत्ते दगिगीठिसगाउउव्रदिहवामाठियोम प५ पडाउ।

कथा वभिन्स वशिषांक

रुद्राष्टक-पटल, गाउट-उद्यान शक्ति-सक्तिकी पूजा उडि-योगिकी नुपमे

रुद्रसोनी नीलु हा- आयुनकिताक पनविश मे आयुनकि यतिनकथा

रुद्रसंगु दास- कथाकृताभि अश्वीवता

रुद्रगौरीगाथ- कुमान पवनक पुनसद्वि कथा 'पशु' क संग पुनकासति संगु दासक कथाकृताभि सम्बन्धमे

रुद्रमैथिलीक "उसने कहा था" भागे कुमान पवनक दीनकथा "पशु" (यतिनांकन संगु दास)

रुद्रमुग्गी कामान- समकाषीन यतिनाकान संगु दास

रुद्रमुक्तेश दान- अपन शैवी आ नकनीकक वरु आयुनकि कथा मे अगु पह्याग वना नहिवि संगु दास

रुद्रगोवर्गद यन्त्र दास- कामसूत्र के वनि कोनो यतिन शैवी नहि छैक-

छोककछ के साक्षात् वसिष्ठवर्द्धियाछ्य गुमनाम नायक कृष्ण कुमान कश्यप
(आ सशविछाँ)

२९८१वोर्द्ध कुमान दास- पनविनक सहयोग सवसऽ जूनी

२९०संगू दासक कछि वीछछ कछकृत्

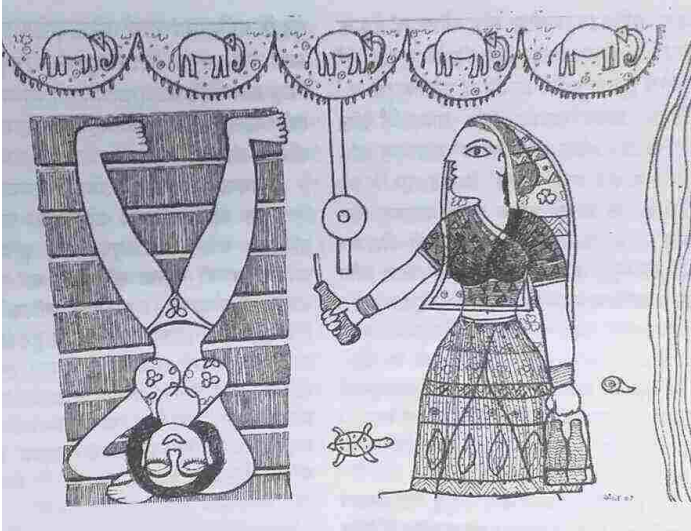
२९९गजोर्द्ध गकु- कृष्ण कुमान कश्यप आ सशविछाँ- एकटा पनयि

२९२जोर्द्ध ह, जगकपु- भविछि यतिनकछाँ- गेपाछ पुसंग

२९३गजोर्द्ध गकु- श्वेता ह यौवनी- एकटा पनयि

अट-१-५८, गाउट-उद्यान शिव-सक्ताकि पूजा छि-योगकि नुपमे

अट-१-५८, गाउट-उद्यान शिव-सक्ताकि पूजा छि-योगकि नुपमे



पनभेस्वरी कापड़ा

ई अट-१-५८, गाउट-उद्यान, जंगल-मुडिया कछाकृति नर, पनभेस्वरी कापड़ा
मथिछि आनटक आननआयुनकिना ओ वैस्वरीक कृतिअर, जेकना सहाज आ
जगहाज कजै सांस्कृतिकि आयाम देवमे पनहेज कनहिपडा !

(यति 'अंकि' स' साजान)

गाणेन्द् वमिठ

पनपनासं पेठवाड!

पनमेश्वर कापड़ि- गाणेन्द् वमिठ -अथम !

गंजू मशिन्

मनमौजी न गेठ छै सव।

पनमेश्वर कापड़ि- गंजू मशिन्- वेपुद्

नोशन यौधनी

गानि-मुनियो।

वृषेश यंद् गाठ

हमना ठगैठ अछि कठकान कछि देप्पव यहाँ छथि । एए कदायति सम्पन्नताक दृष्टि आधुनिकता की थीक आ कोना ओकन सेवामे ओकने स्थि अगुसानक मांग समाजकेँ पूनएक वायुता वर्गिगेठ छैक से देप्पवक पुनर्गठ गेठ अछि । हँ कछि आओन सुपटना नहिनि न गीक छैक ।

पनमेश्वर कापड़ि- वृषेश यंद् गाठ- वधौसीके कतेक ठेवा ठाएवै मीना !

वृषेश यंद् गाठ

मीन, गव-गव कोस आवए दशौक ने । आओन सुपट आ वकिसति होइक नाहिठेठ सग केओ पुन्यास करी । हमन अन्थ ई नहिजे अटन-पटन, गाउट,

उद्यान होशक । हँ, ई जे भयिषि आन्ट पनपनागान यत्निकानीये टा मे समिति
गहिनहए । समय सापेक्ष अगव्यक्तिक सशक्त माध्यम सेहो वनए ।

ईशनाथ ह।

के शनिमामा छथि एक संपादक ? (अन्तिकिक)

भयिषि कुमान ह।

गदिनीय

कुसाठ

एहि यत्न के ठ क ' पनपना गंगन ' एवं अयन्त पुनर्गठन एहिम एवं
अग्य पनपना नक्षी ठेकनद्विवाग वेस वाग मेथए । यत्निकान एवं संपादक के
गाम कनिको गर वूहठ छरन । अथवा गाम ठेठ पन गह्विवा अशुद्ध हेवाक पाना
हेरन । एहि यत्न के अंतिकि छपने अर । संपादक - गौरीनाथ । यत्निकान -
संगू दास । आउठठुक पानिकि मे संगू दास के साक्षात्कान छपठ छरन ।
ओग अग्य यत्न क संग रहे यत्न छर । यत्निकान कृष्ण कुमान कश्यप
के कानिय यत्न सव गीत गोवर्दि (जयदेव) के पद सव पन आयानि
छरन । कश्यप जी ओकना कहियौ सात्वजगकि गर केछरन । कानाम छर ३एह
पोगापंडति पनपना नक्षी ठेकरन जे स्वयं पनपना क ज्ञान स रहि
छरथ ।

वज्रदेव ह।

कुसाठ-कृष्ण कुमान कश्यप आप एहि धिनी पन गह छथि तौ हुनक गाम
पन कछिओ हूँ यथा दियौ । वामपंथ सदैव ओपन सेक्स यानितिक

उय्यसूयपुत्राक पक्षधन १६७ अछी कएक गाम पन सेक्स आ
अश्वीपुत्रा पसानव वामपंथक यति १६७ अछी।

कुसा-वृजियदेव हा- हूँ दक्षमिपंथ क वशिष्ठा छी । वामपंथ हनन सत्य
क पक्षधन अर आ १६७ ।

कक्षप जी क यति हमन देय अर ।

सेहो एसगन गर, पूना पुनोदक्षन ठीम छै ।

कुमान पद्मनाभ

एहि यति मे माननीय पनधिन मे कोउन्कि वेथै सती वेसी अश्वीप अछी
गगना सवधम पनाप गहि होश छैक वकिनी सुमीमिगे पुठ आका वीय पन
कोनो पनाप गहि ठाँगे छैक समस्या अछीगे गगना आयुगकिनाक द्योनाक
कएक? पपन क आयुगकिना अम्वागीक वेटीक आ उक्षमी मतिगक वेटीक
विविह मे वागीक वगेन छैक आ अम्वागी आ मतिगक पनधिनक घोघ नागने
सतीगाम केँ पाना पुआवै छैक

सुगीठ कुमान मठकि

मथिगि यतिक गव आप्राम कहै जा सकैछ । एहि अश्वीपना देयगहिनके
यसमा वदवाक याही ।

नामयंन हा

सुगीठ कुमान माठकि-ग, एककेवेन एना गहिकहियौ

पनभेश्वर कापड़- नामयंद् हा- यौ की कहू! छगुनाश एहिदुआने छी जे ऐ
 वाकटौवठि मुहयोथौवठिमे गगना मातृत्व आ वेगउगपन सहिमे अन्धवना
 आ दृष्टि-दृशन गहि पौठक अछि । हमनासवे काठिमाइ, सहस्रवाहु
 संहारनी सीना गगन होशो (वेगउग नइ छैथ) पूज्य छथा! शवि-शक्ताकि पूजा
 ठि-योगिकि नुपमे; नागनाकि ओ शक्ता उपासक योगी महाशक्ताकि दृशन
 कर्ता छथा ! सवके अवोययिासि वहीने वेटी वेपुदे नैछ । तव ई घोठ
 घोउहाउग !? गम गुमे कजग, कुगम गुमे कर्पिा ! जाहिगम वसना आ
 ठिठके कीटठ हापगपुदाक सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहार छै ओतए ई एहन
 सेक्स गगनाक गुप्प उठैछ त' एमे वेदमे छेद नइ हुअर याहि । वयौहीनी
 कर्माके घोघट(ठाग-छेहाग) पडैत जे छगहि, से यन्म-यक्षुए गहि भगसा
 वयिाके आवनाम् वज्जग सेहो नैछ !! ई गगना दृष्टि-दृशन सापेक्ष
 अइ ।

सुनीठ कुमा मठकि- पनभेश्वर कापड़- सही कहै सग

नामयंद् हा

अहाँक वठिक्षम वशिष्ठेषमक समाहार तँ गम गुमे कहिए देवाए---! समथ
 कहूँ गहि दोष गोसाईं । नवपावक सुनसनी की नाई । ई वधिसिम्मा वाक्प्रक
 पनयि गंधवाक उपक्रम गहि हुअर सरह नीक ।

अपग मंगल्ये दतीनाठिसनाउडवदिहावाभाषियोम पग पडाउ ।

रससोनी नीलू हऱ- आधुनकिताक पनविष मे आधुनकि यत्निकथ



સોની ગીઠુ હા

આયુર્નકાક પાવિશ મે આયુર્નકિ યાત્રિકા

મથિથિક અઘૂઘ યાત્રિકાન છર્થા નવનિદ્ન દાસ ળી આ સંજુ દાસ ળી । ળાપ્ત મધુવની પેટગિ યાત્રુ કાન મેટ ળાપા હમના અહાકે, ઓળા હનિકા આયુર્નકિ યાત્રિકા એકટા સ્થાક શૈથિ મે મેટા મુદા વૃહા કમ દેખૈા હોલ્વ, સે ગહાિ સગ ।

૬ કા કોગો ગવ થકિ સે ગહાિઅપગા ઓળ ઓક ધેઠ ગવ ળ' સકૈચ ।

ઓગા ળાપ્ત સ્ત્રીક મૂક નહવાક પામ્પના હો, ઓહાઠામક ઓહા પામ્પના કે સગ્ધાના વુહાહા ધેઠ ૬ યાત્રિ સગ અવશ્ય પટકાનિ મુદા ળપ્પન, ળપ્પન ઓ અન્થ વુહથનિ ।

આ ળા યા ઓ ઓકનિ વુહાહ વુહાહ ના યા ૬ આયુર્નકિ યાત્રિકા વૃહા આગુ ઓ' ગેઠ નહાહ સંજુ ળી, સે વશિવાસ અછાિ

હાિવોય, વહિા સનકાન દ્વાના આપોળાિ "વહિા મ્પૂળાપિમ પટગા" મે "હા મહાિ કુચ પાસ" પાદ્મસગી સેહે યાિ નહ ટૈક । ળાપ્ત દ્મશક ધેઠ એકટા અદ્મૂા પાદ્મસગીક કેન્દ્ન વગઠ છનાિહનિક યાત્રિ સગ ।

વહિા સંસ્કૃતિવિશિાગ પટગા સહાિ આા આગ-આગ ક્ષેત્ર સ્ હનિક કા કે પુાસ્કૃત કલ્પ ગેઠ અછાિ

પુાત્રેક ક્ષેત્ર મે દ્મજન સ્ વેસી પાદ્મસગી મે હનિક સહાાગાિા છનાિ આ એકઠ પાદ્મસગી સેહે ।

દ્મજન ળાિ સ્ વેસી મૈથાિ, હનિદી પોથી, પાત્રિકાક કવન પા હનિક વગાઓ યાત્રિ અપન સ્થાન સુગશિયતિ કલ્પે અછાિ

કા કે કાકાન ળં અપન ળીવગક અવ્યાપ વગા ધૈા અછાિ ળં ઓકા યાત્રિ

वज्रौ अछि,अपन पनयिय दैत अछि।

हँ ई सत्य गप जे ओहि छेउ हमना सभकेँ ओकर भाषा बुझवाक क्षमता होवाक याहि।

ओना तँ हनिका ठेकनकि पनयिय देवाक बेगाना नहि,

पुनःपुनः कथाकाँ छथि छेकनि तैयो हमना ठगौत अछि जे

मथिछिक ठेक केँ, कथापुगेमी केँ, हनिकन यतिनकथा केँ

कनेक अपन दृष्टिकेँ वसिना क' देयवाक बेगाना अछि। "साहित्य,कथा"

कप्पनो अश्विथ नहि होश छैक अश्विथ होश छैक, गजानिआ सोय।

करोको अवाज पुनःसुकाँ सँ पुनःसुकाँ आ सम्मान कए जे छन सिंगुणी

आ नवनिहँ दास जीकेँ। हमना गज होश अछि हम हनिका आस-पास नहै

छी हमन अपन मथिछिक छथि, हम एकदोसनकेँ यगिहै छी।

संगु जीक यतिन मे गामक पनविश मे गुनामीन सत्नीक जीवन शैली भेटैत

अछि, हनिक कथाक माध्यम सँ हुनका ठेकनकि वियाँ बुझै छी।

हनिक वनाओ वहुन नास एहन यतिन अछि जाहि यतिन केँ हम सभ वैडक

हँ छे मे, सपनकक्ष मे, उगा सकै छी।

सभसँ पुशीक गप जे एहि शैलीक यतिनक स्वप्नशिक्षण छथि एहि शैली मे

यतिन वनाएव पुनुष पुनधान समाज मे डिके एकटा युगौती थिक। जाय सपिबैत

हो सगुना मे, हाँप-तोप आ अपन श्रुति केँ दवा देवाक छेउ, ओहन समाज मे

ओहि गम हनिकन यतिन अगघोष कएत अछि, वहुन नास गप कहैत अछि।

हमना भोग अछि हम सभ एकटा।

पुनःसुकाँ पुनःदाग सगागान मे वैसथ नहि, हमना वज्र मे यतिनकथा आदनामीय

नवनिहँ दास जी आ संगु दास जी वैसथ नहथि आ सामने मंथपन गंभीर

वर्मिन्स यथैव छठ जगत्, आदाम्नीय भौमव भव दास जी संग आन भी वहुन
गाम्भीर्य व्यक्तवि सन उपस्थिति नह्यी हमना पुनसंगना भेठ जप्पन सौ
- दू सौ दन्सक आ सुनोना सँ नगिठ सनागान मे, आदाम्नीय गंगेश गुंजण जीक
वक्तव्य यथैव छठ सन सुनि नह्य छथि, ई गप कतेक गोटेकें यथिग
हेनना से नहि कहि सकव। गंगेश गुंजण जीक कहव नह्यी जे जप्पन कोनो
कथाकान आ साहित्यिकानकें अगनिय कथा व जप्पन छेठ पुनसृष्ट कएए
जास छैक तँ अन्त्यक स्थाग पन संजु दास आ नवगिद्द दास जी रसाता कनैत
ओ

संकेत केथनि जे हमना सोहं पुनसृष्टि यत्निकान वैसठ छथि हुनका
ठेकनकि यत्नि सँ सेहो पुनसृष्ट कएए जा सकैछ। ई गप हुनका गेके वहुन
दूनक आ गहिन गप छठ। ई वात मैथिलि ठेककें मोग नप्पवाक याहयिन।

एन' हम हुनक दुनू गोटेक गप कह्य याहव, नवगिद्द जी आ संजु जी, मथिथि
मे एकटा नव यीज सप्पिवाक पनपना गढ कनैत छथि।

हमना सनकें दोस पेटगि सन जकाँ आयुगकि यत्निकथा सेहो सप्पिवाक,
वुहवाक याहि।

दन्सक कें सेहो कथा, यत्निकथा वुहव, सप्पिव याहि, हम सन जप्पने आठेयना
आ समीक्षा कनवाक योग्य वनव।

आठेयना आ समीक्षा सेहो आवश्यक मुदा जप्पने जे जप्पन वुहव, गुप्तव।

हमना ठौत अछि मैथिलि मडिया ठेकनकि हनिका सन
सँ साक्षात्कान कनवाक याहयिन। एहि सन वधिप पन
श्वेठ सँ वर्मिन्स होवाक याहयि।

अपन मंगल्ये दित्तिनाठिसना उडवदिवानाठियोन पन पडाउ।

रुद्रसंगू दास- कथाकृतानि अश्वीषा।



संगू दास

कथाकृतानि अश्वीषा

सबस पहिले न हम ई वात सुनछि दी जे हमनो ब्रियान अछि की कथा, साहित्य आ सुविमे मे नयनाकान के कछि सुनाना देठ जेवाक याही रहति नव ब्रियान आ नव कथा पनपना के बिकास समाप्त भय जायत ठ सब कथाप्रेमी लोकनि सो हमन आग्रह जे कोनो कथाकृतानि अश्वीषा अछि की नही केन। ओही कथाकृतानि के बषिय के मांग, आकृतानि के भाव संगमि।

आ

कथानमककना देपवाक वाटे नय कनू ठ एकटा आयुगकि कथाकान भेवा के का नाम हमन ब्रियान स अश्वीषा मानू एकटा ब्रियान छयिक ठ जेना एकटा गीव के छोट गुआ मे ओकन गीवी देपाई दैत छैक मुदा कछि लोक के ओही मे अश्वीषा सेहो देपाई छनि ठ जानत आ जानीयता पन गनव कनैववा लोक नाजकपून सग सुविमेकान पन गनव कनैत छथि मुदा

हुनक सुविमे नाम तेनी गंगा मैथि मे मगदाकनि के अपन वय्या के दूव पयिावै काठ मे कछि लोक के ओकन वेवसी देपाई पड़ैत न कछि के अश्वीषा सेहो देपाई देठकनि ठ एयन बनहिम जे कथा समाज स सम्बिधुं जे कथा मे अश्वीषा

थीना गाम के कोनो ब्रियान या कथाकृति नहि होश छैक ओ जेना साहित्य मे पाठक तय करैत छथिनी की कोन कथाकृति नीक छै आ की वेग्याय नहिना कथा मे दृशक, कथा समीक्षक आ वापिना ओ आव हनन पुनःमा अमृता शेनगवि छथा से स्वयं अपन गूड यतिनाम केने छथिह ओ आयुनकि कथा के शहिस मे कोको गगन यतिनाम भेटत ओ वृहत् नास माननीय सुनी कथाका न गगन यतिनाम करैत छथिनी जेना अनुपम सूद अन्पति सहि, मथि सेग, अं जगि सेग मेगन ओ

आव अहाँ लोकनि सो एकटा सवाओ कागीत गोबिन्द के अस्वीत कहव, वृद्धिदापति के सव नयना के अस्वीत कहव, कोहल के अस्वीत कहव, तान कथा के अस्वीत कहव, प्यजुनाह के अस्वीत कहव एते नहि कोको गौ सगातनी लोक न शिवि ठाि ग के सेहे अस्वीत कहैत छथिनी सगातन यन्म के स्थापति करिय वथा संकायायन्य ई कहिकि जे अपनेक वषिय अस्वीत अछि भेडन मशिन् के सुनी उग्रय माननी के मगा गए केने नहथिनी काम सासुन संवाद करिय छै । कृष्ण के वियाह न नुकुमिमी स भेट नहैत मुदा नाया कृष्ण गाम जपैत का ओको मैथवि लोक के मैथवि संस्कारक याद नहि अवैत छथिनी यन्यति सा हित्य प्यट्टन काका के नंग मे सवस वेसी पनपना के प्यिंस कथि जे छै क न कि ओ नीक साहित्य नहि ओ

हमन देश के यन्यति पतिनिका आउठुक मे छपठ कछि जेप्यांकन आ पेटगि मे मैथवि लोक के अस्वीतना देप्याई दैत छनि मुदा ओकर वषिय, गाव गंगामि नहि, ओकर कथात्मकता नहि ओ एतय सवस पहिने हम अपन ओहियति के यन्या करिय याहव जेकरा एकटा साहित्यिकान पद्मनाम जौ कथा मे अस्वीतना कहिकि सम्वोधति केठगि एते नहि ओकरा ओ गगवती घन स सेहे जोड़ि के यान्मकि गावना गड़कावै के कोशशि केठगि हमन याि ना मान् ई अछि जे ओ वेसी पढ़ठ छपिठ वृद्धि मे गौकनी करिय वथा लोक छ थिदिस वृद्धि मे कोको कथाकृति दियने हेताह ओ ओहियति मे गोआ नट

पन वदिसी पन्यटक के कोउडनकिस वेयैत एकटा सूनी छैक ठ सगवाथ ऐ
 ठ वकिनी मे सुनठ वदिसी सूनी आ अपन आजीवकिक ऐठ कोउडनकिस
 वेयैत मैथवि सूनी ठ आइयो यनीवेसी

ऐक मथिथि पेटगि के मातृ देवी देवता के यतिनाम वठा पनपनागन शठिप वु
 हैत छथनि एकटा कठा गहैठ जप्पन क आब मथिथि पेटगि वसिब पुनसद्वि
 कठा थकि जाहै मे आठ टा सूनी के पद्मसूनी सेहे गेटठ छनि ठ कोनो क
 ठा व साहित्य जा यनी समकाषिगता के समावेश गहै कनैत छैक ना यनीओ
 कना मे जीवता गहै आबि सकैत छै ठ पुष्पा देवी , संतोष दास , अवगिाश क
 नाम , अमृता हा आन कोको गव कठाकान सव एहि वात के नीक जाकाँ वुहैत
 छथि ठ हुनका जागकानी ऐठ हम वना दी जे सवस पहिने पद्मसूनी गंगा देवी
 गैत पानम्पनकि वषिय सव के मथिथि कठा मे जगाह ऐठगि नोठन कोसूटन , ह
 ॉसपटिठ के दृश्य , ट्रेन के दृश्य ई सव हुनक गैत पानम्पनकि वषिय
 छठनि ठ पद्मसूनी गोदावरी दत्त जे जीवत गनी पानम्पनकि वषिय वनवैत
 नहैह एकटा अपन कठापनेमी ग्राहक ऐठ वुद्धा कान्गवाठ सेहे वनौठनि
 ठ

कोक मैथवि ऐक कहैत छथि एकटा मैथवि मय क अहाँ मथिथि पेटगि कथि
 क गहै कनैत छी ठ हम मैथवि छी न की मातृ मथिथि पेटगि कनी , माँडन
 पेटगि गहै कय सकैत छी ठ हमहू सुनुआन मे पानम्पनकि मथिथि पेटगि कनैत
 छहुँ मुदा वियाह के वाद आयुर्गिक पेटगि कय ठाछहुँ ठ आव हमन पेटगि मे
 आयुर्गिक कठा आ समकाषिग कठा के वषियवस्तु आ नकनकि सेहे देयाई
 ऐठ ठ

कछि गोटे कहैत छथि आई यनी कोनो आन प्याता पुनापन कठाकान मथिथि
 पेटगि मे वकिनी पहिने सूनीक यतिन गहै वनाओठनि मथिथि पेटगि मे अ
 हाँ जागकान नाम सुनगे छी ओ सव वूढ़ पुनाग ऐक सव छथनि पहिने मथिथि
 पेटगि मातृ पानम्पनकि वगैत छै मुदा आव कछि पनविनाग मय नहै छै
 क जेना पुष्पा देवी , अवगिाश कनाम , संतोष दास ठ हमहू अपन नेपांकन मे

रङ्गगौरीनाथ- कुमार पवनक पुनसंहिय कथा 'पश्छ' क संग प्रकाशति संगू
दासक कथाकृतिक सम्बन्धमे



गौरीनाथ

कुमार पवनक पुनसंहिय कथा 'पश्छ' क संग प्रकाशति संगू दासक
कथाकृतिक सम्बन्धमे

पन्डित साध पदवि 'अंगिका'क अप्रैल-जून २००८ अंक मे कुमार पवन क
पुनसंहिय कथा 'पश्छ' क संग प्रकाशति संगू दास क कथाकृतिक पत्र पत्र
टिप्पणी कथन जा १९९ अर्थ ओक संस्करण मे कछि वाग मथिथि

संस्कृतिकि तथाकथानि नक्षत्रके यत्नि के ७५ कऽ कऽ १६७ छथि ओ
अग्रंता अश्वसोसजगक आ गनिदनीय अछि।

संगू दास हमना ठेकनकि समयक एकटा महत्वपूर्ण कथान छथि। संगू
जी मे स्वस्थ आ गतिशील पंथनाक पुनर्जा जागृक आ
समृद्ध्य हेवाक अभाव आरक वदथैत समय आ समाज के देख्य आ पनप्य मे
गपिस आधुनिकि यत्निकानक गजनी छन्हि। हुनक यत्निक पाँति वजैत
अछि, स्वस्थ मनुष्यक भोग केँ यतिगशील बना दैत अछि। गतिशील
नूपसँ ओ स्वशक्ति यत्निकान छथि, मुदा ओ एकटा कुशल कथान
छथि, जिनका कथक नाष्टनीय स्तनक कएकटा यत्निकान आ कथ
समीक्षक सहायता केने छथि। वहुत नास महत्वपूर्ण सम्मानसँ सम्मानति
संगू जी क पेटगि पुनर्जाति नाष्टनीय आधुनिकि कथ दीन्हा मे संग्रहित
भेटत।

दुर्भाग्य जिनका कमजोरी गजमे जगमग संगू जी स्तनक छथि। हुनक पेटगि
कं छथ टा एकठ आ दृष्टि वेत समूह पुनर्जागि
कए गेठ अछि। नाष्टनीय स्तनक पुनर्जा, अप्पवात आ कतिवमे ऐ सव
पन यत्न मेठ अछि। गतिशील दृष्टिकि समर्थक संगूक भागव अछि
जे आर्यो महविकेँ समाजमे उद्यति सम्मान भै भविष्य छै आन जायनाई सहज
भै नऽ जेतै, जायनामहिषि अपन रथका अश्विकृति
तनीका नाकैत रहै। आरक गतिक संघर्षक संग-संग हुनक रथका
अश्विकृति हुनक यत्निकथ मे भेटैत अछि।

संगू जीक व्रिहा आधुनिकि यत्निकान नवनिर्द कुमान दाससँ भेट अछि। हुन
गोट वहुत व्रियशील कथान छथि जिनका पन कोनो समाज गज महसूस
कऽ सकैत अछि। एहन यत्निकानकेँ कथक विनि वृद्धे हुनका यत्न पन
ओछ टपिपसी कथ वाँछ ठेक अपनकेँ ठेक-कव्रियत्निकान, मथिषिक

संस्कृतिकि नक्षक कहि सकैत छथि, मुदा संवेदनशील सून ५१ हुनका सव ५१ मनुष्य हेवाक वाग ५१ संदेह नऽ सकैत अछी।

'अन्तर्गत' क संपादकक रूपमे हम एकन गद्दि कहैत छी जे एहेन टिप्पणी कहैत छथि आ सगल मित्रमैदान सोय वला भक्ति सँ उक्ति हस्तक्षेपक अपेक्षा कहैत छी।

संगूदास मथिषि संस्कृतिकि तथाकथि नक्षककें आहल कनयवला पेटगिक व्रिषि मे कहैत छथि, "हम गोवा वीथ क दृश्य देखैत वाद ई उन्माद वगैरे नहि। मथिषिक एकटा महिषी व्रिदिशी पन्यटककें कोउ उन्कि वेयपड़ैसि नहि छथि अन्यगुन महिषी विकिनीमे एकटा व्रिदिशी पन्यटक अछी" भागवत जे पलायनक शक्ति मैथिलि उठना दूगोठक संग संग भागसकि व्रजनाक देवाठ पान कऽ नहि छथि अस्वीकारा ऐ यतिमे नहि, अथवा व्रिजनाक ठोकक गजानि अछी अंग अस्वीठ नहि अछि आ ने ओकर यतिना। जँ एह नहि तँ कोहवनक यति नहि वगैत।

(हनिदीसँ मैथिलि अनुवाद आशीष अगयनिहान)

अपन मंगल्ये दितोनाठिसगाउ उव्रिहवाभाठियोम ५१ पडाउ।

रूपमैथिलीक "उसने कहा था" भागे कुमान पत्रगक दीर्घकथा "प३९" (यतिनांकन संग्रह दास)

मैथिलीक "उसने कहा था" भागे कुमान पत्रगक दीर्घकथा "प३९" (यतिनांकन संग्रह दास)

मैथिलीक "उसने कहा था" भागे कुमान पत्रगक दीर्घकथा "प३९" (सागान अंकि) । हिनदीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेत, केँ वृद्ध छग्हि जे कोना अहिकथाकेँ नयिगद्दयन सन्मा "गुठेनी" अमन गऽ गेबाह। हम यन्या कऽ नह छी, कुमान पत्रगक "प३९" दीर्घकथाक। एकना पढ़वाक वाद अहाँकेँ एकटा वयित्ति, सुप्पद आ मोन हौव कहैवत अगुमव भेटा, जे सेक्सपीनशिन ट्रेजेडी सँ भठितो ठाग आ श्चुनाको। मुदा ऐ नयनाकेँ पढ़वाक वाद नामस, घृष्मा सगपन गप्पिनासकेँ आ सामाजिक पानिनाकि दायित्वकेँ सेहो अहाँ आन गंभीरतासँ छैवै, से यनपिक्का अछा मुदा एकन एकटा सन्त अछा जे एकना समै गकिाविकऽ एक्के उप्पड़ाहमे पढ़ि जाइ। ऐ कथाक यत्ति सगकेँ

वर्षा षष्ठी संपादक

दीर्घ कथा

पड़त

कुमार पवन

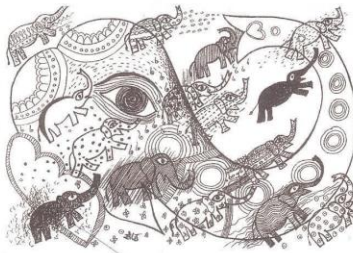
प्रायः एक युग बाद कुमार पवन फेर से लेखन में सक्रिय भेल छथि। विगत शताब्दीक नवम दशकक शुरुआत से लेखन आरंभ कर'वला कुमार पवन मैथिलीक सुपरिचित कवि, कथाकार आ व्यंग्यकार छथि। किछुए कथा आ तीन चारि दर्जन कविताक बल पर मैथिली में अपन फराक पहिचान राख'वला ई एक टा विशिष्ट कवि-कथाकार छथि। हिनक नव दौरक प्रारंभ एक टा यादगार दीर्घ कथा आ पाँच गोट कविताक संग भ' रहल छनि। प्रायः कतेको वर्ष से मैथिली में एहन सशक्त कथा पढ़बा लेल नई भेटल अछि। हमरा विश्वास अछि जे मैथिलीक व्यापक पाठक वर्ग केँ ई स्मरणीय शुरुआत बुझेतनि।

—संपादक

अन्हार में डूबैत खिरोड़...

मोन में औनाइत जाहि बेचैनी केँ टारि देबाक फेर में हम एत' प्रायः भागि क' आयल छलहुँ, से एखनहुँ कहाँ छोड़ि रहल अछि... ईटाक पाया आ काठक गाईरवला एहि जर्जर पुल पर ठाढ़ भ' नीचो लगभग सुखायल मिरतुकी खिरोड़ आ चारु दिस गर्द-गर्द भेल वातावरण केँ देखि मोन हल्लुक क' लेबाक आशा करब आब व्यर्थ बुझा रहल अछि...। खिरोड़, जे हमर गामक पूर्वी सीमान पर अदी से बहैत हमरा लोकनि केँ एक टा परिचिति दैत आबि रहल अछि, आइ केहन दुब्यारि-पातरि सनटिही सन भेल अपन अस्तित्वक लेल संघर्ष क' रहल अछि, से देखनि जानल जा सकैए। एक टा दीर्घ निसास छोड़ैत हम चारु दिस नजिर खिरबैत छी। सूर्य ढरकि चुकल छथि...। खने खुनाम पश्चिमाकाश...। घुरिआयल परिवेश...। नहु-नहु उतरैत अन्हार...। आ अन्हार में डूबैत खिरोड़...।

हम एत' को क' रहल छी? एखन तँ गाम पर रहबाक चाही। ओत' धमगज्जर मचल हैतै। कल्लुका भोजे तेहन रहे जे अनुका भोज लेल लोक सभ भोरहि से उत्साहित अछि। जटावला भाँगक पत्ती भोरहि में फूलय लेल ध' देल गेल छलै। कमलु भाइक खास आग्रह छलनि। से छनि। गाम में भोज रहैक तँ ओ दड़िभंगा में अटक नहि सकैए छथि। ओ काल्हि एदसबजिया ट्रेन से आबि गेल छलाह। उरसाहपूर्वक भनसिया सभक संग भरि दिन लागल रहलाह। बहै किए? बहुते लोक आयल अछि। कलियुजा नवयुवक सभ। काल्हिय से हरित क्रांतिक योजना पर अमल भ' रहल छैक। भोर से फुलैत भाँग केँ मोजि-मोजिक' पाँच पानि से धोने हेताह शोभन...।



सिलौट पर ताधरि पिसने हेताह जाधरि भाँग सिलौट ने छोड़ि देने हैत। भाँग में देल गेल हैत खीराक बीया, गुलाबक पत्ती, सौंफ, दखिनी, मरीच आदि-आदि कैक तरहक मसाला। बैनू छलै टीसन। नवीन झाक चाहक दोकान। कमलु भाइ साफ कहने छलथिन नवीन झा केँ, कोनो हालति में दस किलो दूध राखय लेल। दूध-चीनीक संग घोरल गेल हैत भाँग। गिलास-पर-गिलास देने हैत सभ...। सबहक मोन आब गुनगुना चुकल हैतै...। एखन धरि तँ सबहक संपर्क भ' चुकल हैतै बाबा बौरहबा से—सोड़े हॉटलाइन पर। आब तँ एक्कहि टा काज बाकी...।

सरबन बाबूक दलानक विस्तृत अगुअइत में नोतल ब्राह्मण सभक जुटान भ' रहल हेतनि...। ओत' एखन हमरो रहबाक चाहैत छल...। आ हम एत' एहि पुल पर ठाढ़ छी...। को क' रहल छी हम एत' ? सभ हमरा ओत' ताकि रहल हैत...। कमलु भाइ खास क' आ हम... ? तखन सेँ कतेको बेर गाम दिस बिदा होब' चाहलहुँ अछि, मुदा डेगे नहि उठि रहल अछि...। हिम्मत तँ करहि पड़त...। सामाजिक बन्दन केँ अनटिया देब उचित नहि...। जाय तँ पड़वे करत...।

नदीक छरकी...लचका...जरलाहा पोपर...

जेना-जेना गाम दिस बढ़ल जा रहल छी अन्हार आर सभनायल जा रहल अछि...। माल-जाल केँ चराक' बाध सेँ घुरैत लोक सभ...। मंथर गति-चलैत, पञ्जुआहि करैत, महीस सभ आ ताहि पर बैसल चरबाह सभ सड़कक एक दिस सेँ जा रहल अछि। सामने गाछी सभक पच्छिम रेलवे आ तकर ओड़ पार गाम। गाछी आ बैसबाक कारणे अन्हार आर घनगर बुझा रहल अछि। गाछी सभक खिरल भाग द' क' इजोत हुलकी द' रहल अछि आ संगहि सुनाइ पड़ि रहल अछि जेनेटरक

फट-फट-फट... अनवरत...।

गाछी पार क' रेलवे लाइन पर चढ़ैत छी...। एताहि सेँ स्पष्ट बुझाइत अछि—व्यापक ब्राह्मण समाज जुटि रहल अछि...। पुआरक सेकड़ो बीड़ा पंक्तिबद्ध राखल जा चुकल अछि...। बैसइ जइयो केर आग्रह सुनबाक लेल उताहुल बूढ़-सेयान-बच्चा-बुतर-छोड़ा-छोड़ीक भीड़...। भोज्य पदार्थ पर टूटि पड़बाक लेल सनद अटाटट्ट लोक...।

रेललाइन सेँ सड़कक लगानी पर उतरि जहिना हम आगौं बहैत छी कि आग्रह भ' जाइत छैक। को रेलम पेल! लोक सभ बीड़ा लुझ' लेल टूटि पड़ैत अछि। केओ चारि-चारि टा बीड़ा लुझि-ओछा पलथी मारिक' बैसैत अछि तँ केयो बीड़ाक अभाव में चप्पले पर आसन जमा लैत अछि। दम्बू प्रकृतिक लोक बीड़ाक लुटि में पछुआ गेला संतां हारि क' चुकिए माली बैस जाइत अछि...। ओन्हर जे केनेक हमर-झोंटि-पर-झूलय-बड़का-बड़का-लोक वला लटै सेँ लैस अछि से बलजोरी सरबन बाबूक टाल सेँ झींक-झींकि पुआरक मोटका बीड़ा बना बैस जाइत अछि आ गर्ब सेँ गर्दिन तानि चारु दिस ताकि रहल अछि जेना कि कहि रहल हो, 'मर्दक

बेटा अछि क्यों तै टोकि क' देखओ नेज ।' लोक फराके सँ हीं...हो...क' रहल अछि परंच कैक्कर हिम्मत छै जे समझ मे आबिक' ओकर...।

आब पात परसल जा रहल अछि...पुनरुदयक पात । अदभुत ! आब जखनकि प्रायः सभ भोज मे लोक दड़िभंगा वा पुपरी सँ पातक रेडोमेड प्लेट आ बाटी ल' अनैत अछि तखन पुनरुदयक पात ? सरबन बाबूक हठ छलनि । खजुराबाक पोखरि सँ आनल गेल छलै बोझक बोझ...। सरबन बाबूक तँ खाली हठ आ इच्छा छलनि । असल व्यवस्था सँ कयलनि राख लला । से छनि । लोकक हुनका कमी नहि छनि...। बस एक बेर हाक देबाक काज...।

मुदा बाजय रसनचौकी...

से आब भोज शुरू भ' गेल अछि...। चूरा-दहीक भोज...। नहि-नहि, दही-चूराक भोज...। काहिये क्रेज रहै पक्की भोजक माने पूड़ी जिलेबीक भोजक । नामे सुनैत मातर बच्चा सभ किलोल करय लगैत छल...। खीगण अनैरे प्रसन्न भ' अपन नेना केँ कोरा मे ल' चुम्मा लैत पति केँ कनेडेरीएँ देखय लगैत छलीह...। पुरुषवर्गक तँ कथे कोन ? परान् दुर्लभ लोकेशरीगण च पुनः पुनः केँ गौरव मे बढेने ओ लोकनि भोगक पुरना पत्नी पीसि देबाक लेल कनिजाक निहोरा करय लगैत छलाह...। मुदा, आब ओकर क्रेज गेलै । आब केँ पुछैए पूड़ी-जिलेबी-तारकारी केँ ? ओ तँ रहहौं होइते रहैत छै । आब तँ माघ नहाय से मर्द कहाय । माने जे दही-चूराक भोज क' पाबय से मर्द । बड़का-बड़काक दोही डोल भ' जाइत छनि...। हेस्सी-उठ्ठा छै की ? पसेरी भरिक' करैज होयबाक चाहौ । आ चाहौ मनीपावरक संग मैन पावर...। से आब लगैए, कनिजा काकीक दुनु बेटा मे एहि दुनु चीजक कमी नहि । दुनु बेटा पौरुष देखौलाथिन अछि...। आ से भरपूर देखौलाथिन अछि...।

पौरुष तँ ओ लोकनि देखबिते रहैत छथि । आब ओही दिनुका बात लिय' ने । अरे, सरझण्णी दिनुका । आस्थिसंचयक बाद श्राद्धक हेतु योजना बनबा' लेल गामक पागधारी लोकनिक बैसार भेल छलनि...। सरबन बाबू दुनु भौड़ ओना तँ एक दोसरा सँ कटल-कटल रहैत छलाह...। एक गोटे ईर घाट तँ दोसर वीर घाट ! परंच एखन दुनु गोटे अपना केँ एक टा विशेष प्रकारक अपराध भाव सँ समाने रूपेँ 'दबल अनुभव क' रहल छलाह । लागि रहल छलनि जेना कि पतिया लागल होनि । पतिया लागब की होइत छै, से ओ लोकनि नेनापने मे देखि चुकल छलाह । जकरा हाथेँ खुट्टा पर बाहल गाय-बड़द मरि जाइत

छलै तकरा गरा मे भरल पशुक-जड़ड़ लटकौने प्रायश्चित्त हेतु घरे-घरे दयनीय मुद्रा मे मौन रहि भीख माँगत देखि चुकल छलाह...। आइ दुनु भौड़ अपना-अपना केँ किछु ओहने सन स्थिति मे पाबि रहल छलाह...। एहरे पागधारी नक्षत्र मंडली विचार क' रहल छल—

“श्राद्ध कोन होअय ?”

“वैदिकी ?”

“संचदान ?”

“के बजलाह संचदानक नाम ? वजबाक गाँत नहि अछि तँ कम-सँ-कम चुप तँ रह । अहाँ केँ ई नजि बूझल अछि जे शास्त्रक अनुसार वैदिकी श्राद्ध भेने मुइनहार केँ पडत होइत छनि ? आ सरबन बाबू दुनु भौड़क कोनो हाइ हिलैत छनि ? कथोक अभाव छनि ?”

“हँ यौ ! अभाव किए रहतिन ? दोसर, प्रतिष्ठो किछु अर्थ रखैत छैक कि नहि ? प्रखंड भरिक कोन गाम मे के नहि चिन्हैत छनि सरबन बाबू केँ ?”

“हँ ! आ राखेजी कोन कम छथि ?”

“हँ ! से तँ ठीके ! कोन गामक नवयुवक नहि चिन्हैत छनि राख केँ ?”

“असल मे चिलमक सम्बन्धे ततेक विस्तृत होइत छैक...।”

“फेर...। की बाजि देलहुँ अहाँ ? जखन मुँह खोलव बुझिले बोकबर । भतुहरि कहने छथि...।”

“आब भतुहरि केँ एखन रहय दियनु । ट्रैक सँ हटै नहि जाइ जाइ ।”

“ठीके कहैत छी । उचित तँ वैह जे वैदिकी होइक ।”

“हँ...हँ...। वैदिकीए होइक...। की सरबन बाबू ?”

जामगाइत नक्षत्र मंडलीक मध्य सकुचायल सकपंज-निष्पन्न बैसार सरबन बाबूक बुझि जेना हेरायल सन भ' गेल छलनि । आब जेना दुकल माघ उठवबाक अवसर आ बात देखाइ पडि रहल छलनि...। कनेक महग अवश्य छलै, मुदा दोसर उपाये कोन छलनि... ?

“ठीक छै । हमरा दिस सँ हजँ नहि । कनेक राखवजी सँ सेहो पूछि लियनु ।”

“कि राखवजी ?”

सबहक नजरि राखव लला पर आवि स्थिर भ' गेल रहनि । धुआँयल मुखाकृति...। झड़कल-झड़कल । कारी झामर ठोर...। तमाकुलक योग सँ गनगनायल गाँजाक लाली प'ल उठबिते आँखिक डिम्हा सँ हुलकी देब' लागल रहनि...।

“ठीके छै । जे सबहक विचार से हमरो...।”

आब भोज । नक्षत्र मंडलीक अनुभवी पाकशास्त्री सभ उन्टि-पुन्टि क' एहि मुद्रा पर

विचार करय लगलाह...। खूब घमर्थन भेल...। अन्ततः निर्णय देल गेल—

“एकदशा दिन यदिय संभव होअय तँ तुलसी फूल वा कनकजीर वा करिया कामोदक पुरना अरवा चाहरा जे से उल्लम्ब नहि भ' सकत तँ बासमती तँ अवसरे होअय । फेर राहड़िक दालि...सात टा तीमन...बड़, बड़ी, पापड़, दही, चीनी, सकड़ीरी आदि-आदि ।”

“आ द्वादशा दिन पूड़ी-जिलेबीक भोज की करवह हो सरबन ! जखन एतेक भेवे केले तँ बिनयोलवा भोज की करवह । ओहुना कनिजा काकीक भोज लेल सबहक मोन टाँगल छै...। से दही-चूराक करह । भगलपुरिया कतरनी चूरा...। कम सँ-कम चारि बेर अहगर क' छलिगर दही...चीनी...डालना...तोलक अँचार...आलुक अँचार...नोन-मिरचाइ आ अंत मे बुनियो...की ?”

“ठीक छै ने सरबन बाबू ?”

“मुदा, इस्टीमेट ?”

“बनाब हो गेपल । तौ तँ हिसाब-किताब मे माहिर छर । बड़का कक्का आ भुटकुन बाबा सँ पूछि लहुन । आ अहाँ लोकनि विचार-सहयोग दियनु मास्टर साहेब आ नेता जी...।”

एस्टीमेट बनल । श्राद्ध आ भोज दुनु मिलाक' प्रायः डेढ़ लाखक । सरबन बाबूक हवा गुप्प आ राखव लला सटकदम्प...।

“की सरबन बाबू, भेल ने ?”

सरबन बाबू दुनु भौड़ केँ चुप देखि ठीकेदार साहेब केँ नहि रहल गेलनि, “एना चुप किए छी ? टकाक दिक्कति अइ ? ई दिक्कति कोनो दिक्कति छै ? असल बात तँ ई जे अहाँ सभ चाहेत की छी ? जे चाहेत छी तँ व्यवस्था भ' जेत । हम कोनो समाज सँ बाहर थोड़े छी ? आ जे अवसर पर काज नजि आवय तँ भन बेकार । कथी ? सधयबाक चिन्ता ? भक्क ! अरे माय-बाप फेर घुरिक' नहि अबैत छथिन । ओ पुत्र केँ जन्म कथी लेल दैत छथिन ? एही लेल ने जे पुत्र समय पर पुरुषार्थ देखावय ? एहन श्राद्ध करय...। एहन ब्रह्मभोज करय जे उद्धार क' देअय...। स्वर्गक फाटक फोलि देअय । आ से अवसर उपस्थित अछि अहाँ सभक समझ । आब आवश्यकता अछि पुरुषार्थ देखयबाक ।”

“ठीके तँ कहैत छथि भाइ । बेसी सोचल नहि जाओ । अरे, समय पर पाइ आपस क' सकबनि तँ बेस, नहि तँ टीसन लग सड़कक कात महक जे दसकठवी गाछी अछि सँह लिखि देबनि भाई केँ । ओहुना आब गाम महक जमीनक प्रति मोह बेकार । गाछिओ तँ उजड़िए गेल अछि...।”

ठीकेदार साहेबक मुंशो भोगी झाक मंतव्य नौक जाकेँ बूझि रहल छलाह सरबन बाबू । नेजड़ी

राघव ब्रह्म या नाहि। जमीनक ओइ दुकड़ी पर बहुत दिन सँ नजर छनि ठीकेदार साहेबक। ओ ओत 'मोअट कॉम्प्लेक्स बाबा' बाहेत छथि। सामान्य स्थिति रहैत तँ सरबन बाबू ठीकेदारक एहि कुटनीतिक 'चालिक जबरदस्त जवाब दित' थनि...। मुदा, एखन तेहन नै उलंग फँसल छथि जे कोनो आन बाटे नै सुझि रहल छनि। के देत डेढ़ लाख रुपैया? जे देत से बदला मे किछु-ने-किछु चाहबे करत। निःस्वार्थ मर्दति आब के ककरा करैत छै? कम-सँ-कम ई समय पर द' तँ रहल अछि। सरबन बाबू चारू दिस तकलनि...। सबहक दुष्टि मे एकटे टा आग्रह। हँ कहि दियौ नै। सपूत बनू...अपन नाम केँ सार्थक करू...।

“हम तँ तैयार छी। मुदा, एक बेर राघव जो केँ सेहो पुछि लियनू।”
“की राघव जी?”

ठीकेदार साहेब आ हुनक मुंशी भोगी झा केँ बेछिल्ले बाँस धौंस देबाक योजना मोनहि मोन बनबैत आ तत्काल स्थिति करैत राघव लला केँ प्रश्न सुनिहल लगलनि जेना केओ हुनक पौरुष केँ ललकारि रहल होनि। क्रोध बाट बदलि क' सरबन बाबू पर केन्द्रित भ' गेलनि—
“देखे जाइ जाइ। हम कोनो मउगीक साया मे चुसिया क' रह'बला मर्द नहि छी। सभ केँ अपन फिकर क' लेल क'हयौ। राघव मर्द अछि आ मर्द बला बात कहल। आ मर्दबला बात वैह अछि जे लागय से देआइ, मुदा बाजय रसनचौकी...।”

पित्त तँ सरबन बाबूक सेहो लहरलनि, मुदा गरा मे उतरी तँ हुनके छलनि। दबा गेलाह...।

अजेय योद्धा सभक पराक्रम...

से आइ द्वादशका जबरदस्त भोज भ' रहल अछि...। लगीए पूरा गाम उन्टि आयल अछि...। हाथ जोड़ि क' सबहक स्वागत करैत दुनू भाईक आग्रह, “मोन भरि खाइ जाइ। जे वस्तु जतेक चाही से लिय'। कोनो वस्तुक कमी नहि।” कमी किए रहत? ठीकेदार साहेबक सहयोग देखि भरि गामक युवक लोकनिक उत्साह फरक उठल छलनि...। संगहि सहयोग छलनि भ्रमरपुराक सोगारथ यादवक।

सोगारथ यादव। सरबन बाबूक परम मित्र। प्रखंड राजनीतिक संगी। दहिवा, भिल्लकी, खजुबारा, भ्रमरपुरा, खेरिया टोल, राड़ी माने ई परपोस्टाक सभ गाम छनि मारल गेल...। महिसबा

सभ केँ सोझे बथाने पर जा पकड़लनि सोगारथ बाबू, “हो भाइ सभ, साल भरि तँ देहातक दूध एकत्र क'...पानि मिला...झाम मे भरि...विदाउट टिकट जनता ट्रेन सँ जाक' दड़िभंगा मे बेचि छह...चानी कटिटे छह...। कहियो क' किछु पुण्यो कमाबह। बस चारि दिनुका दूध दएह। बुझ' जे हमरे दैत छह। चारिम दिन एक-एक टा पाइ गनबा लएह...।” सोगारथ यादवक निशाना कतहु खाली जानि। ततेक नै दूध भेलै जे सय तौला...नहि-नहि, तौला नहि खोर मे पौरल गेल दही...।

“अहाइ सय खोर...।”
“तँ तोरा माने की? अट्टारह मन अरवा चाउर आ बीस मन चूड़ा खयनिहार गाम मे एहि सँ कम मे की होइत?”

से दुनू भाईक आग्रह जे मोन भरि खाइ जाइ आ कामना करै जाइ जे कनिजा काकी केँ पड़ैत होइह...। पंक्तिबद्ध आसन जमीने भोज खयनिहार सभ...। एक टा पाँति पच्छिम मुँह तँ दोसर पाँति पूब मुँह...। एहिना तेसर पाँति पश्चिम मुँह तँ चारिम पाँति पूब मुँह...। समुखक दू पाँतिक बीच मे बारिक लोकनि केँ अयबा-जयबा लेल रस्ता। एत' सँ अंत' धरि पाँति-पाँति मे कुम्भकोपरिदधिचिपटानशर्करालवणव्यञ्जनाभि-धुराणि च सँ जुड़ैत लोक सभ...। चलैत मुँहक चपर-चपर...। बारिक लोकनिक 'ई लाबह हो', 'ओ लाबह हो' कर गुंजित स्वर...। सघन भ' गेल अन्हार सँ लड़ैत जेनेटिक पचासो ट्यूब-लाइट...जगमग...जगमग...सभ किछु जगमग...।

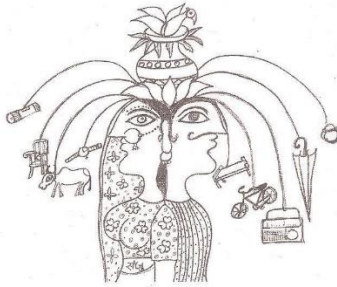
समाजक पैघ-पैघ नाकबला लोकसभ मे अपना केँ अग्रगण्य बुझनिहार अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबू लोकनि पहिल खेप मे नहि बैसलाह अछि। ओ लोकनि दोसर वा तेसर खेप मे टहलैत कखनहुँ भोज खयनिहार सभ सँ दहीक

स्वाद वा डालाना मे नोनक मात्राक मादे पुछि रहल छथि, तँ कखनहुँ बारिक लोकनि केँ कोनो खास जाह पर खास वस्तु ल' क' पहुँचबाक निर्देश उछालि रहल छथि...।

मुड़ी गाड़ि तनय भ' भोजनलोन लोक सबहक लगान देखि जेना...जेना किछु मोन पड़ि रहल अछि...। हँ...कनिजे काकी कहैत छलीह खिस्सा...। मैथिल सभक भोजनपट्टाक मादे सुनि हम नोत दैत छियनि। हमार व्यवस्थानुरूप भोजन क' कय देखावथु तँ हम इन्द्रासन हारि जायब। स्वीकार करातह? अपन पसिन्नक क्षेत्र मे आबि फँसल शत्रु केँ देखि जेना योद्धा केँ हँसी लागि जाइत छै तहिना उच्च अहंकारी देवराजक एहि मुखतापूर्ण चुनौती पर मुसकिया देलनि मैथिल लोकनि। स्वीकार क' लेल गेल चुनौती...।

परंच इन्द्रो तँ पक्का खिलाड़ी छलाह। भोजक जबरदस्त आयोजन कयलनि। अपन खाद्य-सामग्री, मुदा, आहि री बा! ई की? परम्परानुसार समुख पाँति बनाक' बैसल मैथिल लोकनिक दहिन हाथ पर काँख सँ ल' क' पहुँचाधरि बाँसक फराठी राखि जइइ सँ लपटि क' बान्हि देल गेलनि। आब भोजन क' देखावथु...। मुदा बाह रे मैथिल! ओ मैथिल केहन जे कोनहुँ परिस्थिति मे भोजन क' कय नहि देखावथु? समुखक पाँति सभ कनेक लगाक घुसुकि आबल आ आगने-सामने बैसल मैथिल लोकनि एक दोसरा केँ एक-दोसराक पात पर सँ खाद्य-सामग्री ल' बिनु दहिन हाथ मोड़ने खोआबे लगलाह...। जल पीबाक लेल वाम हाथ तँ मुक्त छलनिहँ। इन्द्र चारू नाल चित। भोजनोपरांत गर्वित मैथिल लोकनिक समक्ष ठाढ़ नतशीश इन्द्र अपन इन्द्रासन ग्रहण कराबाक निवेदन कयलथिन...। मैथिलक उदार गवोक्ति भेलनि, “इन्द्रासन अनहनि राखल जाओ। हम सभ ल' क' की करब? मुदा, स्मरण रहय जे पुनः हमरा लोकनिक भक्षण-सामर्थ्य केँ चुनौती देबाक भूल नहि होअय। ई हमर सबहक क्षेत्र थिक। एहि क्षेत्र मे हम सभ अजेय छी।”

से आइ एक कात मे ठाढ़ हम एहन अजेय योद्धा सभक पराक्रम देखि रहल छी...। नजरि भोजस्थलक कात मे पाँति सभक छोर पर स्थित सड़क दिस जाइत अछि...। ओत' समाजक दीन-हीन वर्गक महिला, पुरुष, छौड़ा, छौड़ी



सभ अलम्बनमयक थारी आ बट्टा नेने प्रतीक्षा मे ठाढ़ अछि...जे कखन लोक सभ भोजन समाप्त क' कय उठत आ ओकरा सभ केँ अचानक लोकक अँइठ उठयबाक अवसर भेटैत...। भूखक मारल लोकक एहि भीड़ मे सेहो कैक टा छोट-छोट वर्ग छै...। अपना सँ तथकथित निम्न वर्गक लोक केँ केनेक फरक रहबाक निर्देश देबाक प्रकृति एह वर्गक लोक सभ मे छै—से स्पष्ट देखाइ पड़ि रहल अछि...।

पच्छिम भर अकास मे लौका लोकब शुरु भ' गेलैए। नहू-नहू मे ऊपर उठि रहल अछि...। रहि-रहि क' लोकति लौका भोज खरनिहार आ खुबियाहार दुनु पक्ष केँ केनेक हड़बड़ा देलक अछि। किछु गोटे लोक सभ केँ शांतिपूर्वक भोजन करबाक आग्रह क' रहल छथि। लगेए इन्द्र फेर आइ गड़बड़ प' उताउल छथि...।

ओम्हर गाम भरिक एकत्रित कुकुर सभ आपस मे कटाउछ क' रहल अछि। कटाउछ मे जे कुकुर हारि जाइत अछि से केनेक हटि क' विचित्र विलापित स्वर मे भूक' लागैत अछि... जेना कानि रहल हो...। ओह! ओहने सन...। जेना ओहि राति कानि रहल छल...। ओहि रातुक सभन निरासम्बता केँ चौरत कुकुर सभक रुदनक ओ धरधाड़ा विज्ञापन छुरी...।

आगि-पानि-लोह-पाथर...

ओही रातुक बाद आयल छल ओ जेटक एक टा पंचपचायल भोर...। उसीन क' राखि देब' केला तौसायल कारी रातुक बादक ओ भोर...।

साँझि सँ सड़ल गुमकी छलै...। पसेना-पसेना देह...कखनो मुखयबाक नाम रहि...। ऊपर सँ लाखनि सँ भरल डगराक मच्छरक प्रकोप...। एहर-सँ ओम्हर दौगीत...गुहरीत...भूकैत कुकुर सभ...। एक्को रती चैन रहि...। छटपट-छटपट करैत राति बहुत नहू-नहू बीति रहल छल...। कखनो-कखनो डबरा महक जलमुगौ सभ चियो-चियो क' उठैत छल। ककरो चैन रहि...। कोना होइत? जेट खतम होब' मे प्रायः छओ दिन रहि गेल रहि परंच बुन पड़बाक नाम रहि...। भरि दिन अकास सँ आगि बरिसेत छलै आ साँझि सँ जे बोकरा लागैत छल पुख्खी छेहा तौस से राति भरि उसिनाइत रहैत छल प्राणिमात्र...। पता नहि कहिया युन पड़ैत...?

हम ठेकानि नहि सकलियै जे कतेक राति भेल हैतै...। प्रायः डेढ़...नहि दू...। केनेक पुरवा सिंहकलै...। पसेना सँ भीजल देह ठंडायल आ प'ल भरिआय लागल...। कुकुर सभक तेज झौहटि सँ निन टूटल...। एतेक किये लागि रहल छै...? भक्क! कुकुरो के कोनो ठेकान छै?

जहुरी छै जे कोनो चोर केँ देखि क' भूकल होअय? भ' सकैए दोसर टोलक कुकुर पर नजरि पड़ल हैतै कि शुरु भ' गेल हैत...। सोचैत-सोचैत फेर प'ल भरिआय लागल...। कखन बरखा अयलै...हम किछु नहि बूझ सकलियै...।

जेना एक टा झटका खाक' निन टूटल होअय...। बाहर सड़क दिस गुलगाल भ' रहल छलै...। क्रमशः तेज होइत...। कोठली सँ बाहर दलान पर अयलहुँ। भोर भ' चुकल रहै मुदा एखन सूर्योदय हेबा मे किछु विलम्ब रहै। हमर घरक पूब द'क' जे रेल लाइन गेल अछि—दखिन-पूर सँ उत्तर-पच्छिम दिस—तेमरे लोक सभ जा रहल छल...। की बात छै? हम किछु आगाँ बढ़लहुँ...। ओकील ककाक दलान पर किछु लोक ठाढ़ भेल रेल लाइन दिस इशारा करैत बतिया रहल छलाह...। हुनकर सभक तर्जनी केँ पाछाँ करैत हमर नजरि देखलक जे रेल लाइनक आस-पास किछु महिसवार, हाथ मे लोटा नेने 'पोखरि दिस' जयबा लेल बहरायल, किछु भलेमानुस आ ज'न-बोनिहार केँ अदृयबाक लेल विदा भेल, किछु कुषक लोकनि विस्मय आ दुःखक मुद्रा मे बहस क' रहल छथि...। एतेक फरकी सँ बात बूझब कठिन छलै...।

“की भेलैए?” हम पुछलियै।

“लागै क्यो कटि गेलैए।”

“के?”

“हो, हमरा तँ लागैए जे काल्हि मैट्रिकक रिजल्ट बहार भेलै। कहाँदेन बड़ खराब रिजल्ट भेलैए। अबस्स कोनो फेल केलहा छौंछा कटि गेल हैतै।”

“नहि हो, कोनो विद्यार्थी नहि रहल हैत ओ। आइ-काल्हि टेनक छत पर चढ़बाक बड़द जलन भ' गेलैए। ओही मे सँ कोनो अगती टपकि पड़ल हैतै।”

“ई अहाँ कोना कहैत छियै भाइ? इहो तँ भ' सकैए जे कोनो तद्विषय वा गँजपिषय औघरा गेल हैत रेल लाइन पर...आ...।”

जतेक मुँह तरेक बात। ओम्हर ओकील कका एहि सभ सँ निरपेक्ष मनोयोगपूर्वक अपन बड़द केँ सानी खुआ रहल छलाह।

“को कका, के कटि गेलैए?”

“पता नहि!” ओ हमरा दिस तकबो नहि कयलनि। नादि पर नजरि गाड़ने रहलाह। हुनक ई निरपेक्षता हमरा केनेक विचित्र जकाँ लागल। लागल जे हिनका जरूर बूझल छनि। कदाच जानि-बूझि क' अपना केँ कोनो काज मे ओझरा क' रखने छथि। हम रेल लाइन दिस बढ़लहुँ।

“हो बीआ, तँ ओम्हर नहि जाइ। तोहर करेज एतेक मजमूत नहि छह...बदरिष नहि हैतह...।” ई हमर माय छलि जे पता नहि कखन

सहटि क' पाछाँ-पाछाँ एत' धरि आबि गेल छलि।

“तौ” चिन्ता नहि क'। हम तुलत आबि जायब। आ हमरा किछु नहि हैत। आब हम दस बखक ओ सभोर नहि छी जे सोचाव देखिक' रह भ' जायत।”, हम आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ।

हमर पाछाँ-पाछाँ लखनी सेहो ओही दिस जा रहल छलि। ओकराँ वैह रस्ते छलै। एही द' क' ओ निन हीरा बाबुक ओत' बर्तन-बासन कर' जाइत छलि। सामने सँ पप्पू आबि रहल छल। पुछलियै तँ ओ कहलक, “एतेक तँ निश्चित अछि जे कोनो स्त्री कटल अछि। पैच-पैच केस छै।” हमर हिम्मत नहि एलाउ कयलक जे लग जाक' देखियै। देखि नजि छलै जे ककरो लग जयबाक साहस भ' रहल छै? सभ दस हाथ फटकैए सँ देखि रहल अछि...आ देखिक' अपन-अपन बाद भ' रहल अछि...। एहन भयानक दृश्य नहि देखल भाइ...। हमर तँ मोन कोनादन क' रहल अछि...। हमरा जाय दिय...।” पप्पू घर दिस बढ़ि गेल।

तावत लखनी हमरा सँ आगाँ निकलि रेल लाइन पर घटनास्थल लग पहुँचि चुकल छलि...। आगाँ बढ़ैत हम देखलहुँ जे ओ पुरुष सभक गोले केँ चौरत भीतर गेलि...। “अरे बाप रे बाप! देब रे देब! ई की भेलै रे देब। कनिजा काकी आ कनिजा काकी! ई की कयली अथ कनिजा काकी?” लोकसभक गोले मे घेरायल लखनी भोकरि रहलि छलि...। ओ देखाइ नहि पड़ि रहलि छलि, मुदा ओकर करुण-तीक्ष्ण स्वर गूँज रहल छलै...। आबो कोनो संदेह नहि रहि गेल छलै...। हम लपकलहुँ...। गोले मे पैसलहुँ...। हे भगवान! हिला क' राखि देब वला भीषण वीभत्स दृश्य छल...।

कनिजा काकी, ओ कनिजा काकी, जे वृद्धावस्था दिस डेग बढ़ा चुकलाक बादो सबहक लेल कनिये काकी छलीह...जे बाट पर चलैत काल पाना लागैत छलीह जेना धरती सँ पुछि-पुछि क' डेग बढ़ा रहलि होथि...। जे धरतीए जकाँ सर्वसहा आ अनामुखी छलीह...जे प्रत्येक जूझुशीतलक भोरे टेल भरिक नवयुवक लोकनिन चानि ठंडा देब' लेल बासि जलक लोटा नेने आबि जुमैत छलीह...। जे तिला सँकरीत दिन सभ केँ ताकि-ताकि क' तिल-चाउर हाथ मे थप्पा दैत पृष्ठैत छलथिन, “बीआ तिल बहब ने?” से कनिजा काकी आइ रेलक पटरीक आस-पास रोड़ा सभक ऊपर पर खंड-खंड भेलि छिड़िआयल पड़लि छलीह...। ओह! हे भगवान!

रेलक पुबरिया पटरीक ओइ पार दुनू टोंग...दुनू पटरीक बीच मे धइ आ पछरिया पटरीक एहि पार मुड़...। आन-आन अंग जत' छिड़िआयल छलै ओतहि मुंडक स्थिति केनेक

विस्मयजनक। लगैत छलै जेना केओ ठोड़ीक नीचाँ सँ सटाक' घेंट कटने होइक आ ओरिया क' रोड़क डेर पर राखि देने होइक—उधर्ममुख। मुंडक केस माथ सँ एकदम सटल छलै...। चँछाल पौर चहरा पर सामने देखैत चथायल निजीब निवाँक ओखि मे उदासी जना जमि गेल हो...। केम्हरो सँ कोनो कोण सँ देखितयै तँ हरायल ओखि जेना सोझे अहाँ के देखैत अनुभव होइत...। उपरका चारि टा दाँत निचला टोर मे धँसल...। आश्चर्य! शोणितक दर्श नहि...। लगैए बरखा बाद मे आयल रहल हेतै...। धोपे-पखारल लहास आर भयावह लागि रहल छलै...।

आनन-फानन मे खबरि पसरि गेलै। कनिजा काकीक दुनु पुत्र आ पुतोहू माय-छाती पीटैत आबि चुकल छलथिन। दुनू भाँई रेलवे पर ओषर-ओषर क' कानि रहल छलाह। ओम्हर दुनु देवादिनी सेहो छाती पर दुइथुड मारैत 'ना क' रहल छलीह...। लछमी आब दुनू केँ सम्हार' पर लागल छलिन...। बहुत कालगिक दूध खलै...।

आब जखनकि स्थिति प्रायः स्पष्ट भ' चुकल छलै तँ त्वरित निर्णय लेब' मे माहिर लोक सभक विचार भेलनि जे एहि सँ पहिने कि थाना मे खबरि होइक आ मुँडा बैकक मैसन्जर जहाँ लागेगा सदल-बल आबि जुमय, दाह संस्कारक काज सम्पन्न क' लेल जाय...। एक बेर जँ लहास छाडर भ' गेल तँ फिर दारोगा की क' लेत? चल् आब जे भेलै से भेलै। शीघ्रता करै जाऊ...।

फेर जल्लौ-जल्लौ मे लोक सभ लहासक टुकड़ी सभ केँ बोझि-बोझि क' बोरा मे ठुसलक...। खाट पर लादि उठौलक...। मटिया रेलक कटर लेल गेल...। बाड़ी-झाड़ी मे जे बाँस-राहट भेटलै से उठबैत गेल...। आ भागल रमशान। आनन-फानन मे डेढ़-दू घंटा मे कनिजा काकी केँ फूकि-फाकि क' सुड़ाह क' देल गेलनि...। पैचकटिया फेंकलाक बाद कटियारी सभ बाधे-बाधे बदल...। खिरोइ दिस...। धूर पकड़ने...। आगाँ-पाछाँ...। पंक्तिबद्ध...। 'देखि जाइ जइह'। सम्हरिक'। दोसरक पयर पर पयर नहि लाग'। आ केओ गोटै घुरिक' तकिह' नहि। अकाल मृत्युक मामिला छै...। नहि तँ अपनहि बड़िह'...। 'बड़का कक्काक निर्देश केँ सभ चुपचाप सुनि लेलक...। कुरलम पन्द्रह गोटै तँ रहबे करी। दुनु भाँई सरबन बाबू आ बाकी हम सभ तेरह गोटै। ककरो मुँह फोलबाक साहस नहि भ' रहल छलै...। जेथ मे, संस्कार मे सम्मिलित होयबाक लेल, आबि तँ गेल छल लोक मुदा आब एक टा विशेष प्रकारक अदक करेज केँ दलकीन छलै...। सभ खेते-खेते धूर पकड़ने जा रहल छल...। सड़क पकड़बाक साहस नहि भ' रहल छलै। यदि पुलिस आबि गेल होइक तखन...? ओना नेता



जी सोझे मोटरसाइकिल सँ थाना भागल हेताह। सरबन बाबूक आग्रह पर भमरपुरा सँ सोगारथ यादव केँ सेहो संग क' नेने हेथिन। एक नम्बरक खच्चड़ अछि चौकीदार। तुरंत साइकिल सँ थाना लेल विदा भ' गेल हैत। मुदा नेता जी तँ मोटर साइकिल सँ गेलाह अछि। ओ अवस्स पहिनिह पहुँचि गेल हेताह...। तथापि यावत् ओ घुरिक' नहि अओताह तावत् को कहल जाय...।

कतेक समय भेल रहल हेतै? बेसी-सँ-बेसी दस...। मुदा बरखाक बाद स्वच्छ भ' गेल अकास सँ एखनिह तिमख रौद बरस' लागल छलै। लागि रहल छलै जेना चानि चनकि जेतै...। सभ गोटै एक टा गाछी मे विलिनि गेल। केओ ककरो सँ नजरि नहि मिला रहल छल...। वर्तमान प्रसंग पर केओ चर्च नहि करय चाहैत छल। अनर्थक भीषण विशिष्टता आ मात्रा केँ सँ परिहार रहल छल। दाह-संस्कारक गैर-कानूनी पक्षो केँ सभ जानि रहल छल...। 'चलै जाह हो। शीघ्रता करै जाह। आब सोझे खिरोइ पर!'

जेठक कड़ुकड़ायल रौद मे लहालोट भेलि खिरोइ पस्त पड़लि छलिन...। धार कहाँ छलै...। एक तँ ओहिना प्रतिवर्ष बाढ़िक संग आयल बालू सँ भथैत-भथैत ओ उत्थर भ' गेल छलै। दोसर एहि साल एखन धरि ठीक सँ बरखा कहाँ भेल छलै...। पुलक दक्खिन एक टा पैच सनक खाधि मे जे जल छलै सैह...। बाकी कतहु जलक निशान नहि। खाली नामे टा धार...। रातुक बरखा सँ पेटी महक बालुका-राशि जँ भिजली रहल हेतै तँ से आब एखन हालत नाम नहि। एखनिह बालू उड़ि रहल छलै...। भोरै जे महिसबार सभ महिस केँ धोबाक क्रम मे खाधि महक जल केँ थोकेने छल से एखनो साफ नहि भेल छलै...। ओहिना घोर मटटा। ओही जल मे सभ गोटै नहाइत गेल...। कनिजा काकी केँ तिलांजलि देलक...। पन्द्रह टा लोक तिल बहि देलक कनिजा काकीको...।

धुरैत काल हम बाट मे सोचैत रही...। की तिल बहावक यहै अर्थ होइत छै? नजरिक समझ लोक तरसैत रहओ...। तड़पैत रहओ...। बेसी तरक

मारल बबुर तर जाइत रहओ...। अनुचित अवॉछित कलंक आ देश सहैत रहओ...। मुदा समय पर केओ कल्ला अलगाव चला नहि...। सभ अपना-अपना मे लिप्त आ जखन ओ टूटि जाय...। टूटिक' छिड़िया जाय तँ ओकरा फूकि-फाकि क' सुझाह क' दिथी आ एक चुटकी तिल माथ पर ल' डुबकी द' दिथी...। बस भ' गेलै तिल बहाव...। तिल बहावक अर्थ आर की होइत छैक?

कारी मड़र सूचना ल' क' आयल छल जे नेता जी आपस आबि गेलाह अछि। सभ टा मैनेज भ' गेलै...। चिन्ताक कोनो बात नहि...। सूचना क' ओ नरोछ लेल विदा भ' गेल...। महापात्र केँ सेहो खबरि करबाक छलै नै! मैनेज भ' गेलै। माने ई जे आब कोनो डर नहि। निर्भोख गाम जायल जा सकैत छल। तथापि पता नहि किएक कटियारी लोकनिक समूह मुड़ी गीतेन सड़क धयने गाम दिस जा रहल छल। खेत मे काज करैत ज-न-बोनिहार सभ ठमकि क' पन्द्रहो पराक्रमी व्यक्तिक समूह केँ देखि रहल छल...। मुदा हमरा सभ मे सँ केओ एम्हर-ओम्हर देखय नहि चाहैत छल...। पता नहि के किछु पूछि देजय! रौद बज तिमख भेल जा रहल छलै...। सबक भेर चानि चनकय लागल छलै...। ओम्हर पता नहि किएक एक टा टिटही बड़ु बालुकल स्वर मे टिटिया रहल छल...।

सरबन बाबूक आँगन मे राखल आगि-पाणि-लोह-पाथर केँ छुबैत काल देखल जे टोत भरिक आँगन सभ जमा छलीह आ दुनु देवादिनी ओपरिया दैत चिकरि-चिकरि क' लयात्मक ढेंगे कानि रहलि छलीह...। जेना कोनो हृदयविदारक करुण गीत गाबि रहलि होथि...। गीतक प्रत्येक पॉति मे श्रद्धेया सासु माक विशिष्ट दुर्लभ गुण आ ताहि सँ आब सदाक लेल वंचित भ' जयबाक अफसोसक मर्मस्पर्शी वर्णन आरोह-अवरोहक संग भ' रहल छल...। कोनहु सहृदय केँ द्रवित क' देवा मे समर्थ एहि रोदनक यथेष्ट प्रभाव त्वरित-रुन मे प्रवीण जनी-जाति सभ पर स्पष्ट गोचर भ' रहल छल...। ओ सभ कनिनो छलीह आ दुनु देवादिनी केँ भरोस तथा साहस रखबाक परामर्शो द' रहल छलीह...। सघन उदासी आ करुण स्वर केँ अनुभव करैत कटियारी सभ आगि-पाणि-लोह-पाथर छूलक...। कता दुनु भाँई केँ छोड़ि सभ अपन-अपन आँगनक लेल विदा होइत गेल...।

नवारी दुःख कि बुढ़ारी दुःख...?

"जय हो...। जय हो...। मही-मही भ' गेलै...।" दही तेबारा परसल जा रहल अछि। जे चुक्की मारने छलाह से पलथी मारि लेलनि अछि आ जे पलथी



मारने छलाह से चुककी मारि लेलनि अछि। आसन बदलि क' सभ दही सुइकि रहल छथि...।

“अरे के खुअबैत अछि आइ-कालिह, एतेक हृदय खोलिक?”

“कनिजा काकी छलीह मुदा भागमंत!”

“आह! तहू मे कोनो संदेह? एहन सपुत सभ केँ जन्म देनिहार भागमंत नहि तँ आर की कहल जयतीह?”

“देखियनु पुण्यक प्रताप जे मर' सँ पहिने ककरो सेवा करबाक कष्टो देलथिन?”

“हँ यो टीके कहैत छी। एक तँ उत्तरायणक समय, दोसर मुत्यो कोना क्षण मे क्षणाक भेलनि। कोनो कष्टो तँ नहि भेलनि...।”

एक कात मे टाढ़ हम चौंकि पड़ैत छी...। मोन होइत अछि जे किछु बाजी। मुदा, एखन बाजिक' लाभे को? आ ई टिप्पणी तँ मगन मोनक असहज टिप्पणी अछि। एहि पर प्रतिक्रिया की करब? आ कोन फूसि कहलकै? ठीके ने कहलकै...। की कष्ट भेल हेतनि...? दू सँ चारि मिनट मे सभ समाप्त...। नहि! हुनका कष्टे कहिया भेलनि? यदि भेलो होनि तँ ककरो कहलथिन नहि...। कहयो कयलथिन तँ कष्टक मादे नहि—निसाफ करय लेल...आ से...।

ओहि दिन अंत्येष्टि-संस्कार सँ चुरल रही। आँगनक मुँह पर माय भरि लोटा जल, नीमक पात आ ललका सुखायल मिरचाइ राखि देने रह्य। मिरचाइ केँ दौस सँ काटि...थुकाड़ि...नीमक पात चिन्ना जल सँ कुरुड़ कयलहुँ आ पपर धोलाई। चापाफल पर जाय फेर सँ स्नान कयलहुँ...। जाह! दतमनि तँ आइ करबे नहि कयलहुँ...। कखन करितहुँ? छोड़! कोन भोजन

करबाक अछि? ककरा घँसतै? मायक करेज! ओ किछु खा लेबाक हट करय लागलि रहय। ओकरा टारय लेल अनैरे कनेक कठोर होइत हमर कंठ अवरुद्ध भ' गेल रहय आ ओखि मे नोर सेहो हबदबा गेल रहय...। कहुना ओ अपन हट छोड़ि देलक। हमरा ककरो सँ गप्प करबाक मोन नहि होइत रहय।...एहि मन:स्थिति मे जखन हम अपन कोठली मे आबि पड़ल रही तखन कनिजा काकीक एहि अनपेक्षित आ भीषण परिणति पर सोचैत-सोचैत लागि रहल छल जे माय फाटि जायत...। ई होयबाक नहि चाहैत छल...। काकी एतेक दुबल तँ नहि रहलीह कहियो...। किछु सुनल आ किछु देखल छल जे जिनगीक हिंसक ओखि मे ओखि गड़बैत कनिजा काकीक मुखाकृति पर कहियो संभावित पराजयक आशंकाक लेशो भरि नहि झलकल छलनि...। तखन ई काज? कहाँ एहन तँ नहि...?

एतनी टा रहथिन कहाँदिन जहिया व्यास कका बिआहि क' अनने रहथिन हुनका। हुनका सँ पैस तँ जाउत-जड़थी सभ छलथिन। साड़ी धरि नहि समहारि पबैत छलीह। बैर-बैर लटपटक' खसि पड़थि। जाउते-जड़थी सभ नाम देलकनि—कनिजा काकी। फेर तँ सभक ओ कनिजे काकी बनि गेलीह। नेनपन मे हमरा आश्चर्य लागय जे हम तँ हुनका कनिजा काकी कहिते छियनि हमर बाबूजी सेहो सैह कहैत छथिन। ई कोना भ' सकैत छै? ई तँ पछाति जा क' स्पष्ट भेल रहय जे वस्तुत: टोलक संबंधे ओ हमर बाबुए जीक काकी लगथिन। जे कि हमर घरक बगलवला आँगन मे ओ रहैत छलीह तँ सभ केँ कनिजा काकी कहैत देखि हमरो वैह कहबाक अभ्यास भ' गेल रहय। हमरे किये?

देओर-भँसुर केँ छोड़िक' प्राय: सभ केँ सैह अभ्यास भ' गेल छलनि...।

दाह (दादी) कहैत छलीह जे कनिजा काकी पाँच बहीन छलीह। भाइ एक्को जे नाहि। दरिद्र पिता बड़ु स' ख सँ नाम रखने रहथिन, जानकी। ओ पाँचो बहिन मे सभ सँ पैस छलीह। अपना पाछो चारि गोट बहिन केँ ल' अनबाक दोखी छलीह। खिसिआयलि माय सदिवन दुरजर कयने रहैत छलथिन, “अलच्छी! केहन जरल भाग ल' के' आयल जे...।”

जानकीक जीवन-संघर्ष छठमे वर्ष मे प्रारंभ भ' गेल रहनि। पिता भरे स्नानक बाद शालिग्राम पूजन क' निकलि जाइत छलथिन जजमानक गाम। वंशी चीक लग भीष्मक टोलक वासी श्यामानंद पुरोहित केँ जनुआर गाम धरि नित्य पयरे जाय पड़ैत छलनि। हुनक दितचर्या चारि बजे भोर सँ शुरू भ' जाइ छलनि...आ संगहि दिनचर्या शुरू भ' जाइ छलनि जानकीक...। भोर उठिक' फूल लोड़ब...पूजाक बासन मोजब...ठौब करब...। आ उपर बाद मायक काज। तबुका अपैत-अँइठ बासन सभ मोजब...। घर-आँगन बहारब...चुल्लि नोपब...तरकारी काटब...चाउर बौछब...। एतेक भेलाक बाद माय तँ लागि जाइत छलथिन भानस-भात मे...एम्बर छोट-पैस काज सभ जानकीए केँ कर' पड़ैत छलनि—जैना इमार पर सँ जल भरि क' आनब...छोट-छोट बहिन सभ केँ समहारब...। घरक लगे मे प्राइमरी स्कूल रहनि तथापि ओ कहियो स्कूलक मुँह नहि देखि पोलीह...।

जानकी केँ दू गोटे सँ भरपूर सिनेह आ वात्सल्य भेटलनि...। एक तँ पिता बड़ु मानैत रहथिन। नाम रखने रहथिन जानकी, मुदा आवेशे कखनो वेदेही तँ कखनो मैथिली कहि सेहो सोर करथिन। दोसर गोटे छलथिन बड़की पितिआइन। गाम भरि मे कथकहानी आ गितगाइनक रूप मे प्रसिद्ध। कनेक कड़गुड़ सुभावक। मायो अपन एहि बड़की देयादिनी सँ कनेक डेराइत छलथिन। तेँ जानकी पर तनल बड़की काकीक स्नेह-सुरक्षा-क्षत्र केँ देखि मोनहि मोन सुनगैत तँ बड़ु छलीह, मुदा प्रकटत: लहकि नहि पबैत छलीह। कनिजे काकीक मुँह हम सुनने रही जे गीत गयबाक तुरि आ जितिया, सप्ता-विपता, बड़साइत, मधुश्रावणी आदिक कथा कहबाक आकर्षक-मोहक ढंग ओ अपन ओही बड़की काकी सँ सिखने रहथि...।

हुनका स्मरण नहि रहनि जे नेनपन मे कहियो कनिजा पुतरा, सतधरा वा किर्वात खेलबाक अवसर भेटल होनि। जनमिसे परिस्थितिक हाथे वयस्क बना देल गेल छलीह। पृथा बाबिसकाक आ मोन वयस्कक। प्राय: एगारह वर्षक रहल

हेतीह तँ पंचपुत्रीक पिता केँ हुनक बिआहक चिन्ता सवार भेलनि...। जमाने परमेश्वर ठाकुर लाग चर्च कयलथिन तँ किछु दिनुका बाद ओ कहलथिन, “सूरु मे हमर पिसस्यौतक टोल मे एक टा लड़का छै। दू भाइक भइयारी। पैघ भाइ विवाहित। छोट कुमर छै। कनेक दुधित प्रकृतिक अछि। सत्यनारायण पूजन, मूडन, उपनयन, बिआह करा लैत अछि। देख-सुन’ मे बडू बेस। थोड़ेक जमीनो छै। यदि पसिना होअय तँ हम प्रयास करी। हम जनैत छी जे अहाँ केँ कैंचाक दिक्कति अछि। तँ चिन्ता नहि कयल जाओ। बिआह गतुक खचो देया देब...। श्रीविहीन संस्तर श्यामानंद पुरोहित केँ लागल रहनि जेना केओ थापड़ मारने होनि। मुदा निरप्राय ओ ‘बेटी बेचना’ कहयबाक संभावित कलंक केँ अवधारित जानकीक बिआह क’ देलथिन। आ एहि तरहँ बालवधू बनि जानकी उर्फ कनिजा काकी एहि गाम मे अयलह...।

मायक उमिरक जेट देयादिनी आ सिनेही पतिक कइछाया मे कनिजा काकीक जीवनक ई नव अध्याय पहिनुके अध्याय जकाँ छलनि। फेर वैह कड़ाकुर मेहनतिक दिनचर्या...निरन्तर...। प्रायः बारह वर्षक बाद देयादिनी केँ ‘लाग’ लगलनि जे भीन होयब जरूरी छनि। हुनको सँ बेसी हुनक पुतोहु सभ केँ। निरन्तर कलहक परिणति अन्ततः भीन-भिनासज मे भेल। जेट जन जेठांसक नाम पर नीक-नीक खेत-पथार सभ चुनि लेलथिन। कनिजा काकी छटपटा क’ रहि गेली...। मुदा, पैघ भाय केँ पिताक आदर देनिहार धैर्यक धनी व्यास कका हुनका एतबै कहथि, “अहाँ किछु नहि बाजू। भगवान पर भरोस राखू। सभ ठीक भ’ जेतै।”

आर की कयलनि कनिजा काकी? अप्पन मेहनतिक अतिरिक्त भगवाने पर तँ भरोस कयलनि। कड़ाचुड़ मेहनति क’ अपन गृहस्थी केँ सम्हारलनि। तीन साढ़े तीन बीघा जमीन... बाढ़िक मारल। उपजाक नाम पर नाम लेल अन्...। कने-मने पड़िताइ सँ होइत पतिक आमदनी...। एहन स्थिति मे गृहस्थीक गाड़ी ससब मोक्षिकल रहनि। किछु करब जरूरी छलनि। हारिक’ लाज-धाक केँ ताख पर रखलनि ओ। बड़की काकी सँ सोखल विद्या काज देलकनि। अँगने-अँगने जाक’ पिता-पिहानी कहब...गीत गायब...दुनैरी, तिलारी, चरौड़ी पाड़ि देब...अहिपन-पुरह-कोबर लिखि देब...धान-गहूम फटक-बना देब आदि-आदि काज सँ किछु आमदनी भ’ जाइत छलनि...। गाड़ी कहुना क’ ससर’ लालल रहनि।

ओहि दिन कोठली मे पड़ल-पड़ल हमरा ओखिक आनी कथा कहैत कनिजा काकीक छवि

नचैत रहल...। गोर दपदप छीको सन छरहर भूआ...छुरी सन पातर टोर...कनेक भरल-भरल गाल...पैघ-पैघ किछु बजैत जीवन-रस सँ भरल ओख...अँठिया केस...कुल मिलाक’ सोहनगर चेहरा...। हुनका कहियो हम लहक-चहक वला कपड़ा पहिरने नहि देखलियनि...। भ’ सकैए कम उमिर मे पहिरने होथि। मुदा, हुनक जे पुरान-सँ-पुरान छवि हमर मानस मे अंकित अछि ओहि मे एक्को टा एहन नहि अछि जे ओ एकपड़िया छोटिक’ कोनो दोसर साड़ी मे होथि...। जजमानिका मे कहियो काल पति केँ दंगार रंगिन साड़ी भेटि जाइन तँ पेटी मे जोगा क’ सँति लेल छलीह—ई सखन बाबूक कनिजा लेल...। राखव जीक कनिजा लेल...आ ई गुंजाक लेल...।

अपन इच्छा-अभिलाषा-लालसा केँ अनटियबैत दबवैत धोर सँ राति धरि अखंड मेहनति करैत ओ कोनो तरहँ अपन घर केँ सम्हारैत रहलीह...पाड़-पाड़ केँ जोड़ैत रहलीह...आ संतान सभ केँ पढ़यबाक प्रयास करैत रहलीह। बड़का बी.ए. क’ ट्रेनिंग कयलथिन आ हाइ स्कूल मे शिक्षक बनि गेलथिन। अध्यापन सँ बेसी प्रखंडक राजनीति मे रुचि लैत अनौपचारिक रूपेँ सक्रिय रहनिहार सखन बाबू केँ आइ के नहि चिन्हैत छनि? छोटका राखव मुदा दिशा भटक गेलथिन। हाइए स्कूल मे रहथि कि गामक गैजेंडी सभक संपर्क मे आबि गेलाल। पढ़ाइ मे कम आ चिलम सँ एक बीत ऊँच धपरा उठाव’ मे बैसी मोन लाग’ लगलनि...। मैट्रिको नहि क’ सकलथिन। एखन टीकेदारी मे लागल रहैत छथिन। बेटी गुंजा बेस चंसंगर रहथिन। फर्स्ट डिवीजन सँ सप्तम बोर्ड कयलथिन, तथापि बेटी रहथि। इच्छा रहितो पाँच किलोमीटर दूर कमठौल बालिका उच्च विद्यालय मे पढ़ब नहि जा सकलीह...। आब तँ सासुरी बसना कतोक बखँ भ’ गेलनि...।

नहि जानि कनिजा काकी हमरा एतेक नीक किए लगेत छलीह? भ’ सकैए हुनक वत्सल सुभाव हमरा अपना दिस तनैत होअय। खाई कोनो आन कारण होइक, मुदा हमरा हुनका सँ पढ़ैत खूब छल। हुनका सँ नह-नह स्वर मे कोनो लोकगीत वा कोनो कथा सुनब हमरा बडू नीक लगैत छल। एकर अतिरिक्त हुनक नेनपनक स्मृति हुनके मुँह सुनैत हमरा लगैत छल जेना कोनो रहस्यमय प्रदेशक यात्रा क’ रहल होइ...। एहन प्रसंग मे कखनो क’ हुनक जीवन-संघर्ष ओ वर्तमान मानसिक स्थितिक झलक सेहो भेटैत छल...। जेना-जेना धिया-पुता सभ पैघ भ’ रहल छलनि...पाड़ि रहल छलनि...तेना-तेना हुनका लाग’ लागल रहनि जे आब किछु बखँ आए! तकर बाद सभ किछु ठीक भ’ जायत। सबहक

दिन फिरै छै। सभ दिन कतहु दुकखे होइ? सपा-विपाक कथा मे सेहो रानी सँ पुरुने रहथि देवी, “नवारी दुःख लेबैं कि बुढ़ारी दुःख? दुःख तँ कोनहु हालाति मे भोगहि पड़तहु। अपराध भेल छीक तोर पति सँ। मुदा, तोहर आत्मा छीक शुद्ध। तँ इच्छा पुष्टि रहल छियौक। बाज! नवारी दुःख लेबैं कि बुढ़ारी दुःख? देवीक प्रकोप सँ भयभीत रहितहुँ रानी बुधियारी सँ सोचैत विनम्र-चिंतित स्वर मे चयन कयने रहथि, “नवारी दुःख तँ सहियो लेब मुदा बुढ़ारी दुःख तँ सहलो ने जायत।” सप्ता-विपाक कथा मे रानी केँ तँ ‘तथास्तु’ केर आश्वस्त भेटि गेल रहनि, मुदा कनिजा काकी केँ? ओ स्वयं कहैत छलीह, “बौआ, हमरा लगैत रहय जे आब किछु बखँ आर... जीवनक अभिभावक दीर्घ कालखंड बीतय वला अछि...। मुदा, कहाँ जनैत रही जे कथा छैक आ जीवन जीवन...। कहाँ जनैत रही जे बसत केँ मुट्ठी मे पकड़बाक प्रयास...।”

सते! कनिजा काकी कहाँ जनैत रहथि जे फसिल लगा क’ संभावित उपजाक सपना देखैत मिथिलाक कृषक लोकनिक सपना जेना प्रतिवर्ष बाढ़ि मे बहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि, तहिना हुनको सपना मात्र सपने भ’क’ रहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि...। सँ जनिताथि तँ जेने पुत्र केँ शिक्षक बनेत आ छोट केँ पेट्टी कान्ट्रेक्टर रूप मे आगाँ बढ़ैत देखि आ टा मृगवृष्णा मे नहि फँसैलाथि...।

पोता-पोती केँ तेत मांशिक करैत...स्नान करबैत...सुगा कोर, मैना कोर खुअबैत...रां-बिरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबैत ओ निरंतर मगन रह’ लागल छलीह। आब तँ हुनका एक्के टा लालसा छलनि। बस...किछु दिन नीक जकाँ सुख भोगि ली...। आ तकर बाद सिसक्य मे सेनुर नेने ओखि मुनि ली...। सुनिक’ एक दिन कतेक कातर भ’ उठल रहथिन व्यास कका...। जेना कोनो बच्चा केँ अपन माय सँ बिछुड़ि जयबाक आशंका त्रस्त क’ देने होइक...।

प्रायः सत्तर वर्षक एहि बच्चा केँ की कहल जाय? दिन-राति जानकी-जानकी रेटैत रहयवला ई बच्चा कोना रहि पाओत हमरा बिना? एगारह बखंक उमर सँ ओ देखैत आबि रहल छथि अपन एहि बच्चा केँ। दुनियादारी सँ प्रायः अनवगत ई बच्चा कथु लेल कहियो चिन्तित नहि भेल। किछु जरूरी होइक तँ जानकी। कतहु सँ घुरिक’ आबय तँ जानकी। बड़की पुतोहु केँ बडू अनसोहात लगनि। बुढ़ारी मे कतहु लोक एतेक...। जानकी...जानकी...जानकी। वाह रे जानकी! कहलकै जे हम सुनारी कि पिपा सुरा गामक लोक बनरी-बनरा! पुतोहु केँ जे मोन

होनि से सोचि आ बाजथि। मुदा, ओ स्वयं जनैत छथि जे प्रायः दसे बखं मे दुगार भ' गेल ई बच्चा पुनः दुगार भ' जयबाक आशंका सँ ग्रस्त अछि...। ओहि दिन पतिक भीतर सँ हुलकी दैत आ फेर सम्पूर्ण मुखाकृति पर पसरैत एक टा दुगार कातरता केँ देखि हुनका लागल रहनि जेना फेर सँ ब्लाइन भीज गेल होइन आ एक टा दुधिया सुगंध पसरि गेल होइक...।

फेर कहियो व्यास काक लगे ई बात बजबाक साहस नहि भेलनि...। आ एक दिन माघ मासक कुहेसल भोर मे व्यास कका अपनहि ओखि मूनि लेलथिन। हुनका ओखि मुनि ते जेना कनिजा काकी अपना केँ कटाह एकाकीपनक हिमगीत चौगुर मे फैसल अनुभव कयलनि। ओह! ओहि दिनुका हुनकर कानब...। तुलसी चौरा लग व्यास ककाक शव पर माथ पटक-पटक क', कोरज फाड़ि कनैत कनिजा काकीक ओ छवि...।

एम्हर पतिक शव केँ लोक स्मरण ल' गेलनि आ ओम्हर ओ अर्धांचके मौन भ' गेली...। जेना एकदम निस्संद...जड़! टोल-भरिक स्त्रीगण सभ जे-जे करबैत गेलथिन ओ करैत गेलीह। सुदी फोड़ि दैल गेलनि...। मौन निर्विकार चेहरा नेने ओ सहयोग भैल गेलथिन...। फेर कोना-कोना अस्थि-संचय सँ ल'क' श्राद्ध धरिक ओरिआओन भैल, काकी केँ किछु बूझल नहि भेलनि। दुनु भाई केँ जेना जे फुरयलनि... लोक सभ जेना जे परामर्श दैलकनि...करैत गेलाह...।



खिड़की पर अँटकल मुँड...

“बौआ...बौआ! उठने हे ही! कतेक सुतबह?”, माय हमर कोठलीक केबाड़ पीरि रहल छल। हमरा लागल जेना कोनो यात्रा सँ घुरि क' आयल होइ। संभवतः माय बूझि रहल छल जे बेटा सुतल अछि। “चाह बना दिय?” मायक एहि प्रश्नक उत्तर मे हम स्वीकृतिपुचक माथ

डोलबैत...नहि जानि किएक माय सँ ओखि मिलयबा सँ बँचैत चापाकल दिस बड़ि गेल रही...।

चाह पीबैत रही तँ माय कहने रहय, “जाह! कने घूमि-फिरि आबह। मोन बहटि जेतह...।” विदा तँ भ' गेल रही मुदा, कोम्हर जाइ से निर्णय बाधित छल। रेल लाइन दिस? नहि! खिरोइ दिस? नहि-नहि!! तखन टोसन? हँ चली...। टोसन पर चाहक दोकान पर लोक सभक चर्चक विषय वैह छल जाहि सँ हम बाँच' चाहैत छलहुँ...। हम ओत' सँ उठि अरुणक पानक दोकान लग जा टाढ़ भ' गेलहुँ। हम नित जतेक भाँग खाइत रही ताहि सँ प्रायः लिगुना हमरा खाइत देखि अरुणक ओखि विस्मय सँ फाटि गेल रहै...। हम ओकरा दिस ध्याने नहि देलहुँ आ विदा भ' गेलहुँ बाध दिस। बौआइत रहलहुँ...बौआइत रहलहुँ... कहुना सम्पूर्ण प्रसंग केँ बिसरि जयबाक प्रयास करैत रहलहुँ...।

प्रायः साढ़े आठ बजे राति मे घर घुरलहुँ तँ मायक खोंचरैत प्रश्न सँ बचबाक एक्के टा उपाय छल जे चुपचाप दू-चारि टा सोहारी खाक' अपन ओछाओन भ' ली...। आह फेर निम्न निपत्ता छल...। क्रमशः जेना-जेना राति बीति रहल छल तेना-तेना निसबद्ध भेल जा रहल छलै...। दूर दखिनवारी टोल दिस सँ कुकुर सभक झीहटि सुनाइ पड़ि रहल छलै...। मुदा एम्हर एकदम निस्तब्धता...। कुकुर सभ निपत्ता...जलमुर्गी मुँह सोने...कतहु कोनो चूलचाल नहि...। पशुपति एक्सप्रेस धड़धड़ायल पास क' गेल...फेर पुनः संन्या...। अचानकक लागल जेना हमर कोठलीक अगुअइत मे किछु खड़खड़ायल होअय...। कथी भ' सकए? हेतै कथु। के ओखि खोलओ?...फेर लागल जेना खिड़की दिस किछु भरिआयल सन। ओखि खुचि गेल...। नजरि खिड़की दिस उठल...। खिड़की पर कनिजा काकी छलीह...। कनिजा काकी नहि, कनिजा काकीक मुँड...। धड़ निपत्ता...। खाली मुँड...। उपरका चारि टा दौत निचला टोर मे भँसल...भीजल केस माथ मे सटल...चँछायल रक्तहीन धोल-पखारल निष्पन्न चेहरा...सोशे हमर दिस तकैत ओखि...। उँह! भ्रम थिक। भींगक वैह लच्छन ठीक नहि। एकभगाह क' दैत अछि। झुट्टे। कहाँ क्यो अछि? अनठिया क' सुतबाक प्रयास कयलहुँ तँ अनुभव भेल जे हृदयक गति तेज भ' गेल अछि...धक्क...धक्क!...भक्क! हम डरबूक नहि छी। कहाँ केओ अछि...? हमर ओखि फक्क सँ खुजल...खिड़की पर अँटकल मुँड हमरा ओहिना निहारि रहल छल...। एक बेर, दू बेर, कैक बेर वैह क्रम चलल...। पसेना-पसेना भ' गेलहुँ...। तरासे कंठ सुखा रहल छल...। चौकीक नीचाँ लोटा मे जल

राखल छल...मुदा हिलबाक साहस...? ओखि मूनि चिचिअयबाक प्रयास कयलहुँ, “माय...माय...।”

“बौआ...बौआ! की भेलह? डर होइत छह की?”, माय केबाड़ फोलि देलक। ई केबाड़ फोलि कहने छलियह भोर मे जे रेलवे दिस सँ हमर कोठली जुड़ि जाइत अछि। ओ हमर चौकी पर आबि बैसल। माय पर हाथ देलक। आँचर सँ हमरा माथ पोछैत जल पिओलक।

“की भेलह?” “माय, खिड़की पर कनिजा काकी छलीह!”

“दूर बताह! ओ बेचारी कथी लेल अओतीह? ई तोहर अपने मोनक डर छलह...। पहिने कहने छलियह भोर मे जे रेलवे दिस सँ जाह तँ अपना केँ जतेक चाहि चिन्हैत छह ताहि सँ बेसी हम तोरा जनैत छिअह। ओ किए अओतीह बेचारी? एहि ठाम हुनक की छनि? जँ रहितनि तँ एना बजबे केरतोह?”

पता नहि किएक हम ओहि क्षण बिसरि गेल रही जे आव प्रायः चौबीस बखं भ' चुकल छी...। मायक कोर मे मूड़ी गाड़ि ठोहि फाड़ि क' कनैत रहलहुँ...।

“बलह बौआ! आव सुतबाक प्रयास करह। बहुत राति भ' गेल। अक्का, कने चुसकह, हमहुँ एहि पड़ि रहैत छी।”

हमरा माय सँ अपन कोठली मे जाक' सुति रहबाक आग्रह करबाक साहस नहि भेल। हम गुब्दी मारि लेलहुँ...। हमरा सुतल जानि नहु...नहु माय फौक काटप लागलि...। आ एम्हर हम सोचैत रही...माय कहैत अछि जे ओ हमरा हमरो सँ बेसी जनैत अछि। की सबहक माय अपन संतान केँ एहिना जनैत हेथिन? की कनिजा काकी अपन बेटा सभ केँ एहिना जनैत रहथि...?

निरर्थक योजक-चिह्न...

ओहि दिन व्यास ककाक त्रयोदश रहनि। प्रायः दह-पगोह बाजि रहल हेतै। कनिजा काकी अपन कोठली मे पड़ल-पड़ल आब सदाक लेल अनुपस्थित भ' चुकल पतिक विगत स्मृति केँ सहेजबा मे लागल रहथि कि आँगन मे हल्ला भेलै...। दुरु पुतोह आपस मे लड़ि रहल छलथिन। पहिने ओ लोकरिना एक दोसरा केँ हीन प्रमाणात कयलनि...। फेर एक दोसराक नैहर केँ गार्हंत भोषित कयलनि...। संतोष नहि भेलनि तँ एक-दोसराक भाय-बाप केँ चिंत्ता जयबाक धमकी देलनि...। तथापि किछु कसरि रहि जयबाक संदेह भेलनि तँ एक-दोसराक अंग-विशेष केँ खूब्यारि केँ आँचर भरि देबाक दावा ठोकल लागलनि...।

ऐन एही अवसर पर सरबन बाबू आ राघव ललक प्रवेश अछि लंका कांड मे पराजित। ओहो दुनु गोटे परस्पर वाचिक आक्रमणक क्रम मे ई बिसेसत कह गेलाह जे एक-दोसरक सहोदर छथि...। तामकक आधिक्य मे समक्ष ठाढ़ राखू केँ आगम्यामनक आरोपी घोषित करैत एक टा हिसंक संतुष्टि सँ पुन होइत गेलाह...। कलाह बढ़ैत गेलै... बढ़ैत गेलै। नीबति मारि-पोटि धरि पहुँचि गेलै...। ई सँ चल्त रहलै जे हल्ला मुनि किछु लोक आँगन मे जुटि गेलाह आ दुनु भाँइ केँ अलग करल गेलनि। तथापि दुनु देयादिनी अपन नेपन सँ ल'क' आइ धरि सिखलाहा गारि सभक बरखा करित रहलीह...।

झगड़ा तँ कहना शांत भेल, मुदा लोक सभ कारण जानि क' चकित छलाह। एतेक साधारण बात लेल एतेक झगड़ा? त्रयोदशा होयबाक कारणेँ आइ राति घर मे माछ वा माउस बनव स्वाभाविक छलै। मुदा माछ आनल जाय वा माउस, से निमित्त नहि भ' पाबि रहल छलै। सरबन बाबूक सार केँ माछ बेसी नीक लगैत छलनि तँ राकव ललकक ससुर केँ माउस। माछिहा एतहि ओझरा गेलै आ बरकुच्चनि होइत-होइत एत' धरि पहुँचि गेल रहै...। आब तँ दुनु भाँइ अड़ि गेलाह जे चूहिल साझी रहि नहि सकैए...। आइए आ एखनिहि बाँट-चूट भ' जाय।

एहन कएह कोनो नव बात नहि छलै। पहिन्हूँ कृतोक बेर दुनु भाँइ टकरा चुकल छलाह। दुनु केँ एक-दोसरक नेत पर शंका छलनि। दुनु केँ होनि जे दोसर महाबेइमान अछि। एम्हर हम घर लेल खटैत-खटैत मरि रहल छी आ ओम्हर ओ चोरा-चोरा क' पाइ जमा करैत अछि। एहि शंकाक आगि केँ लहकयबाक काज दुनु देयादिनी समय-समय पर बहु योग्यतापूर्वक करैत आबि रहल छलथिन...। मुदा आइ, आइ तँ हरे भ' गेलै। कदाचित दुनु पक्ष एहि दिनक प्रतीक्षा मे छल। कनिजा काकी अपन परिवार मे होइए छथि पिनाउन विस्फोट केँ दुकुर-दुकुर देखैत रहलीह आ सोचैत रहलीह जे की एम्हर खून मे एतेक स्वायं भरल छल...।

ओहि दिन तँ बूढ़-पुणन सभ जेना-तेना बुझा-सुझा क' दुनु पक्ष केँ शांत कयलनि, परंच भानस एक ठाम नहि भेलै। दुनु घर मे लोक सभ अपन-अपन इच्छानुसार भोजन बनीलनि। एम्हर रहि गेलीह माय। तँ ओहि दिन दुनु भाँइ जेना मातृ-भबिका आदर्श प्रस्तुत करय लेल तत्पर रहथि। पुतोड़ सभ तँ आओर आगौं-पाछौं, "मा! ई एकर बेर कहथुन तँ जे की खाय के मोन होइत छनि? ई निश्चिन रहथु मा! एकदम अमनिया रहतिन। कनिको संदेह नहि करथु। ई जे कहथिन से बना देबनि। सेबैकक खीर बना दियनु? आकि

मखानक? रसगुल्ला मैया दियनु...?" तालय ई जे एक टा सदा: विधवा जे-जे वस्तु खा सकैत अछि वा जे-जे उपलब्ध भ' सकैत छलै, सबहक नाम गना देल गेलै...। मुदा कनिजा काकीक एक्के रट, "नहि बौआ! नहि कनिजा! हमरा भूख नहि अछि!" ओ तँ वैह नहि बूझि पाबि रहल छलीह जे जाहि आँगन मे आइ एते अट्टाबाज्जर खसल होइक ओत' ककरो कंठ मे किछु कोना धीस सकैत छै?

दोसर दिन भोर अधिकांश पाहुन निदा भ' गेल रहथिन। टोलक दू-चारि टा लोक आ एक-दू टा पाहुन केँ ल' दुनु भाँइ दान पर श्राद्ध खर्चक हिसाब-किताब करय लेल बसलाह। मामिला फेर ओझराय लगलै। ओझराइत-ओझराइत पहिने गारिक अध्याय चललै...फेर लाठी चलबाक नीबति आबि गेलै...। अपन एहन स्थिति देखि लोको सभ बाँट-चूट कइए देब उचित बुझलनि। ओहि दिन तँ नहि, मुदा दोसर दिन पंच सभ जुटलाह आ भीन-भिनाउजक प्रक्रिया प्रारंभ भेल। प्राय: सभ चल-अचल संपत्तिक बखल लागि गेलाक उपरान्त एक टा एहन वस्तु बाँचि गेलै जकरा बाँटब असंभव छलै...। ओ वस्तु चक्कु, टेंगाड़ी, कुड़हरि वा आरी माने कोनो प्रकारक हथियार सँ काटिक' वा तराजू सँ जोखि केँ बाँटल नहि जा सकैत छलै। आखिर ओहि वस्तु केँ बाँटल जाय तँ कोना बाँटल जाय? दोसर, दुनु भाँइ मे सँ कोनो ओहि वस्तु केँ बाँटय नहि चाहैत छलाह। दुनुक इच्छा रहनि जे दोसर गोटे अपन दावा छोड़ि देअय आ ई पुराक पुरा हमरे भेंट जाय...। ओ वस्तु छलीह कनिजा काकी!

पंच लोकनि चकित छलाह। बाह रे मातृभक्ति!! आइ काल्हि एहन मातृभक्त कस' देखाइ पड़ैत अछि? पुतोड़क तँ बाते छोड़ि देल जाय। पुत्रो सभ मे एहन मातृभक्ति दुर्लभ भ' गेल अछि। बड्ड भागमंत छथि एहन माय। ठीके, ज्वास जो बड्ड सोचि केँ नाम रखने हेताह अपन दुनु पुत्रक। नामक प्रभाव किछु ते किछु तँ पड़ित छै ने...बाह!

अंतत: पंचलोकनि दुनु भाँइ केँ एक दोसरक मातृभक्ति केँ सम्मान देबाक उपदेश दैत एहि बात पर राजी क' लेलनि जे ओ सभ 'पार' लगा लेथि। एक-एक सप्ताहक पार। माने ई जे कनिजा काकी बेरा-बेरी सप्ताह भरिक लेल दुनु परिवार रहल करतीह आ बेटा-पुतोड़ केँ सेवाक अवसर दैत रहतीह। की? कनिजा काकी? कोनो आपत्ति तँ नहि? ओ की बजितथि? किछु बाजय लेल एक टा निकर्ष पर पहुँचब जरूरी छलनि। हुनक माथ पर चकरचिन्ती भेल छलनि...। ओ बूझि नहि पाबि रहल छलीह जे विगत दस-बारह

बर्षक कालखंड मे बेटा-पुतोड़क व्यक्तित्वक जाहि अनेपेक्षित पक्ष सँ ओ नह-नहू परिचित भेलीह अछि ताहि सँ आजुक पक्षक सामंजस्य कोना बैसाबथि? ओ दुकुर-दुकुर तँकैत रहलीह...। दुनु ठोर ससल रहलनि...। हुनक चुप्पी केँ स्वीकृति बुझल गेलै...।

'पार' ओही दिन सँ प्रारंभ भेलै। पहिल पार भेटलनि जेठ पुत्र सरबन बाबू केँ, हुनके इच्छाक आदार करैत। ई घोषणा करैत पंचलोकनि पंचैती समेटबाक लेल उद्यत होइते रहथि कि आँगन दिस हल्ला उठलै...। हल्लाक केन्द्र पर नजर पड़िते सभ सत्य रहि गेलाह...। मौझ आँगन मे दुनु देयादिनी परस्पर भिड़ल छलीह...। असल मे भेलै ई जे पारक घोषणा होइतिहि जेठ-जनी दुरुष्ठाक केबाड़क पाछौं सँ चूड़ी खनका क' सरबन बाबू केँ इशारा कयलनि। ओ लग गेलाह तँ देखलनि जे पल्लक हाथ मे मायवला पुराना टिनही बाकस छनि। हुनके दिया कनिजा काकी केँ अपन घर चलबाक समस्त अत्यावश्यक-हड़बड़ावल स्वर मे देलथि जेठ जनी, समाद सुनियो क' कनिजा काकी 'की-करी, की-नहि'क सोच मे पड़ल रहलीह...। संपूर्ण घटनाक्रम हुनका लेल भीषण बेदनादायी छलनि...। एहि विषंडन केँ एकबाक कोनो बाट नहि सुझि रहल छलनि। आब विषंडन केँ रोकबाक कोन कथा? ओ तँ भ' चुकल रहै। संपूर्ण वीथरसताक संग। ओ स्वयं की करथि? कि तत्बहि मे आँगन मे अनपेक्षित मचल...।

प्रतिद्वंद्वी देयादिनी जकाँ छोट जनीक सेहो नजरि प्रत्येक घटनाक्रम पर आ कान प्रत्येक स्वर पर रहनि। जेठजनी दुरुष्ठाक केबाड़ लग समनद्ध छलीह छोट जनी दानाक कोठलीक सिड़की लग तत्पर। पारक घोषणा होइतिहि कोठली मे जेठजनी केँ लपकि क' सासुक कोठली मे जाइत...सासुवला टिनही बाकस ल'क' भड़फड़ाइत दुरुष्ठाक केबाड़ लग अबैत...चूड़ी खनकबैत...आ पति केँ किछु फुसफुसा क' कहैत देखलनि। निमित्त मात्र मे ओ सभ बात बुझि गेलीह... 'गै दाह! ई बात छैक? फुलौ नै देख्यो! इह! लगीए हम छोड़ि देबै। आँखि आगौं अपन आशा-अभिलाषाक अपहरण देखि जे चुप रहि जाय से एक बाकस बेटी नहि!' ओ झपटू मारिक' बाकस केँ ध' लेलनि। छीना-झपटो मे दुनु देयादिनी असंतुलित भ' दुआरि पर सँ आँगन मे खसलीह। चोट भरपर लगलनि...। पंच सभक नजरि जखन पड़ल रहनि तखन दुनु गोटे बाकसक कड़ी केँ पकड़ने अपना-अपना दिस धोचि लेबाक प्रयास क' रहल छलीह...। संगहि वाक्-बुद्ध चालू छल...निर्गत। एक-दोसरक बेटा, घरवला, भाय, बाप सभ केँ सोझे गोड़ि जयबाक

धमकी देल जा रहल छल...।

आवाक कनिआ काकी दुनु पुतोहु आ हुनका सभक मध्य योजक किछु जकाँ वर्तमान संदर्भ बुझबाक प्रयास क' रहल छलीह...।

पंच सभ दुनु देयादिनी केँ डोटिक' फराक कयलनि आ बाकस केँ सबहक मध्य मे आनल गेल। कोन रहस्य छै एहि बाकस मे ? किएँ दुनु देयादिनी एहि बाकस केँ हाथियाब' लेल एतेक आफन ठोड़ने छथि ? ई बाकस तँ कनिआ काकीक दुरामनिआ बाकस छनि जे हुनक बाबूजी बडू सख सँ देने रहथिन। तहिया जेहन रहल हो, मुदा आब तँ भ' गेल अछि पुरान... विज्ञायल... प्रायः जर्जर सन...। तहि लेल एतेक तमाशा।

असल मे, दुनु बेटा-पुतोहुक मोन मे एक टा अद्भुत आशा बहुत दिन सँ सुगाव्वा रहल छलनि...। ई सभ जेनाँ अछि जे ओ सभ दिन मितव्ययी रहलीह अछि...। कहियो हाथ खोलिक' खर्च नहि कयलनि। तखन तँ ओ अवश्य किछु-ने-किछु जमा करैत हेतीह। हुनका पास अवश्य कोसलिया हेतनि। एहन गुमगी छथि जे बेटा-पुतोहु केँ हवा लागय देतीह...। जरूर बेटी तेल जोगाक' रखने हेतीह...। ओहो जे गुंजा अछि ने से माये जकाँ गहरीर अछि...। मुदा तहि सँ की ? छोड़बनि थोड़े। आ गहना ? भला गहना छोड़ल जाय ?

पचम लला आ हुनक पत्नी केँ आशा छलनि जे जेकि राघव छोट बेटा छथि तेँ मायक कोसलिया आ गहना पर हुनके सभक अधिकार छनि। ओम्हर सरवन बाबू दुनु व्यक्तिक सोचक छलनि जे एक तँ ओ जेट छथि, दोसर आइयो माय सरवने बाबू केँ 'बौआ' कहैत छथिन तेँ स्वाभाविके हुनक अधिकार बेसी मजबूत छनि। मुदा, दुनु पक्ष मे सँ कोनो एहि मादे प्रकटारः चर्च नहि क' रहल छल। दुनु पक्षक कान पर एहि आशंकाक उल्लू बैसल छल जे जँ बात खुजि गेल तेँ दोसर पक्ष अपन हिस्सा मे माँगि लेअय। चतुर कुटनीतिक जकाँ प्रयास कयल जा रहल छल जे अपार मातृभक्तिक प्रदर्शनक बलेँ माय केँ अपना संग राखि लेल जाय...। एक बेर माय अपन पक्ष मे, अपन हिस्सा मे आबि गेलीह तेँ बाकसो अपनहि आबि जायत...। एहि लेल दुनु पक्ष साक्षात्, सतर्क आ सन्नद्ध छल...। जखन खिड़की लग ठाड़ि छोटजनी देखलनि, जे दुरखाक मुँह लग ठाड़ि जेठजनी को क' रहल छथि तेँ ओ जेना सेन्हे पर चोर केँ पकड़ि लेबाक अंदाज मे झपट्टा मारलनि आ पतिक कान फूकि पल्लि पर अपन माय के सहर्ष स्वीकार कर्त्ताक चलल चालि खाली जाइत देखि जेठजनी पर खिसिया क' रहि गेल रहथि...।

पंच लोकनि कनिआ काकी सँ कुँजी ल'

बाकस केँ फोललनि। तहि खन कनिआ काकीक चेहरा मारकोन जकाँ मलिन-मटियौन भ' गेल छलनि...नौरत...निर्भाव...निष्प्रभ ! आँखिक चारूकात असंख्य बादुर उड़ैत...कनपट्टी पर गिरगिट चलेत...। बाकस मे सँ बहार भेल...दू-तीन टा पुरान साड़ी...सेनुरक एक टा गद्दी जे कदाचित साड़ी मे सन्हायल रहि गेल रहै...। व्यास ककाक एक टा पुरान मैलछीह फोटो, खादीक एक टा पुरान दुहरी चढ़ि...आ एक जोड़ा पुरान खराम जे मृत्यु सँ पूर्व व्यास कका पहिरैत रहथि...बस्स ! दुनु देयादिनी केँ विश्वास नहि भेलनि। दुरखाक मुँह लग ठाड़ि ओ लोकनि पहिने नहु खर मे फेर जोर सँ निर्दोश देलाधिन जे बाकस केँ उन्टि-पुन्टि क' देखल जाय। मौलायल आस नेने दुनु भाई सेहो एहि बात पर जोर देलनि। पंच मे सँ एक गोटे ईहो क' के देखा देलाधिन। किछु नहि खसलै। सभ टा वस्तु ओही मे राखि क' ताला लगा बाकस कनिआ काकी लग राखि देल गेलनि। कुँजी सेहो हुनके द' देल गेलनि। एक टा पंच आग्रह करैत कहलथिन, "जाउ सरवन बाबू, आब माय केँ ल' जइयन् !" हताश सरवन बाबू मरल मोन सँ बाकस उठा माय केँ ल' क' आँगन गेलाह।

"ई जंजाल किएँ उठा क' ल' अनलहुँ। फेकि दितियै डबरा मे वा द' दियो ओकरे सभ केँ जकरा सभक करेज फटैत छलै एहि लेल !" आँगन मे ठाड़ि पत्नी हुनका डटिय लगलथिन। ओ कनेक थकमका गेलाह। ओम्हर छोट जनी केँ ई बात खबखबा केँ लगलनि। ई रौंदी की बुझैत अछि ? ओ खौराक बेटी अछि तेँ हमहू जलबाक बेटी छी। घुमा-फिराक' कूट करत तेँ हम नजि बुझबै ? आ हम छोड़ि देबै की ?

"हमर सभक करेज किएँ फाटत ? फटलै ओम्कर सभक जकरा अपन बेटाक सराप लेल डेउआक कमी होइ आ जे निर्लज्ज जकाँ बाकस चोरक' भागय।"

एहि जोरगर आक्रमण सँ जेठजनी छिलमिला गेलीह। ओ आँचर उठाक' सूर्य दिस तकैत बजलीह, "हे दिनकर दिनानाथ ! जनिह' तौही...। जरल उगै छह...जरल डुबै छह...। थोड़ी सभ हमर बेटा केँ नजिर पर चढ़ौने रहैए...। तौही निसाफ करिह'। हे नाथ ! गुँहखोंको सभ केँ मुँह मे खदखद पिलुआ फरबिह' हे दिनानाथ !"

आब तँ छोटजनी केँ सनसना केँ लगलनि। एहन चिनीन आक्रमण ! नजि। आब अप्रत्यक्ष आक्रमण सँ काज नहि चलत। प्रत्यक्ष आक्रमण बेसी चोटरा, "हमरा किएँ पिलुआ फरत ? फटली तोरा सभ केँ। तोहर बेटा केँ...तोहर चाँद सन भरवल केँ...भाय केँ...बाप केँ...आ सेहो नेखरिया पिलुआ !..."

एवंप्रकारेँ प्रत्यक्ष आक्रमणक क्रम चलेत रहल...चलेत रहल...।

अपूर्ण आशाक साइड इफेक्ट...

आ ओही दिन सँ शुरू भ' गेलनि कनिआ काकीक जीवनक एक टा नवीन क्रम...। कड़ाचूर मेहनतिक क्रम...। ओना तेँ ओ अपनहि बैस क' खायवाली कहियो नहि रहलीह, मुदा आबक कथा किछु आने छलै...। जाहि बेटाक पार मे ओ रहथि, भयक कोन काज नहि करथि ? चाउर विछब, चिक्कस चालब, घर-आँगन बहारब, बच्चा सभ केँ समहारब...माने ई जे कोनो-ने-कोनो काज मे लागले रहैत छलीह...। तैयो जँ केओ कमी निकासि-निकासि क' फझाति कर' पर तुलल रहय तेँ को कयल जाय ? दुनु पुतोहु अपन-अपन पार मे हुनका पर क्षुब्ध रहैत छलथिन। हुनका सभ केँ शंका नहि विश्वास छलनि जे ओ महाबेइमान छथि...नमक हराम छथि। जेठजनीक पार मे छोटजनीक दुआरि पर बैसि जायब वा हुनक बच्चा केँ दुलारब तथा छोटजनीक पार मे जेठजनी सँ बतियायब वा हुनक कोनो सीदा दोकान सँ आनि देब कनिआ काकीक बेइमानी मे गनल जाइत छलनि...। रहहाँ घुमा-फिराक' खरय तेँ कयले जाइत छलनि जे ओ अपन सभ टा कोसलिया बेटी केँ द' देलनि...। एहन अवसर पर बेटी आ नातिक लेल होइत गारि-सरापक बख्शा हुनक आत्मा केँ हेहर ह' देल छलनि...। उन्टि क' उत्तर देब वा आपति करब हुनक स्वभाव कहियो नजि रहलनि। मोनहि मोन कूही होइत ओ एतबे सोचथि जे ओइ बेचारीक कोन दोख ? ओ तेँ अपनहि दैवक डाँग सँ थकुवायलि अछि। एकमात्र बारस बर्खक बेटा केँ कहुना क' पोसैत ओ कतेक कष्ट सँ जीवन बिता रहल अछि, से कोनो नुकाल छै ? केकरा नजि बूझल छै ? तैयो एतेक गारि-सराप।

जखन कखनो गुंजाक मादे सोचैत छलीह कनिआ काकी तेँ लगैत छलनि जेना केओ करेज केँ पकड़ि क' निचोड़ि उत होनि...। कतेक दुलार रहय बापक। पतिक आगाँ बेटी केँ डायैय क कहियो हिम्मत नहि भेलनि हुनका। से आइ...। कखनो क' अपन बेटी पर गर्व सेहो होइत छलनि। लगैत छलनि जे बेटी हुनको सँ बेसी साहसी छनि। अपना नवारी मे लाख कष्ट रहल होनि...कम-सँ-कम सिनेही पतिक छौह तेँ उपलब्ध रहनि...आ गुंजा केँ ?

ककर भाग मे को लिलल रहैत छै, से के जनेए ? जहिया व्यास कका बेटीक लेल वर देखि क' आयल रहथि तहिया कनिआ काकी केँ बडू संतोष भेल रहनि जे तेहि मात्र पौने कोस दूर

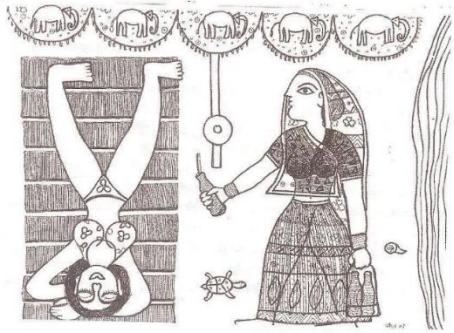
रहत। एहि गाम सँ पूल थोड़ेक दूरी पर खिरोड़ आ तकर बाद ढहिया...। ढहियाक पंडित उमाधर झा केँ केँ नहि चिन्है छनि? परोपट्टा मे नामी...प्रसिद्ध वैदिक! तिनक पोता। गो नार चकैत सन भूआ। बी.ए. पास। को हतै जे एखन कोनो नोकरी नहि भेलनि अछि? तत्काल उत्साहपूर्वक खेति ए मे लागल। संगहि गामक सार्वजनिक काज सभ मे आगौं-आगौं रहनिहार दुस्साहसी युवक। के जनैत रहय जे यैह दुस्साहस काल भ' जेतै।

सतासीक चदल बाढ़ि मे लगनमा पुल लग खिरोड़क उफनैत धार मे हेलबाक दुस्साहस ढहियाक तीन टा नवयुवक केँ गौड़ि गेल रहै...। ओही मे ओहो रहथि। सात दिनुका बाद जखन पानि उतरल रहै तँ कोस भरि दूर ततैला लग बबूरक झोझ मे ओझारायल लाहास भेटल रहै...फूलल-फूलल...किछु-किछु सड़ल सन। कहना क' संस्कार कयल गेल रहै। एहीक संग गुंजाक सभ ठा स'ख-मनोरथ जेना बाढ़िक संग बहि गेल रहै...। आव तँ कहना क' बेटाक लेल जीबाक छलै...। से बस संघर्ष करैत जीबि रहल अछि...।

गुंजा केँ बड़ प्रेम आ भरोस छलै अपन भाय सभ पर। भाय सबहक विरुद्ध ओ किछु सुन' लेल तैयार नहि रहल कहियो। नैनपन मे झगड़ा भेला पर यदि कोनो संगी ओकरा भायक गारि पड़ि देक तँ ओ किटकिटा क' संगीक मुँह नोचि लेअय। आर जे गारि देबाक हो से दे, मुदा यदि हमर भाय सभ केँ किछु कहब तँ छोड़बो नहि, से बूझि ले। भायक प्रति ई प्रेम बिआहक बादो बनल रहलै। तँ ने ओ सभ साल दुर्गापूजा मे जे नैहर आबय तँ भरदुतिवा मे भाय सभ केँ बड़ सिनेह सँ नोतैत छलै...आ टोलक छोट-पैच बेटी-धी सभ केँ प्रेरित करैत भरपुर ओरिआओन सँ सामा-चकेना खेलैत छलै। कतेक विश्वास छलकै छलै ओकर आत्मा सँ जखन ओ बेस टंकरा सँ गबैत छलै—

गाम के अधिकारी अहाँ सरबन भैया यी
अहाँ राघव भैया यी
भैया गोट चढ़ि पोखरि खुना दिय'
चम्पा फूल लगा दिय' यी...।

मुदा, कहौं सुनि सकलथिन भाइ सभ बहिनक करुण हाक केँ। बहिनोड़क श्राद्ध मे जे दुनु भौइ नोत पुरि क' अयलाह, से जेना तकर बाद ढहियाक बाटे बिसरि गेलाह...। राजनीतिक काज सँ ओआहत सरबन बाबूक लिस्ट मे ढहियाक नामे नहि छलनि आ राघव लला, तँ सरहजहि एक टा अलगे दुनिया मे मस्त रहैत छलाह। अभावग्रस्त गुंजा एक बेर पूली पुर्णिमाक अवसर पर गीतार कुंडक मेला मे माय सँ भेट क' काय कहने रहनि जे भैया सभ



केँ कनी मदति करय लेल कहिअहुन...। मुदा भैया सभ तँ सुनिते मातर अपन-अपन रोदना ततेक ने पसारि बैसलथिन जे मायक मुँहक बात मुँह मे रहि गेल रहनि...।

तौयो गुंजा साहस नहि छोड़ने अछि...। की भेलै जे नैहर आबय छोड़ि देने अछि? बापोक श्राद्ध मे नहि आयल...। खूब जनैत छथि ओ अपन बेटी केँ। अपन दुर्दशा माय केँ देखाब' नहि चाहैत अछि...। जो गै बेटी। हम अपन अभागक अतिरिक्त तोरा किछु नहि द' सकलियौ...। यदि हमर पास किछु रहैत तँ तोरा एना बेलल्ला नहि होब' दितियौ...।

आ एम्हर बेटा पुतोहु केँ होइत छनि जे बेइमान बुढ़िया सभ किछु बेटी केँ द' देलक...। सभ किछु? कथी-कथी? स्वार्थक आवेग मे हुनका लोकनि केँ एतबो स्मरण नहि रहैत छनि जे हमर पास रहबे की करय? गहनाक नाम पर मायक देल एक जोड़ी माकड़ी। ओहि मे सँ एक टा केँ तोड़बा क' बड़कीक बेटा केँ हनुमान बनवा देलथिन तँ दोसर पर नजरि गड़ि गेल रहनि छोटकीक। ओहि सँ ओ बाली बनवा लेलनि। रहल टका! तँ यदि से रहैत तखन यैह दुर्दशा रहैत हमर आ हमर बेटीक...?

सोचैत-सोचैत कनिजा काकी अपन विगतजीवनक खानबनि करय लगैत छलीह...। कत' गलीती भ' गेलनि? कत' चुकि गेलीह? जे किछु जहिया आमदनी होइत छलनि तकर पाइ-पाइ ओ परिवार केँ बनाब' मे खर्च करैत रहलीह...। सख-संधोरि केँ कोटीक कन्हा पर रहने छलीह...। तीर्थ यात्रा ककरा कहैत छै ओ कहियो नहि जानि सकलीह। बड़ भेलनि तँ गौतम

कुंड, अहिल्या स्थान वा बेसी-सँ-बेसी गंडेसर... पर्यै...दर्शन-पूजा क' बिनु कैचा खर्च कयने आपस...। सला एकेके टा लक्ष्य! धिया-पुता सम्हरि जाय...मनुख बनि जाय...आर की? कत' कसरि रहि गेलनि प्रयास मे? सत्य कही तँ ओ यदि कमी कयबो कयलनि तँ बेटिए संग...। ओहन चंसगर बेटी! कतेक इच्छा क' ओकरा पढ़बाक। मुदा कोना जाय दितथिन कमलीह...। पाँच किलोमीटर दूर...केओ संगी नहि, बेटी जाति... ओह! यदि ओ पढ़ि-लिखि गेल रहतिनि तँ आइ...। दुनु बेटाक बिआह बड़ स'ख सँ कयने रहथि। कहौं जनैत रहथि जे बिआहक लेल प्रस्थान करैत बेटा सभ केँ परिछनक उपरान्त परम्परानुसार जे छाती सँ लगीतोह से जेना माय सँ बेटाक विमुखताक प्रस्थान-पर्व सिद्ध होतिनि...। अपना जनतब पुतोहु सभ केँ कोनो कम सिनेह देलाथिन? दुनु पुतोहु केँ हुलास सँ नव-नव नाम देने रहथिन—हौरा सुनारि आ फूल सुनारि। जेना आन-आन सासु लोकनि करैत जाइत छथि तेना ओ कहियो पुतोहु सभ केँ कसिक' नहि रखलाथिन। टोलेक देयादिनी छलथिन 'अरेरवाली बहिन'। ओ कहबो करथिन, 'कनिजा एना डील देबै तँ पछायाव'। कहबी छै, हल्लुक सवार घोड़ा फउद मारैए'। परंच एहन अवसर पर कनिजा काकी खाली हँसि क' रहि जाथि। कहियो भारी सवार होयबाक प्रयत्न नहि कयलनि। किछु-ने-किछु हेर-फेर क' कोसलिया जमा करबाक लुतक रहैत छनि स्त्रीगम मे। कोनो-कोनो चतुरी सँ चुपचाप लहने लगबैत छथि। मुदा ओ कहियो एहि दिशा मे सोचबो नहि कयलनि...। ककरा सँ चोर बितथि। आ आइ हुनका पर आरोप सफल

जाइत छनि...। आरोप नहि जेना करलक ठीका...। अपन हाइ-हाइ निकलल देह केँ नहिरैत हुनका लगीत छलनि जे कदाच दूटि क' रहि गेल अपन निराधार आशा-अंशका केँ देखि ओ लोकनि एतेक खिसिया क' रहि गेल छथि जे...। कदाच एही कारणेँ जिनक घर में ओ रहैत छथिन तिनक तामस हरदम लहरल रहैत छनि...। कदाच तेँ ओहि सप्ताह भरि ओइ घर में भात बहुत कम बनैत छै...। आ जतबा बनैत छै से कनिजा काकीक लेल नहि रहैत छनि...। हुनका लेल मकड़ वा बडू भेल तँ गहुमक जगहा रोटी आ तक्रारीक नाम पर किछो वा नोन-तेल। हुनका माछ-माउस वा पियाजु-लहरसुन सँ दिक्कत होइत छनि। होइत छनि तँ पेशद रहनु...। ओहि सप्ताह मे उपेति क' तीन-चार दिन बनबे करैत...।

भीन भिनाउजक बादे सँ दुनु भीड़ दनान प्रगति क' रहल छलाह...। गामक लोक केँ देखि क' ठकमुड़ी लागि जानि। दुइए साल मे दुनु भीड़ दड़िभंगा मे लक्ष्मीसगर मोहरला मे छपकी पर डेढ़-डेढ़ कटुआ जमीन ल' नेने छलाह आ एतय गाम पर तीन-तीन कोठली पक्का घर सेहो बना नेने रहथि। बस दलानवला भाग टा पुराने छलै...। माटिक भीतल एक टा पैघ कोठली। एहि कोठली सँ आँगन दिस जात सँ एत' सँ ओत' धरि दुआरि जकर एक दिस एक टा एकचुरी कोठली। एहि मे कनिजा काकी रहैत छली। दलानवला पैघ कोठली सँ एक दिस चारि-पौच टा माटिक कोठी सभ मे आव प्रायः खालिए रहैत छलै...कहियो तोड़ि क' फेंका जयबाक प्रतीक्षा मे। एहि कोठली मे केओ बाहुनि-सोहनि नहि दैत छलै...। साझी चीज साँग पर...। कहियो क' मोन होनि तँ कनिजे काकी बहारि-सोहारि दैत छलथिन—पारवालीक उलहन सुनियो क'। कोठली सँ बाहर आउ तँ दलानक बरंडा पर एक टा पुराना चौकी राखल...। गदी सँ भरल। दलानक काजे कीन? सरबन बाबू केँ गाम-गाम राजनीति करय सँ पलछति नहि आ राखव ललाक दलान छलनि गामक टीसन वा ब्रह्मस्थान वा पंचायत भवन जतय संगी सभक जुटान होइत छलनि...। के देखिए दलान केँ? दुनु केँ अपन-अपन परिवारक बेसी चिन्ता छलनि...। कहनुा प्रगति करी...। से दुनूक प्रगति देखि कनिजो काकी चकित छलीह। जे लोकनि बापक श्राद्ध मे एक बीघा खेत बेच लेलनि...। से एही बीघ मे एतेक गाइ कत' सँ आनि लेलनि? एहन अवसर पर ओ अपन काम छुड़ि बाबा वैद्यनाथ सँ माफी माँगि लेथि...। क्षमा करव हे बाबा! हमर चरति नहि लागैक। काकीक बेटा तँ बेटा, पुतुही सभ तँ आर होशियार छलथिन।

मुट्ठी बान्हि क' खर्ब करैत जाइत छलथिन। खास क' सासुक लेल तँ हुनकर सभक मुट्ठी किछु आर कसि जाइत छलनि...। ओ सभ किछु देखैत रहैत छलीह...बुझैत रहैत छलीह आ सहैत रहैत छलीह...।

गामक स्त्रीगण सभ प्रायः एहि बात लेल निरुमइस रहैत छथि जे ओ चारि-चारि टा हरिबासर कयने छथि। मुदा, एहि दू बर्ष मे कनिजा काकी कतेक हरिबासर क' चुकल छलीह, से के जानय...। अपना केँ साधिक' राखि देने रहथि ओ...। एम्हर हम कहियो हुनका मुख पर तृप्तिक लेशो नहि देखि सकल छलहुँ। सदियन जेना गिल्ल छाउर अईसल...। ईह! की सुनार अईठिया केस रहनि हुनक। से आव धडुबडा क' पकैत-ओझराइत बगडाक खोता भ' गेल छलनि...।

इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ...

“हँ-हँ। चल। दियो...चल। दियो...” चारिम बेर दही परसल जा रहल अछि...। दहीक बारिकक संगे चीनी, खलना, आ बुनियोंक बारिक सेहो गतिशील-सक्रिय छथि...। बेसी लोकक पेट भरि चुकल छनि। तैयो रसना मानि नहि रहल छनि...। छीलल माथ...चानन लेपल कपार...पीयर धोती, पीयर जनेउ आ भागलपुरी दोपटा सँ शोभित सरबन बाबू आ राखव लला हाथ जोड़ि-जोड़ि क' आग्रह क' रहल छथिन, “हडुबडाइ नहि जाइ जाउ। सभ केँ इच्छा भरि भोजन करय दियनु। कोनो वस्तुक कमी नहि...।”

जिनक पेट भरि चुकल छनि से मोने मोन अपन एहि मूर्खता पर पछता-खिसिया रहल छथि जे पहिने चूड़े बेसी ल' लेलाह। एतबे नहि, पहिले वा दोसरे बेर मे दही अहगर क' ल' लेलाह। ईहो नहि ध्यान देलनि जे गर्मीक पुरान दही छटार होइत छै आ भोज मे तँ पहिने पुराने दही परसल जाइत छै। आव असली खायवला दही परसल जा रहल अछि...। मुदा, खाधु कोना? पेट मे जगह कहाँ छनि? आ बुनियों कोना खयताह? अपना केँ संसारक सभ सँ बड्का उलूकनन्दन बुझैत ओ लोकनि मुँह लटकीने किछु बेसी अग्रचेती सभ केँ देखि जरि रहल छथि जे कोना ओ सभ पहिने तँ हाथ बारने रहलाह आ आव हाथ-मुँह चारिम गैयर मे चला रहल छथि...।

हम सहटि क' कनिजा काकीक आँगन दिस बड़ि जाइत छी। एत' अलगे अनभोल मचल अछि...। बाहर पुरुष वर्गक पहिल खेपक भोज आव लमिचलान छै। योजनानुसार स्त्रीगणक बिड़ो भ' गेल अछि। आव यावत पुरुष वर्ग भोजन क' कय उठत, अँईट-कूट उठाओल

जायत, खरहरा देल जायत तावत स्त्रीगण केँ पारस देल जेतनि। पूरा आँगन भरल अछि...टोल भरिक बेटी-धो आ वूढ़-पुरान स्त्री सभ से...। सबदक हाथ मे थारी आ बट्टा। ककरो-ककरो हाथ मे बट्टाक बदला लोटा। पारस परसल जा रहल छै। सभ केँ पहिने ल' लेबाक हडुबडी लागल छै। दुनु दैयानिदी अतिथ्यस्त छथि।

“केओ छुट्ठि नहि। सभ केँ भरि इच्छा दियनु। हे दाइ सभ, पहिने पारस ल'क' अपन-अपन आँगन भ' अबै जाउ। आ हे, आँगने मे नहि रहि जायब। जकदी सँ घुरि क' अबै जाउ आ भरि इच्छा भोजन करै जाउ। अहाँ सभ कुमारी-बारी छी...भगवती स्वरूपा छी। अहाँ सभ केँ भरि पोख खा लेब आ भगवती केँ कहबनि तँ मा केँ अवसर पडत हेतनि...।” जेउजनी अपन बोल केँ आर मधुर बनबैत आग्रह करैत छथिन।

“हँ-हँ किये नहि। जोबैत रह तँ गृह भात आ मुइला पर दूध भात। इह! नाटक ने देखु! एहने पडत भगवान अहाँ सभ केँ देखि!” चउदह बर्षक मुँहकट बुचियाक टिप्पणी केँ सुनेत मात्र ओकर बड्की बान्हि कामिनी घबडा जाइत अछि। ओ बुचियाक मुँह पर तरहती रहैत डैटैट अछि, “बुचिया तोरा बाज' के ठेकान नहि छी। तोहर तोर पर बड्की बड्क पाक' लागल छैक। हरदम लुबलुब करैत रहैत छै। बेसी उचितवक्ताक सारि नजि बन।” ई कहि कामिनी एक टुनका बुचियाक गाल पर दैत अछि।

ई जेना बड्क अनसोहल लगैत छै गितिया केँ। बुचिया ओकर संगी छै। दुनु मे ‘फूल’ लागल छै। आव कामिनी केँ किछु कोना कहीक गितिया, मुदा ओकर अपन जोह केँ के रोकि लेत, “अर्य ये जलवार वाली भोजी। गुंजा दीदी केँ नहि देखै छियनि। एह बेर नहिए बजौलियनि? जाय दियो। आवि क' की करितथि? माय केँ तँ चिवाइए गेलियनि अहाँ सभ...।” गितियाक एहि कथन पर आस-पासक सभ चौंकि पडैत अछि। केओ बजैत तँ नहि अछि किछु, मुदा सभ केँ तामस बड्क होइत छै। ई दुनु धौंधी सभ लाहेब करत। जे जलवारवाली वा खौंवारवाली सुनत तँ पता नजि की हैत? भोज खाइते रहि जयतीह छिछिआहो सभ! मुदा, लगीए, दुनु दैयानिदी कदाच बुचिया वा गितियाक टिप्पणी नहि सुनि पौलनि अछि। यदि सुनबो कयने हेतही तँ संभवतः अनठिया देलनि अछि...।

हम दलान पर आबि जाइत छी। बसस। किछु काल आर। पहिल खेपक भोज सम्पन्न भ' जेतै। आ फेर पान-सुपारी लेल भ्रमासन मचत...। हम सहटैट-सहटैट अपन दलान पर आबि जाइत छी। आँगनक गेट बन्द अछि। माय सरबन बाबूक आँगन गेल अछि। हम दलानक

आगों भालसरीक छौह मे कुर्सी ध' बैस जाइत छी...। अकास साफ अछि...। कूदि-फानि क' मेघ सभ दखिन-भर चलि गेल अछि। ध' सकैए पच्छिम मे बराल होअय। एहि गाम धरि अयबाक साहस नहि क' सकल। संभवतः इन्द्र केँ अपन पराजय मोन पड़ि गेल हेतनि...।

अन्हरियाक पंचमीक उदास चान रेलवेक ओइ पार आमक गाछीक उपर उगि आयल अछि। नहु-नहु रेलवे आ तकरी ओइ पार बल्ला मे ठाढ़ इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ देखि पड़ि रहल अछि...। नहि जानि कतोक भूत-प्रेतक बास छै ओहि गाछ पर...। ई कोनो हम नहि कहि रहल छी। कतेक लोक देखि चुकल छथि। कोनो-कोनो महिसवार केँ तँ पसर चरबैत काल घेरियो नेने रहै आ नकिआयल स्वर मे तमाकुल मँगने रहै...। सुनै छियै, ओहि इमली गाछ पर जतेक भूत-प्रेत अछि से प्रायः वैह अछि जे कोनो-ने-कोनो कारणेँ रेल सँ कटल अछि...। जहिया ई रेल लाइन बनल हेतै तहिया के सोचने हैत जे कतेक लोकक लेल अंतिम प्रस्थानक काक सजब-सुलभ-सस्त-साधन उपलब्ध कयल जा रहल छै...। मुदा नहि! कहाँ प्रस्थान क' पबैत अछि केओ? कहाँदेन सभ केँ ओही इमली पर वास लेब' पड़ैत छै...। को कनिजा काकी सेहो ओही पर...? मुदा, एहि ग्यारह-बारह दिन मे कहाँ कतहु नजरी आयल अछि हुनक धूआ? खाली ओहि राति...।

एक मुट्ठी भात...

ओहि राति हमरा लग सुतलि माय फॉफ कटैत रहय। बेटा केँ वास्तव्यक सुरक्षा दैत...। को हम सुरक्षित भ' गेल रही? खिड़की पर सँ कनिजा काकीक मुँड जरूर निपटा भ' गेल रहनि...परंच मोन मे सन्तुष्टि हुनक आँखि ओ बेधक दृष्टि...। को कहय चाहैत रहय ओ दृष्टि...? को अर्थ रहै ओकर...? ओना किए देखने रहथि कनिजा काकी हमरा ओइ दिन?

ओइ दिन कनिजा काकीक नाति आयल रहनि—नानी केँ देखय। माय सँ ज्द क' कय। कतबो मजगूत हृदयक होथि गुंजा परंच मायक लेल देरग तँ छलनिहै नै। को करितथि? नहि रोकि सकलथिन बेटा केँ। कहने रहथिन जे नहि मानबै तँ जो मुदा सोझ धरि घुरि अबिहै।

तहिया काकी छोटजनीक पार मे छलीह। भोर-भोर आबि जुमल ओहि बारह बखंका पाहुन केँ देखि छोटजनीक पारा चढ़ि गेलनि। फल भोग' पड़लनि धिया-पुता केँ। अने माय सँ मारि खाइत ओ सभ हकबका गेल जे ओकर सभक अपराध की छै? तामसे छोटजनी बहुत

कम मात्रा मे भात बनौलनि। एतबहि जे हुनक अपनहुँ नेना सभ लेल अपर्याप्त रहनि...। ओ ओहि बारह बखंका पाहुनक आगों मकड़क रोटी आ रामतरौड़क तरकारी परसि देलथिन आ नहाय लेल बाड़ी मे चलि गेलीह...। एम्हर ओ बच्चा कहना क' दू कौर खयलक आ नानीक मुँह ताकय लागल...। काकीक करेज मे हक उठलनि...। हुनक आत्मा कलपि उठलनि...। हुनका लगलनि जेना अन्तस मे जपल कोनो वस्तु पिचलि रहल होनि आ गरा बकोर लागि रहल होनि...। ओ अपना क' कहना क' सम्हारलनि आ एक टा निर्णय लेलनि...। लाज तेयाग क' जेटजनीक दुआरि दिस बढ लीह...कनेक थकमकयलीह...आ चढ़ि गेलीह दुआरि पर...।

“होरा सुनरि, एक मुट्ठी भात देब?” सुनिते होरा सुनरि किटकिटा उठलीह। “केओ कमा क' राखि गेल छै की? हुँह! अंगोर राखिक' पटपटा नहि देबै जे भात देबै?” “कनिजा, हमर जे दुर्दशा करबाक होअय, से क' लेब...मुदा ओहि अबोध केँ...?” पहिल बेर कनिजा काकीक स्वर मे आपत्ति प्रकट भेल रहनि।

“अरे, वाह रे अबोध! ककरो बापक किछु धारने छियै की? केओ खरौत राखि गेल अछि की? एतबे देरग छनि तँ निकालथुन नै कोखमिथि आ खुअबथुन रसगुल्ला...।” देयादिनीक चिकरब सुनि छोटजनी बाड़ी मे सँ प्रकट भेलीह...सद्यःस्नाता...सही अर्थ मे एकवस्त्रा...भोजल केस नग्न पीठ पर लहराइत आ खुअबथुन रसगुल्ला...।

देयादिनीक चिकरब सुनि छोटजनी बाड़ी मे सँ प्रकट भेलीह...सद्यःस्नाता...सही अर्थ मे एकवस्त्रा...भोजल केस नग्न पीठ पर लहराइत आ खुअबथुन रसगुल्ला...। “होरा सुनरि, एक मुट्ठी भात देब?” सुनिते होरा सुनरि किटकिटा उठलीह। “केओ कमा क' राखि गेल छै की? हुँह! अंगोर राखिक' पटपटा नहि देबै जे भात देबै?” “कनिजा, हमर जे दुर्दशा करबाक होअय, से क' लेब...मुदा ओहि अबोध केँ...?” पहिल बेर कनिजा काकीक स्वर मे आपत्ति प्रकट भेल रहनि।

“...बनैत जायत सभ धना सेठ...आ...एक टा पाहुन केँ दू मुट्ठी भात खुअबैत हींग चूब' लगैत छै!”

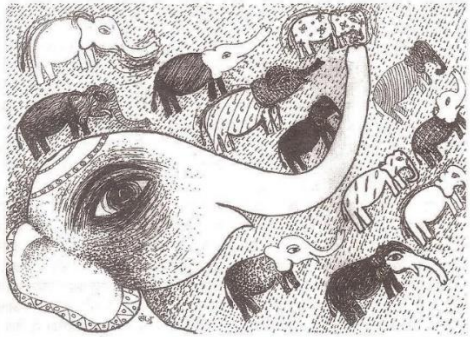
छोटजनी केँ लेसि देलकनि। तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि गेलनि...। ओ खरमासक आंगि जकाँ लहकि उठलीह...। ओ जल्दी-जल्दी सायाक डोरी केँ छाती पर कसलनि आ कनिजा काकी संग व्यास ककाक सात पुस्तक उडार करैत लपकलनि। हुनक झौंटा पकाड़ि क' घिचलनि। कनिजा काकी तलमला क' खसि पड़लीह...। आब ओ दुनु हाथें किसि क' झोंटा केँ ध' लेलथिन आ घिसिअबैत-घिसिअबैत अपन दुआरि लग आनि पटक देलथिन...।

“आह आब' दे मुना के पप्पा केँ तँ भात खुअबैत छियी...। तोते आ तोहार नाति केँ सेहो...। गै रौंड़ी...बुद्धी! तो' गेलय की कय मुइह के दुआरि पर? हमरा बदनम करय लेल? आह तोहार भधियमन-ने-बहका देलियो तँ हमहू भोला मिसरक एक बूँदक नहि...।”

एवं प्रकार' सासुक इलाज कय ओ अपन घर मे कपड़ा पहिरय चलि गेलीह आ ओतहि सँ गरियबैत रहलीह...।

चट्टा पर भोजन लेल बैसल नाति नानीक दुर्दशा देखि पहिने तँ हकबकायल...। फेर किछु नहि फुरयल तँ कानय लागल...। आ कनिजा काकी! ओ नै किछु बाजि रहल छलीह आ नै कानि रहल छलीह। बस चित्तांग पड़ल शून्य दृष्टि...। अकास दिस तकैत रहलीह...। नातिक कानब सुनि चेत भेलनि...। जेना-तेना उठलीह आ नाति केँ पौजय क' कानय लगलीह...।

ओही दिन बेरु पहर नाति अपन गाम चलि गेलनि। संयोग सँ हम खरदाहाक खेत देखि



आपस होइत रही तँ देखलियै जे रेलवेक ओइ पार जे गाछी सभक बाद डिस्ट्रिक्ट बोर्डवला साबिकक सड़क छै ततहि कनिजा काकी नाति केँ विदा क' रहल छथि...। विदा करवाक दंग कएक विचित्रे सन...। परि पीज क' नाति केँ पकड़ने ओकर मुँह, आँख, कान, कपार सभ केँ धड़ाधड़ चूमि रहल छलीह। नानीक पीज मे फँसल नाति कसमसा रहल छल, मुदा ओ ओकरा जेना मुक्त कर' लेल तैयार नहि रहथिन...। कननमुँह भेल नाति केँ गसियाक' पकड़ने विद्वल भेलि कनिजा काकी अचक्के हमरा समझ मे ठाढ़ देखि ठमकि गेल रहथि...। नाति मुक्त भ' पैघ-पैघ साँस लेब' लगलनि...। तखन कनिजा काकीक आँख विचित्र छलनि। नजर झुकि गेल रहथि हमर...। नाति विदा भ' गेलनि। हमरा लागल जे ओ आब गाम घुत्तीह। पुछलियनि तँ ओ हमरा बड़ि जयबाक संकेत कयलनि आ अपने जाइत नाति केँ पाछो सँ देखैत रहलीह...देखैत रहलीह...। की ओ वस्तुतः नातिए केँ देखि रहल छलीह वा आर किछु...? हम पच्छिम दिस अपन गाम जा रहल छलहुँ...। कतेक बेर घुरिक' तललहुँ तँ देखल जे ओ ओहिना ठाढ़ पूब दिस देखि रहल छथि...लगातार...।

ओहि दिन जखन ओ गाम पर घुरि क' अवलीह तँ अपन दुःख की कहितथि बेटा सँ? ओ तँ पहिनहि सँ तैयार भेल बैसल रहनि स्वागतक हेतु। एक टा हाथ छोड़ रहि गेलै नहि तँ कोन दुइसा बाकी रखलकनि राखब लला। बेटाक मुँह ओहन चिन्तन-चिन्तन गारि सुनिक' काकी केँ लागि रहल छलनि जे हाड़ टा रहि जायत नहि तँ देहक माइस गलि गलि क' खसि पड़त...। इच्छा भेलनि जे एँ रहि काल धरती फाटि जाइत तँ ओहि मे समा जाइतहुँ...। मुदा से संभव कहाँ छलनि...?

सरबन बाबू एहि सभ सँ निरपेक्ष। हुनक प्रत्येक भंगिमा जेना यह कहि रहल छलनि, "हमरा नहि कह किछु। हमर पार मे तो एखन नहि छै। ओकरे कही जकर पार मे छही...।" आगला ओहि दिन कनिजा काकी साँझ सँ ल'क' राति धरि ठोल-पड़ोस आ गामक कोन अल्लो बाबू आ फल्लो बाबूक ओत' नहि गेलीह...किनकर-किनकर खुशामद नहि कयलनि... "हमर निसाफ करै जाउ...।" मुदा, कोनो गोटे दोसराक घेरलू मामिला मे बजबाक जरूरति नहि बुझलनि...। दिन भरि दोसराक घेरलू बात केँ औचक्यक रूपाय विषय बना क' मजा लेनिहार स्त्री-पुरुष प्रत्यक्षतः हिनक मामिला मे हस्तक्षेप करब अनुमति बुझलनि...। बसल मे सरबन बाबूक ब्रह्मपंथ आ राखव ललाक लंड सँ सबहक पिल्ही चमाकि रहल छलनि...। के

उपकार क' कय फँसत ग'। जाय दिवौ। फेर तँ माय-बेटा, सासु-पुतोहु एकैक हैत...। बुढ़बक बनब हम सभ। छोड़ह-छोड़ह। हमरा सभ केँ कुकुर कटने अछि की? जानय की जानय जात। हमरा सभ केँ अपने कोन कम समस्या अछि? आ जत' दू टा बासन रहैत छै ओतहि मे ढनमन होइत छै...। तखन घरक बात ल'क' दरबन्जे-दरबन्जे आँगने-आँगने बाँआयब...। ई कोन नीक बात भेलै? नजि अपने चैन सँ रहतीह आ ने हमरा सभ केँ रह' देतीह गुंजाक माय। लगेए इहो सनकल जाइत छथि...।

भोर जे कहियो नजि भेलै...

सनकि तँ गेलै रहथि ओ। तखन ने ओहन विचित्र रूप धारण क' नेने रहथि...। ओहि राति ओ घुरिक' आँगन नहि गेलीह। दलानवला कोठली मे कोठी सभक दोग मे जाक' पड़ि रहलीह...। एक दिन...दू दिन...तीन दिन...। हम एहि बीच मे दड़ि भंगा गेल रही। तेसर दिन जखन चारिबाजिया ट्रेन सँ गाम अयलहुँ तँ जात भेल जे तीन दिन सँ ओ ओही अवस्था मे बिनु खयने-पीने ओही ठाम कखनो बैसल, तँ कखनो पड़ल रहैत छथि...। ने तँ किछु बजैत छथि आ ने ककरो बातक उत्तर दैत छथिन। निकासो लेल बाहर जाइत केनो नहि देखलकनि अछि। सभ सकैए रातिक' एकांत मे जाइत होथि। सभ समझा-बुझा क' हारि गेल अछि...हुनका पर कोनो असरि नहि...।

हम जखन पहुँचल रही तखन तुरंत सूर्य अस्त भेल छलाह। दलानक कोठली अपेक्षाकृत फइल रहलाक बादो किछु भरिआयल सन आ अन्तर सन लागि रहल छलै। कदाचू कोठी सभक कारण...। आँख गढ़ाक' देख' पड़ल रहथि हमरा...। हम मुदुल स्वर मे टोकलियनि, "कनिजा काकी!" दू-तीन बेर टोकलाक बादो ओ उठिक' देबालक सहारा ल' बैसलीह...। आ नजरि उठाक' तकलनि...। चाड़क घसकल खपड़ा सँ बनल छिड़ सभ द'क' तुरते डूबल सूर्यक ललौन प्रकाश कोठली मे जत'-तत' आबि रहल छलै...। प्रकाशक एहने एक टा टुकड़ा कनिजा काकीक बगल मे देबाल पर पड़ि रहल छलै...। ओहि मद्धिम होइत ललौन प्रकाश मे नेनी लागल देबाल आ कोठी सभक जर्जर स्थिति पर नजरि गेल...। संगहि नजरि गेल कनिजा काकीक चेहरा पर...। जनम-जनम के उदासी जेना हुनक आँख मे जमि क' रहि गेल रहे...। नहुए कंपित ठोर जेना किछु कहय चाहैत होअय, मुदा कहि नहि पाबि रहल होअय...। हम आग्रह कयने रहियनि जे अनशन तोड़ि। जे भेलै से

भेलै। ओ तँ माय छथिन। बिसरि जायु सभ किछु। हमरा विश्वास रहथि जे ओ हमर बात मानि जयतीह...। मुदा, ओ टस-सँ-मस नहि भेलीह। हारिक' हम पुनः भोर मे अयबाक बात कहि चलथि लगलहुँ...। अचानक देखल जे हुनक ठोरक कंपन बन भ' गेल रहनि आ आँख एक टा विचित्र प्रकारक चमक सँ चमकय लागल रहनि...।

रोगाह इजोरिया सँ झँपाइत गाम...!

"एह! थढ़-थढ़ भ' गेलैक...। महो-महो भ' गेलैक...। कनिजा काकीक दुनू बेटा कमाल होइतलिन...। कतेक नीक जकाँ अपन कर्तव्य निमाहि देलिन...।" भोज खयनिहार लोकनिक अघायल टिप्पणी चलि रहल अछि...। खुशीक आवेग मे किछु गोटे अँईते मुँह नारा लगाब' लगलाह अछि...।

"कनिजा काकीक?"
"जय!"
"सरबन बाबूक?"
"जय!"
"राखव बाबूक?"
"जय!"
"धर्म केर?"
"जय हो!"
"अधर्म केर?"
"नाश हो!"
"प्राणी सभ मे?"
"सद्भावना हो!"
"विश्व केर?"
"कल्याण हो!"...

पहिल खेपक भोज समाप्त भ' गेल अछि। चन्द्रमा नहु-नहु अकास मे चढ़ि रहल छथि...मुदा इजोरिया साफ नहि अछि...। धूसर मटिआह रंगक...जेना रोगाह होअय...। जाँडिस सँ पीड़ित...। एहि रोगाह इजोरिया सँ आच्छादित गाम क्रमशः शांत भ' रहल अछि...।

ओम्हर सरबन बाबूक दलान पर पहिल खेपक ब्राह्मण-लोकनि पान-सुपारी ल'क' जा चुकल छथि...। खरहरा देल जा रहल अछि...। आ दोसर खेप मे बैसबाक लेल प्रतीक्षारत बुध्बुध ब्राह्मण लोकनि तयार छथि...।

आ एत' हम एहि कुर्सि पर जेना जमि क' रहि गेल छी...। की करी? जाइ कि नजि जाइ?

■

संपर्क : द्वारा-डॉ. पी. के. झा
पी.जी.टी. (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय,
कटिहार, बिहार-854105
फो. 9430038969

રૂઢમુળ્ગી કામળ- સમકાલિન યત્નિકાન સંપૂર્ણ દાસ



મુળ્ગી કામળ

સમકાલિન યત્નિકાન સંપૂર્ણ દાસ

કોનો કઇ સપ્તિવાક છેડ ગુનુ સં વેસી ઇગળ આડ સત્ત્ અન્ધાસ આવશ્યક અછીઈ કલ્વ અછી મથિથિક યથિા સ્ત્રીમળી સંપૂર્ણ દાસક। હનિકન પ્રેહ હુવા હનિકા સવઇ સશ્વઇ વનૌઇક। ૧૫ ળગવની ૧૮૭૨ મે ળગમઇ ગ્નામ કમનૌથિક (દનમંગા) સ્ત્રી પ્ત્રુ ગાનાપ્રમ આડ સ્ત્રીમળી દેવકી દાસક પુત્રી ગામક માટી સં પ્પેઇ આપ્ત નાળયાનીમે વૈસ સાનો ગ્ગક યતિની વૈન ગેથી। મથિથિ સંસ્કાનમે પોષતિ સંપૂર્ણ દાસક સશ્વઇનાક પલ્લિ અંશ હુનકન મથિથિની હેનાય અછી મથિથિક યથિા ળગ્મ સંગે ઇની, વ્યવહાર, ગુમ વનિાસન મડ ઇડ અવૈય ધ'। મુખ -સક્કી કઇ, કુતુસયિા, સવ પાવૈન -ત્ત્રોહાર મડ ઘન -અંગન મડ વનાઓઇ અપિન , ઘનક દેવાઇ પન આંકઇ વનિનિન કઠાકૃત્કિ દનસન મથિથિ મે સહન અછી સંપૂર્ણ દાસ અહસિવ કઇમે નપિનમ છલિહ પન કહયો ઈ ને સોયને નહિપે અહિ આધાન પન ઓડ દેશક નામી -ગામી યત્નિકાન સંગે

अपनी स्थाग सुगस्त्रियति कथनि।

गामक पत्रिषि मऽ पठे संज्ञा दासक जीवग न्यन दोसऽ मोन ठेठक न्यन हुनकऽ वीवह सन् १८८५मे हाटी मोआन ग्नामक स्त्री नवीगद्दऽ दास सँ मेठापो पटना आन्ट कौँठि के पुनश्चिक्षति आयुगकि यतिनका छप्यैह हनिकऽ गुनु आऽ सञ्चिताक मूठ कामस अछी।

न्यन हाथ पकैऽ वाट देय्यवैय ठेठ हमसञ्चऽ संग होय तँ स्त्रे मंजवि कहँ दूऽ नहै अछी ओकऽ। हासवि कयैयक पुनूग औऽ वैठ जास अछी संज्ञा दास जी न्यन महानगऽ मे वसवि तँ धुमैयक गाम पऽ पति संगे यतिनका पुनदऽशनी मे वेसी पौन छविहाकवाक वयि तँ हुनका मोनऽ अंकुजैठ पहिने सँ छठ वस ओह अंकुजैठ वयि केँ माटि आऽ पुनकासक आवस्यकता छठ जे पति स्त्री नवीगद्दऽ दास सँ पुनपुन मेठाआय पत्यिक संनक्षम मऽ वैह वयि पुनस्त्रुटि मऽ पौयक गतिमास केठक नकऽ उयाई हमनऽ सवकेँ गौनवांति कयैऽ अछी।

संज्ञा दास द्वाऽ वगाउठ गोठा आऽ हयिऽ पृष्ठभूमि पऽ हऽ उन्मऽक आकृति मऽ पुनयोग केठ यटकवि नंगक कवाकृति अहाँ के अपनऽ दसि प्ययि। कछि देऽ ठेठ मातऽ नै ,ऽहऽवाक वादो मन ठेठ मजवून कऽ। मथिठि कवाके आयुगकि कवा सँ जोड़ि एगो अठऽ नहक सृजग मातऽ हनिके यतिनका मऽ मेठैऽ अछी हनिकऽ यैह शैठि हनिका सवसँ वसिष वनवैऽ अछी मैथठि शैठिक आत्मा अछि यटक नंगवानकि जेप्पा, अठकानकि हान-वूटि, आऽ पुनकृति यतिनस अहऽ शैठिके आयुगकिनाक आनूषम पहिने संज्ञा जी अपन कैववास पऽ आनैऽ नहै।

हनिकऽ कवा मातऽ पुनकृति आऽ मागवैय सुंदऽना नक समिति नै अछी यतिनकाक अन्थ मातऽ देवाठक पुवसूनी नै वठ्की हऽदयक मगोवावके दृश्य एवं पुनदऽशकानी कवाक वनिनि नूपक माय्यम सँ पुनकट कैऽ

ओकरा नंग द्वाला सुगन्ध आऽ सजीव वनेगार कछ अछी हगिकन कछ कछि एहने सन अछी। पहिनेऽ सूतीक सूतम, सूतीक सूत्रपुन, सूतीक संघनप, सूतीक मगक उड़न, सूतीक शोषम आदि एगो सूती सँ वेसी सजीवता ओयमे औन के आगि सकन। हगिकन मगन दृष्टि वहुत गंभीर अछी जे हगिकन कछाकृतिमिऽ हम महसूस कऽ सकैत छी।

आदमीसँ संपूर्ण दास रवणप सँ उगातान पात्रिगिकि जमिमेदानीयक गन्त्रिह करैत समाज मऽ पुनर्पिण पुनर्पुन कछैथ। हगिकन कछ आव ग्नाम आऽ नाण्ये टा मऽ गै देश आऽ वीदेशो मऽ शोभनीय अछी अप्पन चैन दटा एकछ पुनर्नसनी हगिकन भेठ अछि ज्ञान कछ संस्थागक संग्रहालय मऽ हगिकन कछ संग्रहि छैथ।

व्रिगिगि संस्था द्वाला सम्भागति श्रीमता संपूर्ण दास अप्पन वस उठि गन भेठपनि आगा यैठ हुनका अन्तर्नाष्टनियि सून पन अपन गाम, नाण्य आऽ देशक गाम स्थापति करैथ अछी वहिन सनकान द्वाला वनपिड महिषि कछाकान सँ सम्भागति अहिकछाचन्मी केँ सूत्रस्थ नन आऽ ससकन मगक उड़न छेठ हमन देनो सुनकामना।

हगिका पुनर्पुन सम्भागक व्रिगिगिः-

२०१७-१८ कुमुद शन्मा पुनस्का (वहिन सनकान वनपिड कछाकान पुनस्का)

एकछ

१८८८ ग्नेउछेण वैक गैठनी (यासक्यपुनी दधिषी)

१८८८ नवीद नवन, छति कछ अकादमी, दधिषी

२००० नवीद नवन, छति कछ अकादमी, दधिषी

२००२ गंद छति वसु कछ दीनघा, पटना

२०१२ काँग्वेनसन ठाँवी हैवटिट सेटन

२०१३ कन्वेसन ठाँवी हैवटिट सेटन

ययगति समूह पुनर्नसनीयि

२०२२ गानी गानायमी गृणीया वसंत नाव पनयिणगा
 २०२२ गैठनी पायगयिण द्वाणा वहिण का वहिणम दृश्य
 २०२१ नापेश थंए द्वाणा क्यूनेट कैठऑण्ठाइन ड्वांशु प्नादृशनी
 २०२१ अश्वअछष अय्यठि गानतीय यतिनकठा प्नादृशनी
 २००० पेस समूह प्नादृशनी
 २०१८ महिषि यतिनकानक सामूहिक प्नादृशनी एणपीएमए
 मैथीषी गोजपुनी अकादमी द्वाणा २०१० गंगपूत्री समूह प्नादृशनी
 २००३ अगसेकठुड सपनिटि
 २००१ उगकी कहाणी (शुनीउम आनूट गैठनी द्वाणा समूह प्नादृशनी संगठन)
 २००१ एण इवगि वधि शुगिन्स ओआगपी वाय आनूट पंकुशन
 गोगीदानी
 उमा शंकन पाठक द्वाणा संवन्धति २०२१ समूह प्नादृशनी एणआईवी आनूट
 गैठनी
 २०१८ डाइसार्थी के हसनाक्षन
 २००३ यूपीएकेए द्वाणा रंतन सट्ट एकसयेण प्नादृशनी ओआगपी
 २००१ उगन प्नादेश गान्य प्नादृशनी
 २००१ उगन प्नादेश गान्य ठठि कठा अकादमी द्वाणा पस्यमि क्षेण
 प्नादृशनी संगठन
 २००१ ठठु कठा प्नादृशनी गढी
 १८८७ ठठि कठा अकादमी द्वाणा कठा मेठा संगठन
 १८८७ अश्वअछष अय्यठि गानतीय यतिनकठा प्नादृशनी
 एआनयी शविनि
 २०२२ यूपी ठठि कठा अकादमी औन एमएसएम टनसूट द्वाणा अय्यठि
 गानतीय शविनि पटगातो पी जम्भू ओआगपी
 २०२२ अन्थशवि कठा संवाद वहिण कठा शविनि प्नात्रिन्थन द्वाणा आयोणति
 नवीद नथ टैगोन वशिन्वदियाठय द्वाणा २०२१ अय्यठि गानतीय शविनि
 संगठन

୧୯୯୯ ଆର୍ଟ ଇଣ୍ଡସ୍ତ୍ରି କୈପ ଓଆମ୍ବିକା ବାସ ପେସ ଗ୍ରୁପ୍ ବୋର୍ଡ
 ୨୦୦୭ ଆର୍ଟ ଇଣ୍ଡସ୍ତ୍ରି ଆମ୍ବିକା କୈପ ଦେହାନ୍ତର ଓଆମ୍ବିକା ବାସ ଗ୍ରୁପ୍
 ୨୦୦୯ ସାହିତ୍ୟ କଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଦିବସ ଦ୍ଵାରା ଅପ୍ପାରି ମାମୁଲିୟ ଶ୍ରବିନି ସଂଗଠନ
 କାମ୍ବିକା ସଂଗ୍ରହ: ଲଗାମ୍ବିକା ଦିବସ, ଆର୍ଟିଷ୍ଟିକା ଦିବସ, ମାମୁଲିୟ ବାସିନ ଓଆମ୍ବିକା
 ମାମୁଲିୟ ଓଆମ୍ବିକା ମେ କଂଗ୍ରେସ ଗ୍ରୁପ୍
 ୨୦୧୨ ଶ୍ରୀ ସଂଗ୍ରହ ଓଆମ୍ବିକା ମାମୁଲିୟ
 ମାମୁଲିୟ କି ଓକ କଥା ଧୂମି ଓକ କଥା ଦ୍ଵାରା ଆୟୋଜିତ
 ଆର୍ଟିଷ୍ଟିକା ଦିବସ ମେ ମାମୁଲିୟ ସାହିତ୍ୟ ଉତ୍ସବ
 ୨୦୧୨ ପଟ୍ଟା (ପୁରାସ ପଟ୍ଟା ଦ୍ଵାରା ଓଆମ୍ବିକା)
 ୨୦୧୯ ମାମୁଲିୟ ପେଟାମ୍ବିକା ମାମୁଲିୟ ଓକ କଥା ଅକାଦମି।

ମାମୁଲିୟ
 କାମ୍ବିକା ପେଟା (ଆର୍ଟିଷ୍ଟିକା ଓଆମ୍ବିକା ଓଆମ୍ବିକା, ହିନ୍ଦି, ହିନ୍ଦି, ବାମ୍ବିକା ସାହିତ୍ୟ ଓଆମ୍ବିକା
 ଗ୍ରୁପ୍) ଆର୍ଟି
 ସାମାଜିକ କଥା (ହିନ୍ଦି), ଦୈନିକି ମାମୁଲିୟ, ସାମ୍ବିକା ମାମୁଲିୟ, ମାମୁଲିୟ,
 ମାମୁଲିୟ ସାମ୍ବିକା, ପଟ୍ଟା ହିନ୍ଦିମାମୁଲିୟ ମେ ଓକ

ଅପର ମାମୁଲିୟ ଦିନିକିମାମୁଲିୟ ଓକାଦମିମାମୁଲିୟ ମାମୁଲିୟ।

રઝમુકેશ દાના- અપન સૈથી આ નકનીકક વૈ આયુનકિ કભ મે અભા પહ્યાન
વના નહીહ સંપૂ દાસ



મુકેશ દાના

અપન સૈથી આ નકનીકક વૈ આયુનકિ કભ મે અભા પહ્યાન વના નહીહ સંપૂ
દાસ

મથિથિ પુનદેશક દનગંગા ખાલિક કમનૌથી ગામ મે ખનમઇ, આયુગકિ શૈથીમે
 અપન કઠાકટાકિ ઘેઇ યન્યતિ, પહિવે ઠેક કઠાકાન સંજૂ દાસ માનતક
 યન્યતિ યતિનકાન છથીા હલિકઠાકાનક કઠાકટાકિ સમીક્ષા આર દેશક
 યન્યતિ પત્ન-પત્નકિમે છપૈન નહઇ અછીા હનિક અપ્પન યનિ છર ગોટ ફકઇ
 પુનદેશકી આયોજાતિ યડ યુકઇ અછી અઓન હનિક કઠાકટાકિ દેશક
 પુનતપ્ષિતિ નાષ્ટનોય આયુગકિ કઠા દીનઘામે સેહે સંગનહતિ અછીા વહિન
 સનકાનક પુનકાશતિ 'વહિન કી સમકાઠિગ કઠા' આ 'સૌ સાઇ મે વહિન કી
 કઠા-કઠા ઓન કઠાકાન' દૂગ પુસનકમે હનિકા ગવ પીઢીક પુનતપિત્રાગ
 કઠાકાનક નૂપમે ઉઘેપ્પ કપઇ ગેઇ છેન્હા વહિન સનકાનક વનપ્ષિ મહિથિ
 કઠાકાનક સમ્માગ 'કુમુદ સન્મા પુનસકાન' સં સમ્માગતિ સંજૂખીક
 પુનદેશકી અપ્પન વહિન સનકાનક પટગા સ્થતિ વહિન મ્યૂખયિમમે ઘાગઇ
 છેન્હા સમકાઠિગ કઠામે હન કઠાકાનક અપન પાસ શૈથી હેશન અછી, મથિથિ
 પેટગીક દુગપિાસં આયુગકિ કઠાક દુગપિામે કદમ નાપ્પવ્રાધિ પહિવે કઠાકાન
 સંજૂખીક પેટગીકેં ક્યો આસાગી સં યન્હિ આ વનગીકટા કડ સકૈન છથીા
 હનિક યતિનમે ગ્નામ્પ ખોવનક વ્પથા આ ગાનો ખાતકિ આંતનકિ કનૂમ
 ગાથાક હઇક મેટૈન અછીા સંજૂખી વ્રહ યતિન વગવ્રા મે નૂયનિાપૈન છથીા
 ખકન સોયા સમવગ્થ માગવ્રીય મૂવ્પ આ વ્રાસાવ્રકિનાસં હોઇ, પુનાકટાકિ
 વ્રપિય પન યતિન વગાવ્વ હનિકા સેહે પૂવ પસન્ન છેન્હા ફકટા ગ્નામ્પ
 ખોવનસં અપન સુનઆન આ સ્વપ્નશક્ષિતિ યતિનકાન મેઠાક વ્રાવ્રજૂદો હનિક
 કઠાકટાકિ મે ગાનોવ્રાદી કઠાકાન ખેગા યાન સેહે દેપ્પવા મે આવૈન અછીા ઑઇ
 રંડપિા શ્વારન આન્ટ ઇંડ ક્નાશ્વટ્સ સોસાર્ટી, ઇઠતિ કઠા અકાદમી આદી
 ક્તોકો પુનારેટ ગૈઇની સવમે હનિક કઠાકટાકિ પુનદેશકિ યડ યુકઇ છેન્હા
 હનિક યતિનકેં ફકટા ગવ્રીગ નનહક શૈથી કહઇ ખા સકૈન અછી ખાહિમે
 મૉડન આન્ટ આ પાનમ્પનકિ મથિથિ શૈથી દૂગક ગીક પુનયોગ દેપ્પવામે
 આવૈન અછીા ઉપ્પનિ-મૂસન, સોગ યનિયા, દૌગી-ઓસૌગી, ગદી-ગાઠા, પ્પેન-
 પ્પનહિગ, યન-નોપગી, દૂમન-ટકિઠી, યૌપાઇ-પંયાપ્રાન સગ કછિુ ફકટા કૈનવસ

पन उपस्थिति कऽ दैन छथि संगी। हनिक सौम्यता आ कठक पुनर्
समन्वय हनिक पुनर्सिद्धि मुष्प कागस वुहना जाश अछि।
माए देवकी देवीसँ छे पुनर्मा हनिक उन्ना थकिन्ह जे स्वयं एकटा गृहस्थ
महो छीह मुदा कठ-कौशले गपिस। हुनके सँ ई सुजानी कठ, अनपिन
देनाय आ मथिषि पेटगि वगेनाय सपिषीह। हनिक पतिा सुनी पुनर्मा गानायस
दास वठौँक मे गुनामसेवक छीह। जाय धन हनिक शिक्षा-दीक्षाक गप
अछि नऽ अपन गामेक स्कूलमे पढ़ी आ गामेमे नहि पुनर्सेट सँ गुनैपुएसन
केछेन्ह। ववाह हवीगौआन गवासी आयुगिक यतिनका नवीन्दा दाससँ
भेछेन्ह। दूर पुनरीक माए संगी गृहस्थाश्रम समुहगत अपन कठक
पुनर्मा सिद्धि समन्वय नैह छथि।

वायुकासँ मथिषि पेटगि वगैत आवनिहोह संगीक नंग उवाकानीका
आ संयोजनमे सेहो आव पनविनग देप्पवामे आवैत अछि आव हनिक
आकृति नेप्पाक गहिवरकानगक पुनर्मा होश छैन्ह। पहि ई ठेककठ
शैषिमे काज करैत छीह मुदा ववाहक वाद ठेक-कठसँ पुनर्मा
आयुगिकठ शैषिमे काज करैत छीह। ई वदवा दधिषि एका कछि दिन
वाद नाष्टनीय आयुगिक कठ दीन्धामे महो कठकानक पुनर्माशनी देप्पाक
वाद अयछेन्ह। ओहि पुनर्माशनीमे कठको आयुगिक कठकान संगह काजमे
ठेककठक पुनर्मा छठ, नऽ ई सोयय छीह जे हमहुँ नऽ एकटा ठेककठकान
छीह हमना नऽ मात्र आयुगिकठक कछि वानीकी टा सोयवाक जूनन
अछि ओकन वादे सँ हनिक आयुगिकठक यात्रा सुन होश छैन्ह। हनिक
सग कठकानि वषिप सुनीक जीवन आ हुनक आकांक्षा होश छैन्ह जे
मात्र आकृतिमूठक कठे मे संगव नऽ सकैत अछि गुनामीस जीवन नऽ
नंग-विगा होशे छैक, साधन नै हनिका यत्न नंगसँ कछि वेसी सुनेह छैन्ह।
आर एकटा स्वपुनर्मा कठकानक रूपमे अपन कठ यात्रासँ वेह प्युश
नऽ कहैत छथि, "जाहि कठ महावद्विषयमे हमन गानाकन गहि भेठ आर
ओका छात्र-छात्रा आ शिक्षक ठेकसँ सेहो हमना एकटा कठकानक रूपमे
सम्मान दैन छथि, हमना छे एहिसँ वढि कऽ आन प्युशी की होय।" देशक

छात्राग सभ महागगामे हनिक काण पुनईसति नऽ युक्त अछि आ कोको कछा शक्तिमे हनिका आमंत्रति कएष जा युक्त छैन्ह। हनिक पहिने पुनईसनीसँ काम विकस छाछैन्ह, दोसऽ पुनईसनीक बाद हनिक कछाकृति आयुनिक कछा दीधामे संग्रहति छैन्ह। पुनई आ स्वेच्छागतिक मोडिमे हनिका आ हनिक कछाकेँ पूव जाह गेटै छैन्ह। हनिका गगनमे कछा जीवनक पुनविनिव अछि, तँ हनिक कछि कछाकृतमि साहित्यिक पुनगाव देषष जा सकै अछि। कएष नऽ हनिका कविति आ गटक सेहो पूव पसंद छैन्ह। हनिक सुनआनी कछाकृतमि सव वेसो गुणमीम जीवनशैली पन आयाति होश छष, मुदा आर-काछि ई गानी मग आकांक्षा पन काण कऽ नह छथी। आमुसकृति सहि, अगामिकि आ केदा न गथ सहि केन कविति हनिका पूव पसंद छैन्ह।

कछा हनिका छष आम दनियन्या छष कएष नऽ मथिषिक हन सुनी कछाकान होर छथनि, मुदा ई कहियो ई नहि सोयने नहथि। आगाँ यष ओ स्वयं एकटा कछाकान वगरीह। यँकि हनिक पति सेहो एकटा पुनसद्वि कछाकान छथनि नऽ हनिको मगमे छैन्ह। हनिको कछाक वधिवि शक्तिषा ठेवाक याहि मुदा से संगव नहि नऽ सकछैन्ह। हनिका जगते दुनिया मतिक कोनो आन कौषण कछाकृतमि वगेनाय नहि सिपिपैवै छैक। एकटा कछाकान वगवाक छष नकनिकी शक्तिषाक अछे गिणी यतिन आ सामाजिक-नाजनीतिक स्थितिकि जाणकानी सेहो जाननी होश अछि।

दिविषिसँ पुनकासति होएषष मैथिली नैमासिक पनिकि 'मथिषिगन' छष देष अपन एकटा साक्षात्कान मे पुछष पुनस्र "अहँकेँ कछाकाने वगवाक मग कएष मेष?" केन उत्तर मे कहने छषिह, "जेना मथिषिक आम सुनीगाम वविह आ पुन-न्यौहानक अवसन पन काण, कपड़ा आ दीवान पन थोड़-वहुन यतिनिकानी कनै छथि। नहिना हमहुँ कनै नहि। मुदा कहियो हम सोयने नहि नहि। जे हमहुँ एक दिन कछाकान वगव, कएष नऽ नपन हमना ई वाग नजि वूह छष जे सहन मे गामक एहि कछाकेँ ठेक एठेक पसनि कनै छथि आ कछाकान ठेकनिकि एठेक सम्मान आ पाई देष जाश छैन्ह। सुनआन मे हम

कागजे पन जणंगसँ छोट-छोट पेटगि वनावी नाहिपन आयथ पेसूटथ ७५ कऽ ओकना श्रुतिश्रुति टय दैत रही। जणंग आ आयथ पेसूटथकें वाद हमना ऐक्येथकि नंगसँ कैववास पन काम कनवाक मन भेथ। मुदा हम छोटे आकान मे वेसी पेटगि वनौछुं। मातृ एकटा पैघ आकानक वनौछुं जेकना पहिठि एकथ पुनदृशनी मे पुनदृशनी कएछुं। कछु पेटगि वीकायथ जाहिमे ओ वडका पेटगि सेहो छथ, ओहिसँ हमन आत्मवसिवास वढथ। तकर वाद हम पैघ-पैघ आकान पेटगि वनेवाय सुनू कऽ देछुं। हमन पति हमना सदपिन सहयोग केथेन्ह आ उत्साह वढौथेन्ह। दृष्टिक पुथथ माहौल हमन कथानक अग्रनियुक्तिं नव दसिा देथक।"

एहिमे साक्षात्कानमे "आयुगकि कथक पुनर्गिकोना आकान्पति भेथुं?" केन जवाव दैत कहथेन्ह, "यूँका हमन व्रिवाह एकटा आयुगकि कथकानसँ भेथ तै व्रिवाहक वाद हमना वेसी भेट-घाँट कथकाने ठेकनसँ भेथ। एतेक धनी जे धूमनाई-श्रुतिनाश्रुति वेसी कथदीन्ये आ कथ पुनदृशनीमे भेथ। ओहि समय नाष्टनीय आयुगकि कथ संग्रहालय मे गानगीय महिषि कथकान सगहक एकटा पुनदृशनी देयवाक अवसर भेटथ ओकने वाद हम आयुगकि कथक पुनर्गिक आकान्पति भेथुं। हम सोयथुं कएक गज भिथिथिक ठेक कथकें आयुगकि कथसँ जोडथ जाए। तकर वाद हमन कथमे एकटा गप्पान आवां भेथ। जप्पन हमन पेटगि नाष्टनीय आयुगकि कथ संग्रहालय थै ययनति भेथ जप्पन कथको कथकान कहथार जे आव अहुं आयुगकि कथकान भऽ गेथुं।"

अपन सवथ पक्षमे, नव-नव कथेनक ठेक सवसँ गप्प केनाए हनिका गीक ठाँगन छैन्ह, तऽ स्त्रीक शोषण वा स्त्रीक पुनर्पसंद नहि छैन्ह। अपन पेटगि मे सेहो एहि विषयकें ओ पुनमुपनासँ यतिनति कथैत छथी साहित्य आ नाटक पूव पसंद छैन्ह जकर उपयोग ओ अपन कथकानिक पान-यतिनास कनवामे कथैत छथी तऽ दोसर दसि दृष्टि पक्षमे हुनका कजोट छैन्ह जे, हमना अंग्रेजी नहि आवैत अछि आ कथ कथेनमे वेसी कतिव, सेमीगान आ पनीद्वानक वान्ता अंग्रेजी मे हेवाक कानसे दिकिना होश अछि। अपन पेटगिक वाने मे वनावैत कहैत छथी, "पाँठ जोगवां आ मातृक सैगाथक

नंग योपना हमना वड्ड पसनि अछि, हमन पेटगिकें देप्पवासँ अहाँकेँ ई वुहा जायन। हमन सुनुआगी पुनईसगीक यतिन सवमे मथिषिक ग्नाम्य जीवक सुगद-हठकी छठ, गहमे वेसी ग्नामीस महिषि सगहक दैगिक कृषिकोप पन आधानति यतिनास छठ। ओकन वाद सूनी मगक संवेदना आ आकांक्षाक यतिनास केनाए सुनू कएहुँ मुदा पुनीक आ वम्व गामक स्मृतियि पन आधानति छठ। हाँकि अपन यतिनक संयोजन मे हम कोससि कतैन छी जे मधुवगी पेटगिक पुसवू वाँयठ नहय, जेगा- पूना सगह पन अठकानिकि वेठ वूटा, जेपांकन आ छोट-छोट आकान सवकेँ सजावट जाकाँ उपयोग कतैन छी। वेसी यतिनाकान सूनी देहक सुंदरताक यतिनास कतैन छथी मुदा, हम एकटा सूनी छी तै हमन कोससि नहै अछि जे सूनीक स्नान, ओकन पुनम, ओकन आकांक्षा आ ओकन मोगक गावना आदिकें सेहे यतिनाति कएठ जाए। हमन कठकटानिपिठि गजान मे ठोककठ जाकाँ आगास दैत छै मुदा, ओकन संयोजन, नंग उगावयकेँ तनीका आ वषिय समकाषिग होश छैक। वएह कानास छैक जे हम समकाषिग कठक सव मुहावना इस्तेमाल कतैन छी प्यासकन उगान आयुगकितावाह आ गानीवादी कठकटानिकि। एतेक यतिजे उजिठिठ कठ मे सेहे वड्ड संजावना देप्पनिहठ छी।"

मथिषि पेटगि आ आयुगकि कठमे सुनक कतैन कहैत छथी, "देप्पवा मे जून अठग ठौग छै, मुदा सव कठ एक्के नंगक छैक। हमना जगतिवे आयुगकि कठ आ ठोक कठमे वेसी सुनक गह छैक प्याषि मायप्रमक सुनक छैक। आयुगकि कठ श्वाश्न आनूटक व्रकिसति नूप कहठ जा सकैत अछी वेसी ठोक प्रथाथवादी शैषि मानकेँ श्वाश्न आनूट वूहैत छथनि आ हुनका कठिग वूहना पड़ैत छैन्ह आ कछि गोटे आयुगकि कठकेँ उटपटांग काज वूहैत छथी आयुगकि पेटगि मे अमूनताना आगवक पुन्यासमे एक नंगमे कठको नंग आ आकानकेँ उपन आकान देप्पवा मे भेटत। ओगा आयुगकि कठक वेसी पुन्योग शैषि आ मायप्रमक भेट छैक। महासुंदरी देवीकेँ जेपांकन देप्पकि कठको कठकान पकिासोसँ तुठना कनय ठौग छथी कोनो कठकानकेँ अपन शैषि छैन्ह आ गव वषिय पन काजो कऽ नहठ छथी प्याषि मायप्रमक सुनक भेठासँ

कोना नहि हुनका आयुर्गकि कठिका१ कहवैन्ह। नहउ वाग समकाषीगताक ाऽ
मथिषि पेटगिमे आव कठोको कठिका१ दहेण, आतंकवाए, सूती-पुनुप्यक संवंध,
गूनास हत्या, पुन्यावनास सग आणुक समसामग्रिक व्रिषियसँ जुड़ै गव सोय
आ गव संयोजनमे काण कऽ नहउ छथी समकाषीग कठिकानो सव एहेने व्रिषिय
प१ काण कतै छथी।"

मथिषि कठिक मथिषिमे स्थिति प१ ओ कहै छथी, "कहउ जाइ छैक जे
संपूनास मथिषिक जग-जगमे ई कठि १यठ-वसठ छैक। मुदा हमना देप्पवामे
एहेन वाग नहि आयल। मात्र मधुवनी शहरकें गणदीकवठा गाम सव
व्यावसायिक नूपसँ सखठ मेठिक कामसँ पूना गामक ठेक यतिनिकानीमे ठागठ
छथी आग गाम सवकें वेसी पुन्या१-पुनसा१ नहि मेठै। तै ओ ठेकनि मात्र
पावगनिहिन यनीएहिकठिकें सीमति केने छथी। शहरकें दसि वेसी आकृषास
मेठिक कामस आवक ठेक एहिकठिकें नहि सोप्य याहै छथी। शहरमे जे
मैथिलि प१वा१ नहै छथी हुनको डूनाइ गाममे मथिषि पेटगि नहि मेठल, एतवै
नहि गामो-घरमे आव देवाठ प१ सोननी मेठ जाएत, मुदा मथिषि पेटगि नहि
मेठल। एप्यग यनीएहिकठिक ठेठ संग्रहालयक मथिषि आ देशक आग भागमे
कमी अछी। दोसर कामस अछि मथिषि कठिमे नोणगा१क संभावना, संपूनास
मथिषि ाऽ नहि मुदा कछि गाममे अवस्थ ई कठि नोणगा१क पुनप्य साधन
वर्गिठ अछी। कोनो कठिकें नोणगा१ वगेवाक ठेठ कठिकानकें ठागा१ काण
क१य पड़ै छैन्ह आ अपनकें कठिकान जकां पुन्या१ति सेहो क१ए पड़ै
छैन्ह, एतवै नहि ओक१ वकिनी ठेठ सेहो पुन्या१गशीठ नहय पड़ै छैन्ह।"

संगू जी मथिषि पेटगिक व्यवसायीकामस प१ अपन व्रिया१ नायैत एकटा
संगोषी मे कहने छथिह जे, "व्यवसायीकामस शवदकें ठेक गठ गण१सँ
व्यवहार कतै छथी मुदा हमन अपन व्रिया१ जे कोनो कठिक व्रिकीसक ठेठ
व्यवसायीकामस जानूनी छैक। व्यवसायीकामसक ठाग छै, ाऽ कछि हानि सेहो
छै। ठाग ई मेठ जे मथिषिक सूतीगाम आ१थकि नूपसँ सवठ मेठिह वनि
पढ़वे-ठपिठे सूतीगाम देश-वदेशि घुमि एठिह। हानि ई मेठ जे आव वेसी
कठिकान मौठिक काण नहिकऽ कऽ नकठ कतै छथी वेसी य१यति कठिकान

छेकनी दोसनासँ काण कनावय उगावह। कहि कठकाक नीक स्थिति छैन्ह
जगिका संपत्क छैन्ह, मुदा वेसी कठकाक एकना मजदूनीसँ नीक बुद्धि काण
कऽ नहै छथि आ कठकाक वग सम्भागो भेटैत छैन्ह।"

एकटा पनियन्यामे, एहि कृषेन मे आवय छै आवश्यक पुनर्शिक्षण आ
संस्थागत वृषियमे अपन वृत्तिन नापैत कहने छथिह, "अपन समाजमे सगहक
भाए-वहने एहि कठक पुनर्शिक्षण दैत छथिनि। मुदा, एम्पन यनी मधुवनी
स्थिति मथिथि आनूट इन्स्टीट्यूट नीक कठ संस्थागत मागठ जाश छैक।
कएक नऽ ओनय नीक शिक्षक, कठक सामग्री आ नीक कठकाक यतिन
पनीदवाक व्यवस्था सेहो छैक। सपिवा छै कोनो नीक कठकाकसँ सपि
सकय छी मुदा सनकानी नीकनी छै कठ महाविद्यालयमे शिक्षा आवश्यक
अछी ओनय पाँय साठक डिग्रीक संग वेसी कठकाक ज्ञान ठेवाक मौका
भेटैत अछी ज्ञानमे सभ नाज्यमे नऽ बै मुदा पटना, वगानस, छपरा, मुंबई,
वडोदा, शांतिनिकेतन आदिमे एकन नीक पढ़ाई मागठ जाश अछी।"

मैथिली-बोझपुनी अकादमी, दक्षिण तमिलनाडु पत्रिका 'पनछिग' के छै
अपन साक्षात्कारमे "अपनेक यतिनमे वेस यद्यपि गंगक पुनर्गठन देप्पवामे
अवैत अछी अहाँ अपन कठक अन्तर्वस्तुक संबंधमे वावयौक?" पुनर्गठन
उत्तर दैत कहैन्ह, "हमन कठकाक स्त्रीक नृमति वेस सकानात्मक
नहैत अछी कहि दैत पहिने स्त्री-मनोदश आ गुणमीमा स्त्रीक स्त्रीय
नृमति पन एकटा पुनर्गठन आयोजन कयने छथिह। हमन माग्यना अछिजे
जौ पुनर्गठन आर्थिक जमिनेवागीक गतिवाह कएत अछि नऽ स्त्री सेहो
सामाजिक जमिनेवागी गतिवाह कएवामे सहयोग दैत छथी। गाम-घनक
अशिक्षित स्त्रीगण सेहो शहरी कामकाजी स्त्री छेकनी जकाँ आर्थिक
सहयोग दैत छथी एकन अनधिकृत हम स्त्री-पुनर्गठन संबंधक जटिलतासँ सेहो
अपन यतिनक वृषिय वगैरे छी। आनम्न नहैहम पाँपनकि अपिग आ
कोहवनी आदि १५नासँ कयथिह मुदा एम्पन यनी हम कोको स्त्रीपुनर्गठन
(सीनीज) पन काण कयथिह अछि हमन पहिने पुनर्गठन गुणमीमा जीवनक
कृतिया-कठप पन केन्द्रीति छै। हमन 'मडि गारट टॉक' यतिन वेस

यन्तीति १६०। जकना जन्मगीक एकटा कथा संग्रहाहक प्यनीदगे छथि। छठम पुनर्दृशनीमे हम 'श्वेत-श्याम यन्त्रिक पुनर्दृशनी' ठाँगे छथि। आर-काठ्हा ग्नामीस दृश्य पन आधानति यन्त्रिक वग १६० छी। कुठ मीठा कऽ अहाँ कहि सकैत छी जे हमन कथा ग्नामीस जीवनक सकानात्मक पक्षकें यन्त्रिक कथैत अछि, कानस जीवनक आन्तरिकी वीस साठ हम गामे मे १६०हुँ जकन पुनराव आर यन्त्रिक कान पन अछी अहाँ याहिनऽ हमन कथाकें 'प्राद' मे वसैत गाम' कहि सकैत छी।

हम मूला: आकृष्टान्तरिक यन्त्रिके वगवैत छी। यन्त्रिक वगवैतसँ पहिने जेष्ठांकक नूपमे कोनो दृश्य वा आकृष्टिकी नयना कथैत छी। श्वेत कथेको जेष्ठांकक संयोजनसँ संपूर्ण यन्त्रिक कथपना कथैत छी। कछि कथा मन्मज्ज ओकना हमन यन्त्रिकें देखि कऽ जगिमासा पुनर्दृश्य कथैत जे कैमना सँ सेहो एतेक दूर अथवा एतेक निकटतम यन्त्रिक एक संगे नहि होकथ जाल सकैत अछिनऽ अपनैक वृत्त-प्राप्ति की होश अछी हम हुनका वगवैत जे दनअसठ हम कथाक दृश्यकें एक संगे कथामे जोड़ैत छी। वस प्राप्ताक कथामे देखैत जेठ दृश्य हमन वृत्त-प्राप्ति होश अछी एष्य वगवैत हम जगिमा जेष्ठांक, एकेकिके व मन्त्रिकी माध्यम सवसँ कान कथैत मात्त आर कथामे कान कथ वगवैत अछी अनुमान जग सकैत अछि जे मन्त्रिक ओक-कथा से हमन आन्तरिकी जगवैत अछि हमन यन्त्रिके मागवाकृष्टिकी आँखा आ मुष्मन्तठ वगवैत मन्त्रिकी पेटगिसँ पुनरावति अछी यडि, पशु श्रृंखला हम मन्त्रिकी यन्त्रिककाक मूठ सुवसुपही जकाँ वगवैत छी। हँ, जग वगवैत जग व संयोजन आयुगिक कथासँ पुनरावति अछी वषिक हुकाव संपूर्ण पुनराव संस्कारा दिसि अछी कोनो कथा संपदाक संनक्षम वृत्तक सान पन नहि होश छैक। वृत्तकानि सान पन अहाँ अपन कथाकें गप्पान आ ओकना वकिसि कथ नहियौ नऽ नक्षिकी नूपसँ कथैत वषिक कथा संपदा समृद्ध होक आ ओकन वकिस सवः होक।"

नऽ एकटा आन पुनर्दृश, "समकाठिन माननीय कथा पुनर्दृश्य संवधमे अपनै कछि कहय याहव? अहाँक कथा-नयना समकाठिन कथा पुनर्दृश्यमे कोन नहि

हस्तक्षेपऽ १६७ अर्था?" के१ पुनर्निर्माण मे कहणे छीह, "समकाषिण पुनर्निर्माण मे गान्धीय कथा संपूर्ण विश्वक के१ वटि वगैर जा १६७ अर्था विश्वक सवसँ पैघ गीठमीमे गान्धीय कथा आ पान्थिक कथाक गीठमी जो-शो१ सँ ऋ१ १६७ अर्था दुनिया मनीमे गान्धीय कथाक पुनर्निर्माणक वढे अर्था दुनियाक सवसँ पैघ संग्रहमे मथिआ कथा अओ१ पुनर्वासा कषेत्क कथाकान ओकनके कथाकृति संग्रहनि कए जा १६७ अर्था हम१ कथा समकाषिण कथा पुनर्निर्माणमे हस्तक्षेप के१ अर्था, एहि संवयमे हम की कहू, ई १८१ कथा समीक्षक वगैर। मुदा हम१ पहिने अपन काणक महत्त्व नयन वुहवा मे आयब, नयन कथाकृति गेसन गैठनी मॉन्डन आनट द्वा१ा पनीद गे१। कछि ब्रिटिशी कथा समीक्षक ओकन सेहो हम१ कथाकृति पनीदैनह। मायवी पायेय, पठिपोय पानवा सन कोको महिआ कथाकान जो स्वयं प्रशिक्षिणी छथि, हम१ कथाकृति सँ पुनर्मा गेटेन छैनह से जाँचैनह। हम१ कछि गेयांकन हंस आ समकाषिण गान्धीय साहित्य सन साहित्यक पान्थि मे प्रकाशनि गे१ अर्था।"

आणक कथाक ट्रेड के१ वाजे मे पुछा प१ कहै छथि जो हम१ वुहने आ-काउन्ट ११६८ कथाक ट्रेड छैक - ओटो गियरिज्म आ दोस१ इंस्ट्रॉक्शन कथा। एकटाक काम वाजान छैक १८१ दोस१क वाजान मे अपनाकेँ स्थापनि क१व। समकाषिण कथाक दुनिया मे वाजान हवी छैक। जो कथाकानक कृति जा१वा मे विक्रि छैक ओ ओक पैघ कथाकान भाग१ जा१व छैक। हाँकि हम वाजानवादेकेँ नीक मानै छी, कएक १८१ जाँ हम१ कथाकृति नहि विक्रि नहै १८१ मनीसिक हम अपन छटा एक१ पुनर्निर्माण नहि क१ पवतिहूँ।

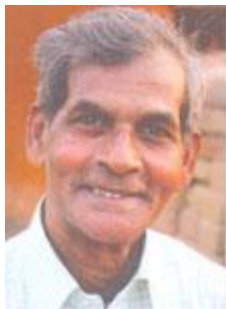
अयन कछि दनि पहिने सोस१ मडिया प१ हनिक कथाकृति वेस य१यामे १६७, काम छ१ हनिक कथाकृति अस्वी१ वा कथाकृति अस्वी१। एहि मादे हम१ एवे कहव अर्था जो कोनो कथाकानक कथाकृति वा य१ना प१ अपन व१या१ नयनाय आनि उ१म व१य अर्था, मुदा अपन व१या१ नयन सँ पुन ओहि व१यक जा१कान गे१य आ आ१य अर्था जा१ व१य मे जा१न गै अर्था ओक१ जा१न आ जा१कानी ओक वादे अपन व१या१ नयन

रज्जोगोत्रनिष्ठ यगन्त दास- कामसूत्र के वगि कोनो यगि सैथि नहि छैक-
ठेककठा के साक्षात् वशिष्ठवर्द्धिप्राप्य गुमनाम गायक कृष्ण कुमार कश्यप
(आ शशविवाँ)



गोत्रनिष्ठ यगन्त दास

कामसूत्र के वगि कोनो यगि सैथि नहि छैक- ठेककठा के साक्षात्
वशिष्ठवर्द्धिप्राप्य गुमनाम गायक कृष्ण कुमार कश्यप (आ शशविवाँ)





मथिषि ठेककठ आन संस्कृती केन महान केन्द्री थीक। मुदा एकना वैश्वकिक पठप अनवा मे कृष्ण कुमान कश्यप के वशिष्ठ योगदान छन्हि ओना न ई एकटा समाज सुधानक, गानो उन्धान केन संस्कृती हूँ छवह, मुदा व्रिहद सेहो हनिक संग ठागठ रहै। कश्यप जी आई कोनो पनयिक मोहना नह छथी मथिषिक संस्कृति विशेष क कठ के संदन्त मे हनिक अवदान के कोई वसिनिह सिक्कै आओन नह वसिनिवाक याहि। एकन वावजूद समाज आन समाधेयक कश्यप जीक संग ग्याप नह केँगी हनिक मूल्यांकन उयति ढंग सं नह कएठेठ। हनिका पुनर्निर्माणक दृष्टिकोस वेस कओन रहैक। ओना न मथिषि कठ संस्कृति अपनो समाधेयनाक दृष्टि सं वंयति जकां अछी मुदा सोसठ मोडिया केन युग मे यदा-कदा नीक-वेजाप के वसिन्स होमप ठागठ अछी हांकि कश्यप जी केँ कामकाज केन आधेयना न गए सकैछ, मुदा नाहि स्तानक कोनो अथॉरिटी नहि बुहना जाइछ, जे हनिक उयति आकठन कए सकैथ। समाजक वासो कश्यप जी केँ कोक पैघ योगदान छन्हि से बुहनाई अत्यंत आवश्यक अछी मुदा से नह, हनिक वनाओ यतिनिकानी मे वेस सहजना सं अस्थिठनाक अन्वेषण क ठेठ जाइछ। मुदा एवे वा नह छैक। पहिठ वा न जे कठ नसवहिन नह गए सकैछ।

माननीय मागस मे नवनसक अवधानमा छैक। नाहि कोनो कठकान नस सं वनिन गए नह सकैछ। दोस न वा न पुन्येक कठकान आन कथाकान के अपन शैषि होश छैक आ तेक न पह्यान समाज के कनप पड़ै।

वाणी के काम में एक वेन हम कश्यप जी के कथानि आपत्ताजिनक पेटगि पन पुनसूत्र केधियिन्हानि हुनक कहनाम नहैण जे वहुपन के जननव मे मथिथि यतिन नप्पन एठे नप्पन एकन वाजान सुनू भेठ नहैक। याहे कोनो जाति के मथिथि एकना वगवथा होथी याहे कायस्थ समाज मे एकन वेसी यठन छैक न सवके वुहवा मे नप्पने एठैक नप्पन ३०-३५ वनप्प पहिने वाजान मे समाज जेठैक। एकन मतभव ई नहि छैक जे एकन पनम्पना मे कामसूत्र नहि छैक। कामसूत्र के वनि कोनो यतिन सैथि नहि छैक। हुनक कहनाम नहैण जे पहिने कोहवन घन मे जाहिगिम कोठि नप्पठ नहए जाहिगिम एकटा पान्टीशन होश नहैक। सुनै छथि जे शवद अछि कोनो-प्योन्ही। ओ प्योन्ही कोहवन घनक एकटा गुप्त भाग छैक। जाहिगिम सवहक आवाजाहि नहि नहैण नहैक तेकने प्योन्ही कहए जाएत नहैक। जाहि प्योन्ही मे नवनस कामदेवक यतिन नहैण नहैक। न कामसूत्र जे छैक जाहि सं ग्रंथनि कोनो कठि सैथि नहि छैक। आओन नप्पन मथिथि यतिन के वाजानीकनाम जेठैक न एकना वाजान मे अगर्थनि के? गंगा देवी, सोना देवी, जगदम्बा देवी। ओ सव वृद्ध सत्नी, वधिया सत्नी याहे जाहि एन मे जे स्त्रीनामक गणन वेसी आओन दोसन गीण के ग्रन्थ-वन्य वेसी नहिकए सकैत छथनि।

कश्यप जी के नाम सं ब्रह्मिह के ब्रह्मिहवाह गढ़ कए जेठ से उथनि नहि जाहि मथिथि यतिनकठि के ओ आजीविका आओन उपयोगिवाह सं जोड़वाक पुन्यास केठैथ ओकना गणनदाण नहि कए जे सकैछ। हनिक कृतान्तिव मे पुनरीक आन वनिव के मायमे ननिगीकना आन आत्मवशिवास सं यतिनाम साहस के वात छैक। कश्यप जी के छप्पन वा यतिनकानी पन पुनसूत्र उठाओ ज्ञान अछि, मुदा ओ समाजक सय छैक। आन सत्प केन पुनकटीकनाम केनार कोनो कठिकानक अधिकार छैक। जाहि ब्रिषि पन ब्राह्म ब्रह्मिह नए सकैछ, मुदा एहि मे केवठ अश्लीलता देयना कोनो कठिकान के संग अग्र्याय छैक। जाहि कश्यप जी के काम के अश्लीलताक संग्मा एए प्यानि नहि कए जे सकैछ। धर्मादिक वात छैक न काठिदास केन काठजयी नयना कुमान संगव आओन काशीगाथ सहि के "काशी का अस्सी" के प्यानि कए जे सकैछ की?

कश्यप जी जाहि पृष्ठभूमि सं छथि, ताहि मे ई वड साहसक वात छै। जाहि अभावक जगिगी (श्वीस जमा रहि कनवाक कानासे सूकूँ सं गकिर्छि ऐठ गेथ) सं गुणगुणक वादो गणिो स्वाथ के छोड़ि समाज के ढो ऐठपनि ओ स्वयं मे एकटा उपन्यास छथि हुनक मोग मे ई एकदम स्पष्ट रहनि जे नानी उत्थागक आ ओकरा स्वावर्धे वगेवाक काज कनव। ओ गाम गाम घुमि मथिछि पेटगि के केहन स्थापति कए महिछि सव के जोड़ि हुनका सव के स्वावर्धे वगैछनि पेटगि के महज सजावटी वस्तु केन सोय सं वाहन गकिर्छि क ओकरा उपयोगिताक सामग्री के रूप मे माग्यता दियिाव केन प्रयोग हनिके हेन छनि आन ई प्रयोग मथिछि केन वहुन परिवान के संवध वनठ। एहि सय के क्यो नकानि रहि सकैछ। वाद मे ओ आत्मकथा छपिछि वासमती जाहि के अग्रपुत्र केछा पन ओकक गृकुटी नहि सकैछ मुदा लोक वेवाकी आन ईमानदानी सं अपन सय छपिनाई वड हनिमा के वात छैक।

ओकरागतिक समाज मे आठेयगा केन अर्थिकी न सवके छैक, मुदा आठेयगा आओन आनोप मे शुनक होश छैक। एतवा यनिह, कश्यप जी जाहि पह्याग आओन सम्मान के हकदान छवाह, ओ हुनका रहि गेटछनि मुदा मोगक कोनो कोस मे टोस नहवे कनैत छैक। सौनाड मे पहिछि मथिछि ओक कछा वसिष्ठद्विप्राधक स्थापना कएठ गेछैक। वसिष्ठद्विप्राध न वनि गेठ, मुदा सवसं पैघ संकट नहै जे एकन पाठ्यक्रम की होयत आओन के वगेता? न कश्यप जी के योग्यता आओन अनुभव के देखैत ई काज हनिके सुपुन कएठ गेठ। एकन अठावा गनीव वय्या या गपिमंगनी सवहक वय्या के पढ़ेगाई हनिक उक्ष्म नहनि ताहि मे सेहे वनीयक सामना कनऽ पड़छनि कुठ मथिकऽ कहठ जा सकैछ जे महिछि, दठि, पछिऽ आन वंर्याति के उत्थागक ठेठ सदपिग अथक प्रयास कनैत दुनिया सं वंदि गए गेठ।

^(आ शशिवाठ)- सम्पादक द्वाभा जोड़ठ गेठ। ऐ आठेयमे जाऽ जाऽ कश्यप जीक नाम अछि ओतऽ आ शशिवाठ सेहे पढ़ठ जाय, कानास कश्यप

ਪ੍ਰੀਤ ਪਾਇਆ ਕੌਨੋ ਧਰਮਿ ਏਹੈ ਨੈ ਅਥਾਹਿ ਮਾਨੁ ਕਸ਼ਧਮੁ ਪ੍ਰੀ ਅ ਸਸਵਿਥਾ
ਸੰਪ੍ਰਕਾ ਨੂਪੈ ਨੈ ਵਨੇਭਗੀ- ਸਮੁਪਾਦਕ

શ્રવણ મંત્રવચ્ચે દત્તિની ઇચ્છાના ઉદ્ભવદિશાવાના ઇચ્છોમ પન પડાઉં ।

रुद्रवीरूड कृमान दास- पत्रिका सहयोग सवसऽ ७७७७



ਮੀਰਜੀ ਕੁਮਾਰ ਦਾਸ

ਪਾਵਿਅਕ ਸੰਘੋਗ ਸਵਸਤ ਪਤ੍ਰੀ

कहवी छैक “पो हऱ सशुठ पुनुष के पाछू कोनो नै कोनो सऱ्गी के हाथ छैक” एही
 कथन स हम सहमत छी मुदा स्थिति ऐक वपिनीत सेहे देखवा मे आवाजिहठ
 अछिठ संजू के कहागी हमना जीवग मे हमन विग्राहक छै यऱ्या सो सुनू होश
 अछिठ हमन वावूजी कमनोषी गामक एकटा कथा ाइगठ केठगी तेकन मूठ
 आयाऱ छठ कनया यतिन ठपैठ छठपनि ठ हमनो सेहना छठ पो ठडकी

यतिन वगवैत होस्थ गहति कम स कम यतिनकान स घृमा गहिकैत होस्थ कयिक १ एमगहु अपन समाण मे यतिनकान के ठोक पागठ वुहैत छथि ७ दुवनिगमन के वाद हमन मौसी संजु दसि नाकिक हमना कहैवह जे अपने जाका पागठ गै वना दहिन ७ जहांतक पागठपन आ जूगन के गप्प छै

१ आई हुनका मे अपन कथाक ठेठ जूगन देखिकि मोग हनषति होश अछि ७ आई हमना सुशी होश अछि जायैत क्यो कथा देखिक वा यतिनकान हनिका स गेट घाँट कनवा ठेठ अवैत छथि आ पुछैत छथि यतिनकान संजु दास एतय नहैत छथि हुनका स गेट कनवाक अछि ७ हमना जगतिये मातृ पढ़ाये मे गह वरुकि यतिन, अगनिप्र, संगीत, गृह्य वा साहित्य कोनो वधि मे सश्रुताक ठेठ जूगन मेगाइ जूनी छै ७ हमना मोग अछि जे प्रथम मठिन मे हम हनिका सुकैयवक पेगसवि आ कथन वॉक्स गेट केने नहि कोनो गहना जेवन गह ७

वविह के कछि दिन वाद संजु हमना कहैवैत हमनो मोग होश अछि जे हमहू आनूट काठेज मे पढा कथा के वधिविग सकिषा छै ७ हम कहैवैत तैयानी कनू, टेस्ट दियो एडमसिन गय जाइत अछि १ पटने मे नहू, डेना जंटा १ अछि ७ टेस्ट देठगि भुदा एडमसिन जाकन तैयानी गह छैवैत एडमसिन गह मेठेठ ७ हम कहैवैत जे अहं दुयो गह होउ कथाकान वगवा ठेठ मातृ जूगन आ ठगातान प्रैक्टिस याहि ७ दुगिया गन मे आ एहि दिस मे कठोको कथाकान आनूट काठेज स गह छथि ७ लोक पदमश्री सम्मान स सम्मानति मथिछि पेटगि के कथाकान सब कोनो आनूट काठेज मे थोड़े ने पढ़ने छथि ७

संजु दियि एहिह तेकन वाद स्थिति वदठठ ७ हम पटना आनूट काठेज स फ्राइज आनूट के कोनस केठहुँ आ एकटा अप्पवाक कथा वनिग मे गौकनी जाँइत केठहुँ ७ तयन हम गोपडा मे नहैत नहि ७ हमन जातेक मतिगाम छथि नाहि वेसी आयुगकि कथाकान छथि ७ घन मे वैसठ छोट छोट पेटगि वगवैथ आ मतिगाम के देखवैथ ७ हमना घन मे वेसी आयुगकि कथा पन यन्या होश छठ ७ गहु गहु हनिको आयुगकि कथा मे नूया छैत देखहुँ ७ मॉडर्न आनूट

जैठनी मे एकटा गानगीय समकालीन महिषी कथाकालक पुनर्दृशनी देय्यवाक
 वाद ई गन्धर्व केठनीजे आव हम आयुगकि कथा सैषी सीप्यव आ ओहि सैषी मे
 काण कनव व चीने चीने कन्य उगविह आ पुनर्दृशनी सव मे पडवय
 उगविह व मतिन लोकना कहैथेन जे नीक काण कनैग छथनि अहाँ हनिकन एकव
 पुनर्दृशनी आयोजनि कनू व दुनू गोटे व्रियान केठहुँ आ हनिक पहिब पुनर्दृशनी
 नसिष्ठक भेटवाक कामस ग्रीनछेन वैक के यामक्यपुनी शाप्या मे उगाओव
 जेठ व ओगय पुनसंशा न पूव भेटनी मुदा एकहु न पेटगि वकिव नहि मुदा हम
 दुनू गोटे गनास नहि भेटहुँ व एक साठ नक कछि आन पेटगि केविह जाहि मे
 एकटा वडका कैगवास सेह छैथेन व सवटा पेटगि के दोस पुनर्दृशनी मंडी
 हँउस सथनि नवीन गवग वगति कथा अकादमकि जैठनी मे आयोजनि
 जेठ व एहि पुनर्दृशनी मे पहिब दनि हटिसाग टास्मस के गंगीन पेन मे
 हनिकन पेटगि छपव आ साँह नक मे वडका कैगवास वग पेटगि वकि
 जेठ व कोनो कथाकालक जेठ ओकन पेटगि वकि जाए एहि स वडका पुशी आन
 की हेतैक वगेकन वाद हनिका मे हम अद्भुत उत्साह देय्यहुँ व आई
 यनी कतेको पुनसूकन भेटथेन, कतेको पुनर्दृशनी आ कथा शिवनि मे गगा छेने
 हेतैह मुदा पहिब पेटगि के वकिगाई जीवग मे वहुन महत्पूना होश छैक व आई
 अपन सन-कुटुंब गैहल आ सासुनक लोक गन्व स हनिका स भेट कनैग छथनि
 ओटो प्यियैग छथनि व हमना यद् अछि जाहिया पहिब वेन ई टेवीवगिन के
 समायान मे आयव नैथ जेकना देय्यकि हनिक मां पुस गय जेठ नैथनि व हम
 दुनू गोटे सेहो क्षम नहि विसनी सकैग छी जाहिया हनिका वलिन सनकालक
 वनिष्ठ महिषी कथाकाल सम्मान भेटथेन हमन वावूजी आ मां दुनू गोटे ओहि
 कान्यकन मे जेवाक जेठ उत्साहनि नैथ वसम

एक न अपन समाज मे कथा, गंगमंथ, साहित्य, संगीत आ गृह्य के सवस
 अधवाह काण वुहव जाश छैक एहि वषिय पन यन्यो केगाइ सेहो अधवाह वाग
 अछि व हमन व्रियान स हन सूनी मे कोनो ने कोनो पुनगि। अवस्थ होश छैक
 आ हुनको मे वास होश छनी जे हमना मौका भेटैग न हमहू कछि कनिहुँ
 मुदा अपन समाज मे आयो यनी हुनकन पनगि आ पानि स सहयोग नै

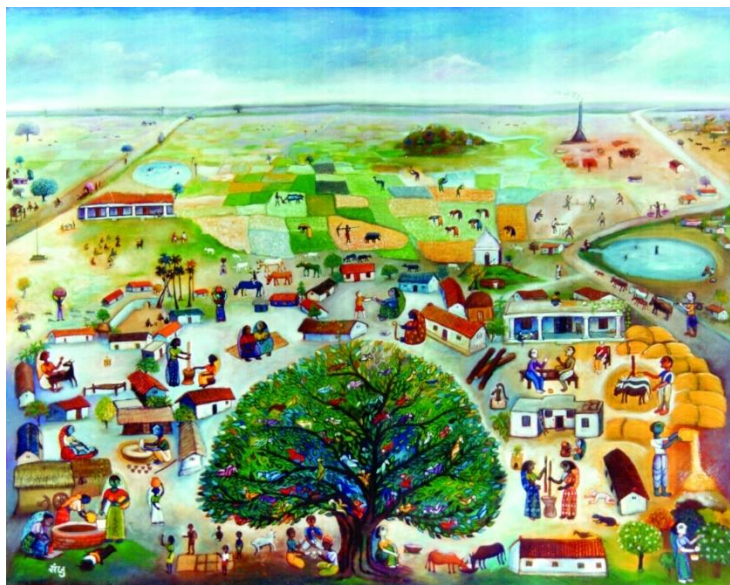
भेटैत छगिह हाथ मे हँदौ आउटुक् पत्नीकि के पूना अंक सुनी देह वशिष्ठांक
छपठ छठ नाह मे सँपुके कठोको जेप्यांकन छपठइग ठ पूना अंक श्वेसवुक पन
शेयन केठगि कछि ठोक ठप्पिठाह जे जागि बुहकि सँपु यन्या मे एवाक ठेठ
अश्विठ यतिन वनवैत छथिठ एम्हन कछि दगि पहिने २००८ के भैथिठि
पत्नीकि अंकि मे छपठ एकटा जेप्यांकन पन पूव यन्या भेठ ठ कछि गोटे
ठप्पिठाह जे सँपु दास आ कृष्ण कुमान कश्यप दुनू भथिठि कठा मे
अश्विठना पसाइ १६७ छथिठ कछि गोटे ठप्पिठइग जे मातृन यन्या मे एवाक
ठेठ एहिनिहक यतिन वनवैत छथिठ हम सँपु के एक्के न गप्प कहैत छयिग
जे ठोक पकिासो आ श्वांससि ग्युटन सूजा के कठाकृतिदिप्पते न पना गै की
कहो ठ गाना के सवस पुनपिठिकि महिठि कठाका १ अमृता शेगठि अपन
सेठ्ठ ग्युड वनौने छथि भैथिठि समाज के सेहो देप्पवाक याही जे दठिठि मे
नाष्टनीय आयुगकि कठा दीन्हा मे संग्रहति अछिठ

-१बीगई १ कुमान दास, मो ८८११७१२३८८

अपन भंगव्ये दठिनीठिसनाउडवदिहाजमाठियोन पन पठाउ।

र०संपू दासक कछु वीछथ कथकृति

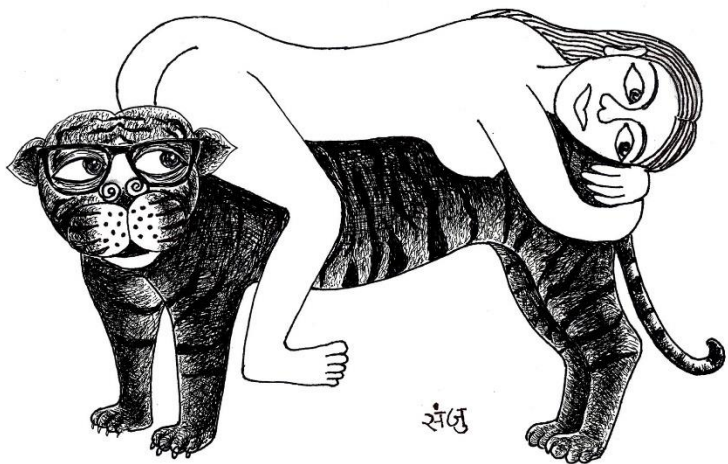














અપન મંગલ્યે દર્શિનાઈસનાડડવદિહબામાઈયોમ પન પડાડ।

रूपगणेश गुरु- कृष्ण कुमार कश्यप आ सशिविठा- एकटा पत्रिय



गणेश गुरु

कृष्ण कुमार कश्यप आ सशिविठा- एकटा पत्रिय



कृष्ण कुमार कश्यप- जन्म १५ सितम्बर १९४८ ई। मृत्यु- १२ अगस्त २०२० ई। पति- कवि-उपन्यासक सूर्य रङ्गनाथसिंह ठाकुर "संवर्धित"। जन्म १९८५ ई. मे गेला सभ ठेठ "गारुट स्कूल", १९८९ ई. मे "कवि आचार्य जीवन आ शिक्षा पदक"क प्राप्तिक आ एक कान्तिनिक ठेठ शिव कश्यप आ सशिविठा सहयोगसँ "शान्ति विकास संस्था"क स्थापना। यथा: सशिविठाक संग "मेघनाद" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद; माछ-शान; मैथिली यति प्रवेशिका भाग-१-२; मैथिली यति-कोन, भाग-३;

મથિથિ અપિન માગ-૪; ગોદના યત્નિ-સૈથી- માગ-૫; મથિથિ લોકયત્નિ।



શશિવોથા- પતિા સ્ત્રી ડગ્ન નાનાયમ્મ થાઇ, પતિા સ્ત્રી ઉમેશ કુમાન કમ્મડ (વસિહથ)। નયના: કૃષ્ણ કુમાન કશ્યપક સંગ "મેઘદૂત" આ "ગીત-ગોવિન્દ"ક મૈથિથી અનુવાદ; માછ-માન; મથિથિ યત્નિ પુનવેશકિ માગ-૧-૨; મથિથિ યત્નિ-કોન, માગ-૩; મથિથિ અપિન માગ-૪; ગોદના યત્નિ-સૈથી- માગ-૫; મથિથિ લોકયત્નિ।

કૃષ્ણ કુમાન કશ્યપ જી સં છેદ હમન સાક્ષાત્કાન સાક્ષાત્કાન-૨ મે કૃષ્ણ કુમાન કશ્યપ જી કથાક વ્રિગિનિ પક્ષપન અપન વ્રિયાન નખને છતા। મથિથિ યત્નિકથાક નામ મધુવની યત્નિકથા કનવાપન ઓ યનિતિ છતા। જાતિવાનપુન સ્કૂલ આ આન ગમક મથિથિ યત્નિકથાકાનક વોયક શાંટિ સેહે ડાગાન મેઇ।

"જાખન લોક વાહનસં અવૈત ાં પૂછૈત જે અહાંક ગામ કોન જાથિમે અછા, આ સે વુહને જે હમ સન મધુવની ગૈ દનમંગા જાથિક છી ઓ વજૈત 'પૂ આન નાંટ સ્ત્રાંમ દ ઓનિગિઇ પ્થેસ'- માને ઓકના હોર છે જે હમન યત્નિકથા અસથી મધુવની યત્નિકથા ગૈ છી આ સે જાતિવાનપુન સ્કૂલકેં સૂટ કનૈ છે।"

નનેન કુમાનાકામ અપન આથેખ "મથિથિજ વૂમન પેમ્મટ દેપ્પન લે આડટ ઑશ્વ પોવ્નટી" મે ઇપ્પે છથા- "વહિનક વનહેના ગામમે જાનતી વ્રિકાસ મંય જીનવ

મહિષાકૈં યત્નિકૃતક મથિષિ પદ્યના સિપ્પા નહૅ અર્થા, ખરસં વહુ નાસ
મહિષિ ગનીવો મગેવામે અપનાકૈં સમન્થ કડ સકૅ છથા"

ગેગે કુમારકામ ઇપ્પે છથા ખે કૅષ્મ કુમાર કશ્ચપક પહિ સિપ્પા
સશિવા, ખે આવ ઓતૅ શક્ષિકા છથા, હુનકા કહૅય્ગિ ખે "અકટા ગનીવ
મુશ્કન સમુદાયક હથીક થીમ આયાનિ યત્ન આ સુન્દન હેશ અર્થા"
સશિવા હુનકા ફેલે કહૅય્ગિ ખે ખોન વોગહીન મહિષિક હથ કને કાગા
હેર છે આ ખપ્પન ઓરમે સં કહિ જોટે કોમળાસં કુચ્ચી નૅ પ્નયુક્ત કડ સકૅ
તૅ હુનકા યત્નસં અઘા દોસન કૅ ખેના ટોકડી, ટેવૅકૅ ઓથ આદિ વેગેગર
મે ઘાઓઘ જોઘ। મુદા વહુ જોટે આસ્તેસં કુચ્ચીક પ્નયોગ કેગર સીપ્પા ગેધી।

કૅષ્મિ ખે પાવક ગગન સમીના આયાનિ પાંચ ટા નંગક અનિર્મિત દર્શિ-
આદિવોસીક કૅકા નેપ્પા આ કાટ સંગ ઓકન થીમક પ્નવેશ મથિષિ
યત્નિકૅમે ગોચના શૅધીકૅ પ્નવેશ દયિને અર્થા

કૅષ્મ કુમાર કશ્ચપ અપન સ્કૅમે અકટા ડોમ છાનાક પ્નવેશ દેને
છૅય્ગિ, દોસન છાના સગ હુનકન સહયોગ કેને છૅય્ગિ મુદા ગૅઆ સગ
હુનકન વૅગીય કેને છૅગ્હી હુનકન સ્કૅમે કહિ મુસ્ઘિ છાના સેલે નર્થા
આ ઓ ઓકન હિન્દૂ થીમક યત્નિકૅ કનવામે કહિયો સંકોચ નૅ કેઁગ્હી

અપન મંત્ર્ય દર્શિના ઇસના ડડવદિહાગામા ઇયોમ પન પડાડ।

रूपरूपिण्ड १ हा, जगकपु १- भयिषि यतिनकथा- गेपाठ पुनसंग



जतिगद् १ हा, जगकपु १

भयिषि यतिनकथा- गेपाठ पुनसंग

१

अपने घनमे उपेक्षति भयिषि यतिनकथा

भयिषिभ्युक्त घनक गतिमे वनाओठ जाएवठा भयिषि ठेकयतिनकथा वसिष्ठनगिप्यागिकिमओगे अछि । मुदा एयन अपने गूमभि एकना पहियाग प्पोजवाक स्थिति छैक । भयिषि यतिनकथाके सकान वेवास्ना कएने अछि, ते ई व्यवसायिक नुप गहि ठऽ सकथ अछि । एकन व्यावसायिक पुनवद्ध्यन गहि नऽ सकथ अछि । गानामास क्षेत्रनक महिषिके जीवगस्नान सुधान कनवाक ठेठ वडका साधन नऽ सकैत अछि ई यतिनकथा । कथिक न प्यासकऽ मैथिठि ठठेक हाथमे गुकाएठ नैहैत अछि ई यतिनकथाक जाहुगनी । आन्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक समृद्धिक अथाह सम्भावना अछि भयिषि यतिनकथामे । ठेकयतिनकथाके व्यवसायिक स्वनुप देवासं आन्थिक आ सांस्कृतिक दुनू ठाग उगओठ जा सकैत अछि । पनम्पनागत भयिषि यतिनकथा जीवगक अंग अछि भयिषिमे । ठेकयतिनकथा संस्कानक द्योतक

सेहे अछि । मुदा वडैत आयुर्गकिताक कामे वसिना पुरमावति भेठ छैक ।
 गान्ध मथिषि यतिनकाके एगनयनि यनिह नई सकैत आनोप
 यतिनकानसभक छन्हि । गेपाठ सनकान कठके वढावा देवाछे छतिकठ
 पुनपुन पुनपिठग प्योछे अछि । गान्धके पुनपुन पनपिठमे मथिषि
 यतिनकास सम्वन्ध एकहु गोटे रहि अछि । ई एकटा पुनमास मात्र
 अछि, आन वहुनो गम मथिषि यतिनकासंग सौगिनिआ वृषवहन होश आए
 छैक । एना छतिकठ पुनपुन पुनपिठगक कुठपानि किनस मागनयन कहैत
 छथि जे मथिषि यतिनकाके वसिष स्थान देगे छी । मथिषि यतिनकामे
 वसिष दप्प भेगहिन मथिषिके स्थान देठ जाएत से कुठपानि कहव छन्हि ।
 हनिक कथनी आ कानिमे कठोक समानता अछि, आवऽ वठा दनि वताओत
 । गान्ध समग्र कठोक उगनाकि वाग होशक ओतान्ध मथिषि पेन्टडिक
 यतिनकान नई अछि, एकना वडिम्बने कहवाक याहि । मथिषि यतिनकास
 सम्वन्ध यतिनकानके उयति अवसन भेटवाक याहि । गेपाठ पन्थटन वन्ध
 २०११ मगा नहठ अछि, एहमे मथिषि यतिनकाक माटे सेहे पन्थटकके
 आकन्धक कएत जा सकैत अछि । एहिवीय काठमाडूक ववनमहठसुथि
 सद्दियान्ध आन्ट ग्याठनीमे एस सी सुमनक मथिषि यतिनका पुनदृशनी
 मथिषि कसमस हाठहि सम्पन्न भेठ अछि । एहि पुनदृशनीमे कठापुनो
 मथिषि यतिनकाक आयुर्गकि आयामसभसं पनयिनि भेठथि । सद्दियान्ध
 आन्ट ग्याठनीमे हुनक ११ म् पुनदृशनी छठ ई । मथिषि क्पेनक
 जीवगसैषिक हठकावऽ वठा यतिनकासभ दप्पकासं ग्याठनी मथिषिमय नऽ
 जेठ छठ । एस सी सुमन मथिषि यतिनका क्पेनमे पनयिनि नाम छथि ।
 हनिक यतिनकासभ वेस पुनसंसा पओठक । मथिषि यतिनका सम्वन्धमे
 अयुपयन अनुसन्धानक सेहे वहुत प्यगता छैक । मथिषि ठेक यतिनकाक
 कुनो प्यास नयिम वा सद्दियान्ठ नहि होश अछि । ते ई स्वयच्छन्दताक पन्थाय
 सेहे अछि । मथिषिक सम्वन्ध संस्कृति पनयायक सेहे अछि ।



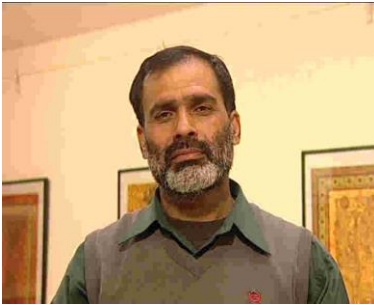
एससी सुमन, यत्निका, मथिषि यत्निका
सकाल कएक सौगिजि वृत्तवहा



मथिषि पेन्टाडि पाम्पनागन कथा अछि, ई कथा कोनो पाठशाठमे नहि
सपिआओठ पाइन अछि। पीढीएन पीढी ई अपने आप सपिवाक काण होइत छैक
। हमहु अपने दाइसऽ सपिओहु । कतउ सासुसऽ पुनोहु सपिआ अछति कपनो

मायसऽ वेटी । ताहिपनिशमे हमहुं अपन दासऽ मथिषि यतिनकषा सप्पिठु
 । मथिषि पेण्टठिके अण्णान्नाष्टान्नि वणानमे वहुन माग अछि । ईन हट केक
 अछि । कषाकानके कषाकानिगामे गन्निन कनैत छैक ओकन मोठ । ढोना हमन
 पेण्टठि १७ हणानसऽ ७५कऽ ८० हणानयनकि अछि । ढो सहणे वकिा पाशा
 अछि । मथिषि पेण्टठि व्यावसायकि नुप ठेवा दसि उग्गुप्प अछि ।
 कमसप्पिठ मात्केठमे देप्पी न सेनामकिमे, व्यागामे कपडा आदमि एकन
 पुनयोग नऽ १हठ अछि । ते गीक वणान छैक एकन । णऽ अपन वाग कनी न
 णहण हम वणानमे अवैत छी न पुनदसनी ७५ कऽ हमना कोनो दक्किगनिई
 होश अछि । मथिषि यतिनकषाक वकिसके ढो आधानसग अछि से कछि
 कमजोन नऽ १हठ अछि ढोना पहिने माटकि घन होश छै । गतिके घनमे
 मथिषि यतिनकषाके गीक अग्यास होश छै । माटकि घनक गममे आव
 क्कन्किटिके णंगठ अछि नऽ गेठ । सामाणकि संस्कान आदमि सेहो गतिमे
 ठप्पिवाक यठग छै । मुदा आव वय्या णऽ पेणसठिसऽ देवाठ पन कछि ठप्पि
 दैत छैक न मायवाप ङंटदित छैक । ते गतिमे ठप्पिवाक यठग पुनभावति भेठ
 अछि । तैश्यो नानईक मुसहण वसूती, थानु आ हांगड णाकि वसूतीमे माटकि
 घनमे मथिषि यतिनकषा देप्पठ णा सकैत छैक । नेपाठ सनकान एप्पगयनी
 कछि नई कऽ सकठ अछि, मथिषि पेण्टठिके ठेठ । मथिषि पेण्टठि णाणऽ
 अछि अपने वुणापन, अपन स्थान अपने वनौने अछि । मथिषि यतिनकषामे
 ठागठ कषाकानसग अपने मेहणतसिऽ आगु वढठ अछि । ठठिकषा पुनण्ण
 पुनण्णिके गडग कनैत काठ पुनण्ण पुनण्णमे मथिषि
 यतिनकषासऽ सम्वद्ध एककहु गोटेके गहि नाप्पठ गेठ । नामके ठेठ सगामे
 मथिषि पेण्टठिसं णुडठ एकगोटके णगह देठ गेठ, वादमे वविाद भैठ आ ओहो
 पद छोडदितगि । वृक्कगगिा नुपमे हमना पुछी न नाप्प मथिषि यतिनकषाक
 ठेठ ने कछि कएने अछि आ ने कछि कऽ सकैया । (सुमनकसंग णाणिन्दन हा
 दवाना कएठ गेठ वागयीनपन आधानगि)

३



धोमेन्द्न प्रेमन्षि-साहित्यकार

पुनर्गातिक पथपर मथिषि यतिनकष

गुप्तात्मक दृष्टिकोमसं सेहे मथिषि पेन्टडिमे वहुन काण नऽ नहऽ अछि ।
 पुनर्पना आ आधुनिकता दुनूके जोडकिऽ एयसी सुमन मथिषि पेन्टडिके आगू
 वढा नहऽ छथि । मदनकषा देवी कऽ, श्यामसुन्दर यादवसहितके
 व्यक्तिसिख पुनर्मात्मात्मक आ गुप्तात्मक दुनू नऽहे मथिषि पेन्टडिके आगू
 वढा नहऽ छथि । सुमनक पेन्टडि आधुनिकताक आकासमे सेहे नऽपुन उडान
 नऽगे अछि मुदा यऽनी वनि छोडने, जे एकदम महत्त्वपूर्ण वाग अछि ।
 मथिषि पेन्टडिके साधनाके रुपमे षऽ कऽ आगू वढनहि नऽ सन अपने आप
 आगू वढा नहऽ छथि । नाट्यके दसिसऽ मथिषि पेन्टडिके षेठ कोनो प्यास
 काण नहि नऽ सकऽ अछि । नाट्ययि स्तऽनमे यतिनकऽनसकके मूल्यांकन
 करैत काठ मथिषि पेन्टडिसऽ जुडऽ व्यक्तित्वके जे स्थाग आ सम्मान देठ
 जऽवाक याहि, से नहि नऽ सकऽ अछि । जगस्तऽन आ अन्तऽनाट्ययि
 स्तऽनमे मथिषि पेन्टडि नीक सम्मान पऽगे अछि । देशमे मथिषि पेन्टडिके
 स्थापति कऽए जाए । प्यास कऽ महिषि सन एकना जोगाकऽ नऽपने अछि ।

मैथिली महिषसम कसिनी अवस्थेसं अपिण उपिव सुनु कनैण अछि । तुसानी पावर्गि आदि सभ सेहो मथिछि पेन्टि सपिप्वाक अवसन् अछि । व्रिधि पूजाक माध्यमे ओ सभ यत्निकेसमे पुनवेश कनैण छथि । नाण्यके दसिसऽ मथिछि पेन्टिके स्वीकृत्यता वढाएव, व्यावसायिक सम्भावनाके पुष्टा कएव, एहिमे उगहिनसभके सम्मानके वातावरण वनएवाक काज कएवाक याहि । तहन ई नाष्टनयि सभमे स्थापति भऽ सकत । एहिमे अग्नानहिन त्रैशष्टिय जे अछि ताहिसि ई अपने अग्नानाष्टनयि रुपमे स्थापति न जाएत, व्यापक भऽ जाएत । (जतिगहन हऽ हुवाला कए जेठ वाग्योत्पन् आचार्यति)

(ब्रह्म संहिता ३६)

अपन मंत्रवृत्ते दत्तिनीति सगाऽऽब्रह्मव्यामायि योम पन पडाउ ।

संज्ञागोष्ठी गकु- श्वेता हा यौवनी- एकटा पनयिप्र



गोष्ठी गकु

श्वेता हा यौवनी- एकटा पनयिप्र



श्वेता हा यौवनी, गाम सनसिक् पाही, उठति कथा आ गृहवाणिज्याने
संगालक। मथिषि यतिनकथा मे सनसिक्किट कोस। कथा पुनईशनिः
एकसएअनआइ, उमसेदुपनक सांसकृणकि कायकनम, गाम-शनी मेठा
उमसेदुपन, कथा मण्डनि उमसेदुपन (एकजीवीशन आ वृकसाँप) ।

कथा समवर्गयी कायः एनआइटी उमसेदुपनमे कथा पुनयिगिगिमे
गनिहायकक रूपमे सहगागिगि, २००२-०७ वनविसेन, उमसेदुपनमे कथा-
शक्तिषक (मथिषि यतिनकथा), वृमेग काँठेन पुसकाकथ आ हॉटेथ
वृथेवाण्ड छेठ वाठपेटगि। पुनपिठति सपॉनसनः काँनपोनेट
कमुपनकिशनस, टसिकोः टीएसआनडीएस, टसिकोः एआइएडीए सटेट वैक
ऑइश् इहाडिये, उमसेदुपन, वनिगिगि वृकगि, हॉटेथ, संगठन आ
वृकगिगि कथा संगालक। हॉवीः मथिषि यतिनकथा, उठति कथा, संगीत
आ गानस गान।

१

ई यतिन यागक कटनी काठक मथिषिक गामक यतिनास कनैत अछी पुनुप-
पात पेनसँ शसवि घन अगैत छथी तँ महिषि ओहि शसविकें तैयान कऽ याउत
वगवैत छथी अपन दैनिकी जीवनसँ हटि कऽ एहि अवयमि महिषि एकट्ठा होइ

छथी आ गप-सगका कनै छथी



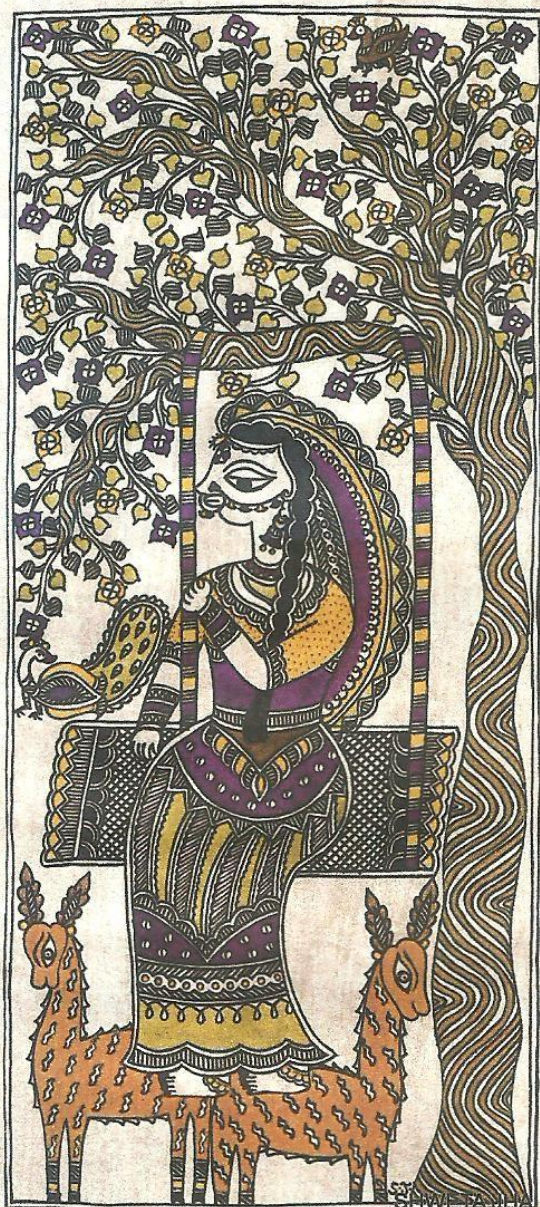
२

गपन कपनो पुनेमक गप अवेन अछी गपन सगसँ पहिने भोगने
गाथाकृष्णक ध्यान आवागान अछी ई यतिन ओहि पुनेमकेँ देखेवाक एकटा
पुन्यास।



३

सावग भासमे वनप्पाक शूहीसँ गीजठ भाटकि सुगन्ध छै। दूध दुधैक आगन्टक
कोनो सीमा नहि।



४

जेठी कहानी

सासुनी जाशना काठ गल कनयियोंक भोगक दुव्रिया- गैहक छुटैक दुप्प आ गल जीवगक उन्साह। ई सगसँ अगजाग कहानी सग उमंगपूर्वक कनयियोंकें सासुनी पहुँचावै।



५

कनय्या हुम्ननी

भथिथिक ठड़की सगमे कनय्या-हुम्ननी प्येक पूव यथगि अछी छोट आ पैघ सग एहि प्येक आगन्त पैग छथी।



દ

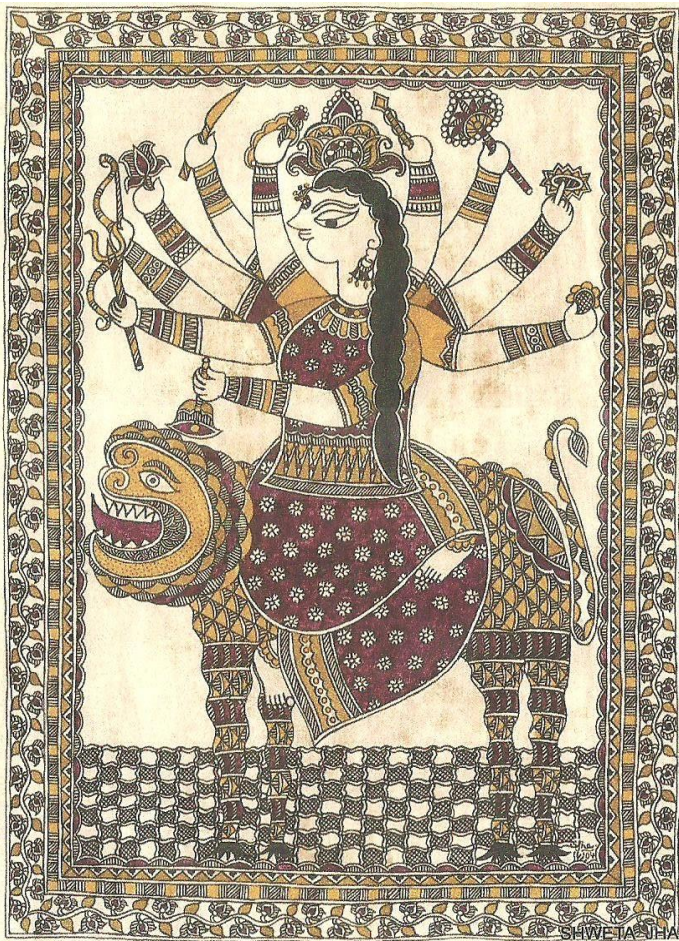
સાયુવાવા

સાયુવાવાક યત્નિમ્મ મથિવિ યત્નિકભમે આયુગકિ તૂપે કનવાક પ્તયાસ



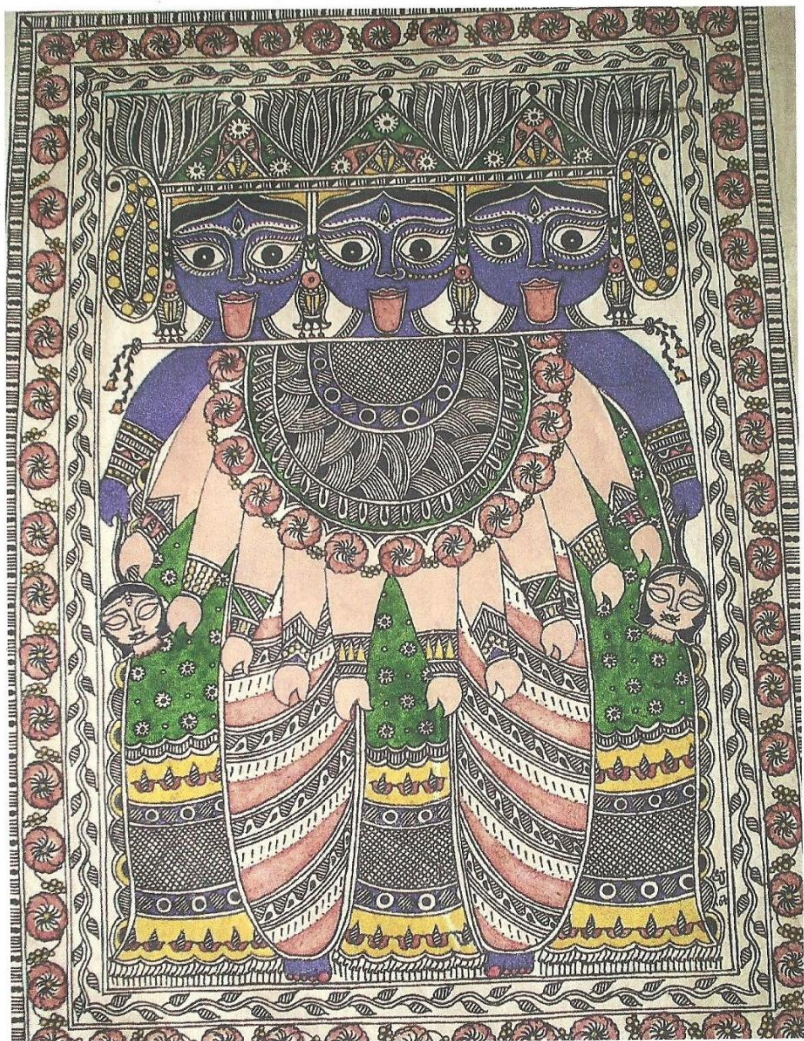
७

सुन्दर



८

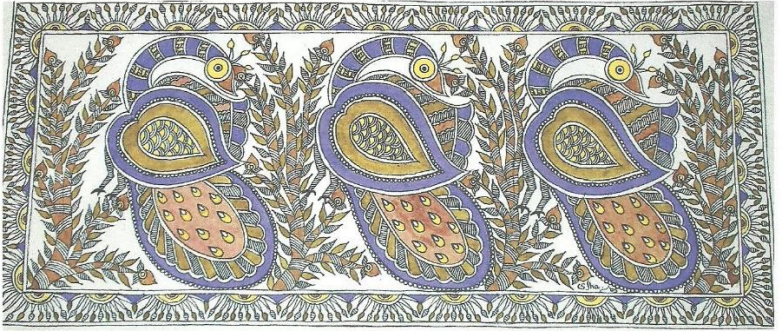
काँधी भाँ



୮

ପଞ୍ଚାମିନୀ





૧૧



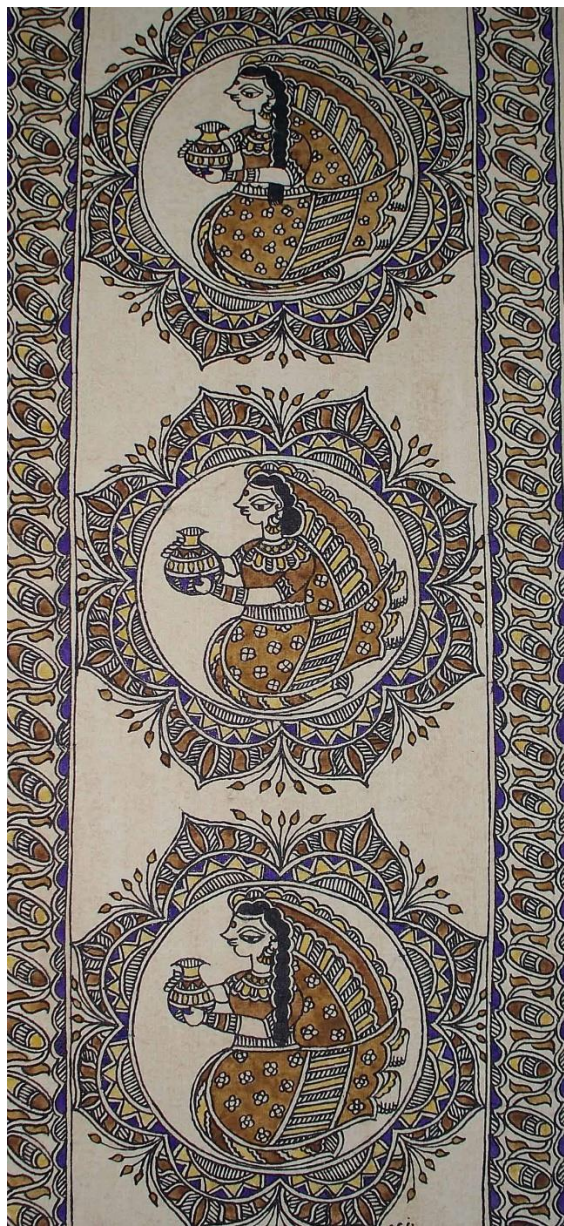
૧૨

યત્નિક વ્રષિયમે: સૂન્ય આશાક આ સંકલ્પસદ્ધિયક પુનતીક અર્ચા, અગ્નિયક
વાદક પુનકાશક પુનતીક અર્ચા ઇ પૃથ્વીક ખીવનક ખાડિ અર્ચા, દેવત્વક
આશીર્વાદક પુનતીક અર્ચા તે વ્રશિવક સમ સંસ્કૃતિમિ ઇ પૂજાતિ અર્ચા,
પાસ કડ મૈથલિ સંસ્કૃતિમિ (છઠ્ઠિ આ મકન સંસ્કૃતિમિ)। ઇ યત્નિ એ સમર્થ
યત્નિતિ કનવાક પુનયાસ અર્ચા

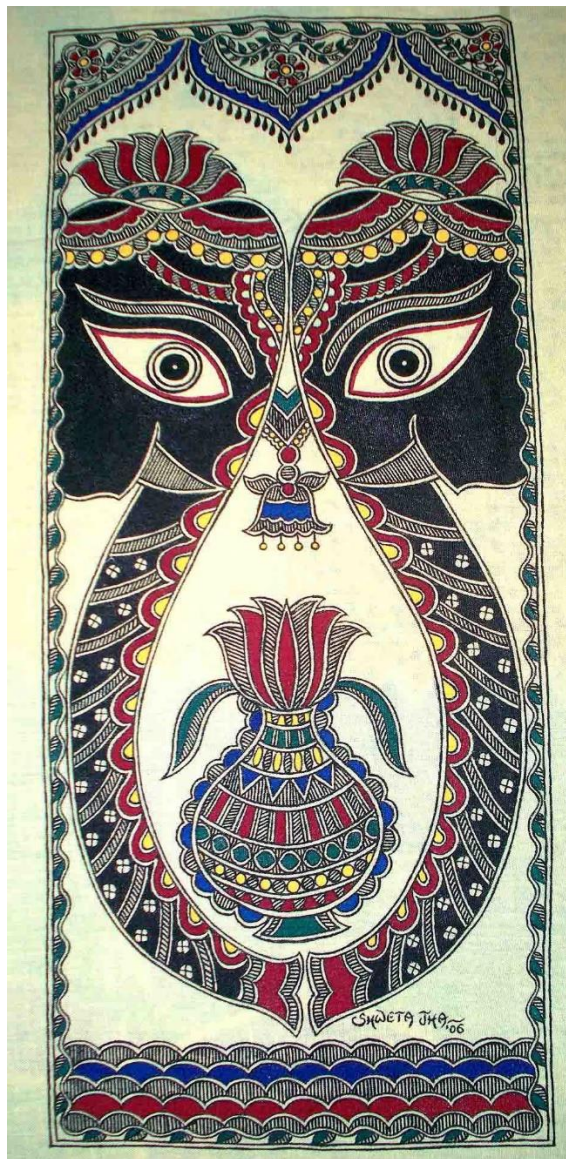


१३

यत्निक व्रिषियमे: सून्य आशाक आ संकल्पसद्विधिक पुनीक अछि, अन्तर्गत
वादक पुनकाशक पुनीक अछि ई पृथ्वीक जीवन्त ण्डि अछि, दैवत्वक
आशीर्वादक पुनीक अछि तँ व्रिषिवक सग संस्कृतमि ई पूजति अछि,
प्यास कऽ मैथिलि संस्कृतमि (छडिआ मकन संक्रान्त)। ई यत्न ए सगकें
यत्निति कनवाक पुन्यास अछि।

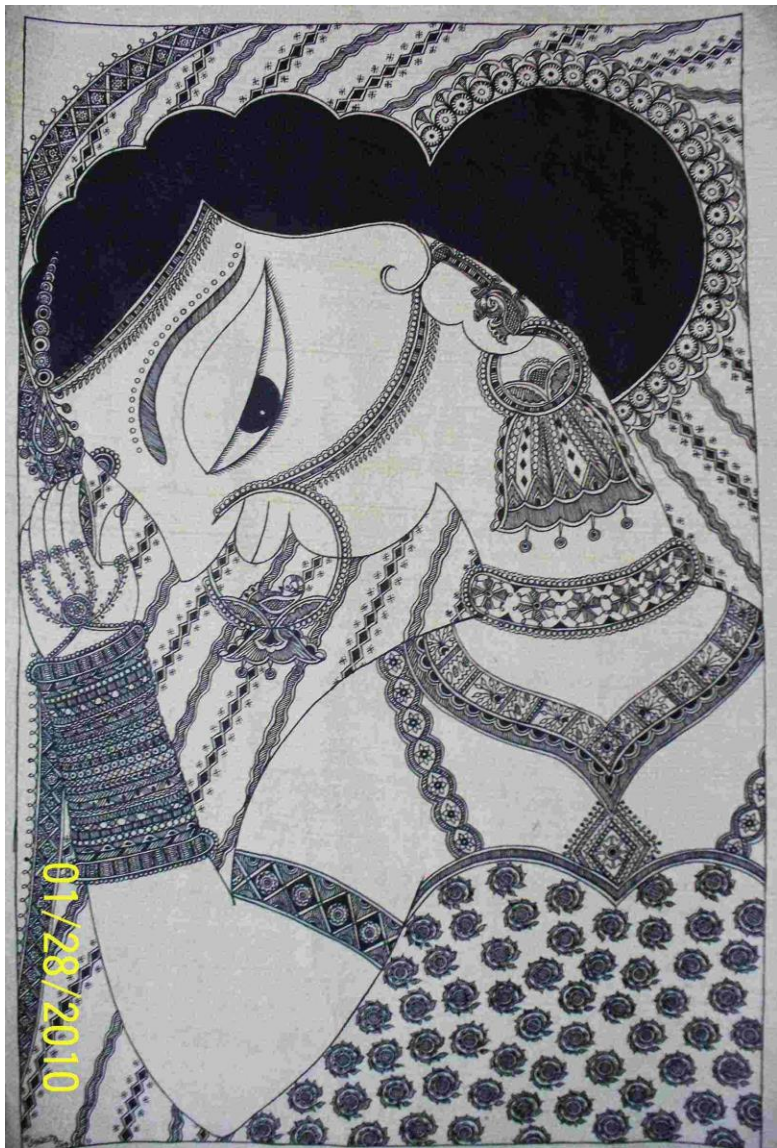


१४





१६



१७



१८



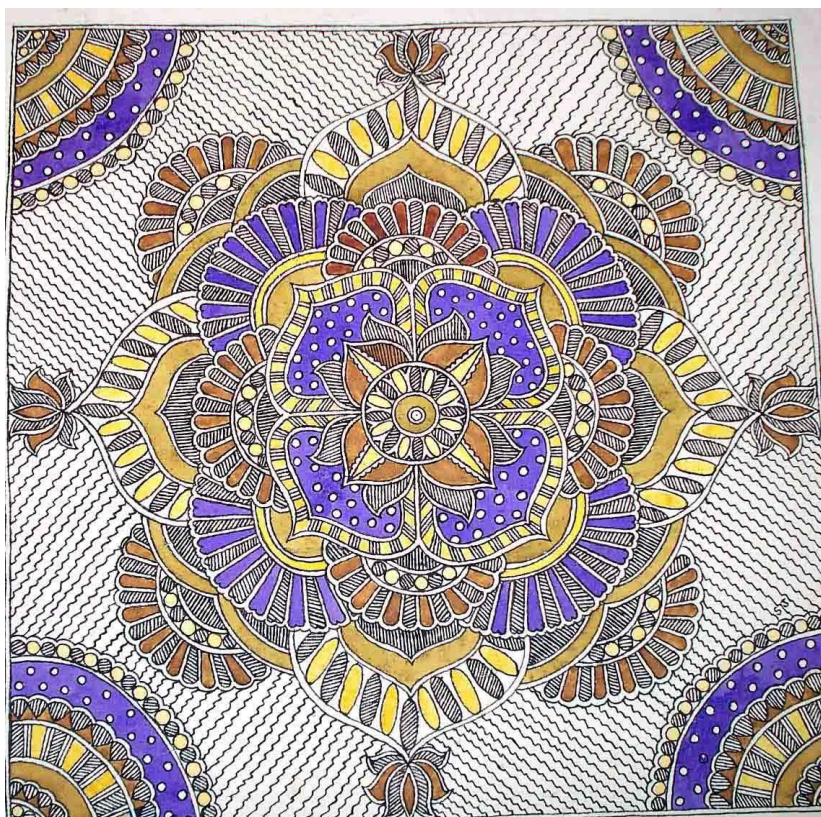
१८



२०



૨૧



(વ્રદિહ સદેહ ૩૫)

અપન મંગલ્યે દર્શિનાઈસનાડડવ્રદિહબામાઈયોમ પમ પડાડ।

ऐ अंकक अग्याग्य नयना

३७६५ पाम्प

३७७० उदयनाथ हा 'अशोक'-गामक नामकनामः एक पनशिथ

३७८० कुमान नाय 'वटोहि'-मंगनौना (एगानहम प्येप)

३७९० कुमान नाय 'वटोहि'-समीक्षा-पनिगी नाम वनगिथ

३८०० गानायाम भस्मि-मार्गूमि (उपन्यास)-२५ म प्येप

३८१० कुमान मनोप कश्यप-ओ दधीया

३८२० कुमान कनाम-अग्निसिपि (प्येप-१७)

३८३० पाम्प हा-कनमने

३८४० आयाय नामानन्द मम्पुठ-मथिपि के ठाठः उपन्यास सम्नाट
शुभीस्वनाथ नेम्पु आ पानो

इंदुऽ कसिन कानीगान-ओगी डैस(हास्य कटाक्ष)

इ००७७ देव कामान-मथिथिमे मांगैण प्पलाश छः! (आगाँ) वनाम्माणि नस् याह
पोप्पाना'क अन्थ जानि गे०हुँ (उद्युक्था) उद्युक्था- पनयाक गहिगिान्थ य०७७
मुनानी छकवप्प (उद्यु कथा) उद्यु कथा- ह०हौन् मैथीथि वहिन कथा- -
सापनपट्टिन् नाग जाग०- वहिन कथा सुनैना वेटी - मैथीथि सामाजकि
उपन्यास ०प्पि पटापैट मानप्प दप्पह (उद्युक्था) उद्युक्था- इ गु०७ प्पेगै कान
छेदौगे अम्बोहपानि उ०७-उद्युक्था (मैथीथि) नोण सेन्टे०७ ०थी (उद्युक्था)
उद्युक्था -नानी केँ नैप्प छै नाजा

डॉ० उदयनाथ ह। 'अशोक'-गामक नामकनामः एक परिशिष्ट



डॉ० उदयनाथ ह। 'अशोक'

गामक नामकनामः एक परिशिष्ट

इसे हमना लोकगीतगति की, आइने अनेकानेक ग्राम देखा हो, मुदा
पहले गामक संप्रदा एक हलिक जे-जे पाळू जाएव, गाम काप्प्या वृद्धा

ઊગામ વા ગગા ગેઠ । મુદા ગામક ગામકામ કોના થેઠેક, તકા કાવિયાન એ
હમ કા યાહ ।

પ્રાચીનકાળમે જહાયા નાના-મહાના ઓકનકિ યુગ કી મહામાન
કાઠ ક પત્રવતી કાઠગી હેક નાખ્યમે અપન-અપન સૈન્ય વ્યવસ્થા ઓક
શાહિસાશી અછા પો પુત્ર્યેક ૫૦૦ હાથો ૫૦૦ નથ, ૧૫૦૦ ઘોડા આ ૨૫૦ પદાર્થ
પૈન યથા અવશ્ય છોટ સામગ્ર હેશ છઠાહ તનકિ ઊ કા-કછુ સેના
અવશ્ય નેહ છઠગી મહામાન કમાગીન પદાર્થ સેનામે ક્રમશઃ 'પતિ',
'ગુરુ' આ 'ગામ' હેશ છઠેક । જા ૫૫ વ્યક્તિ 'પતિ' હોત છઠ ઓહી તીન
પતિ મિથિકે એક 'ગુરુ' વગેરે છઠ તથા તીન ગુરુ ભર એક 'ગામ' હેશ છઠ
આન ગયિમ એકે ૧૭ અઠ, મુદા સુકનીતિ પતિ કે ઉક્ષમ કનિતુ મતિ
મેટેછ । એક અનુસાર ૨૫૪૦) પાંચ-છ સૈન્યકિક ટુકડી 'પતિ' કહેવેન અછા
। આજુક માંતિ પહિનિહું છાવગી છઠેક, કનિતુ અઠા-અઠા, કહું પતિ કહું
ગુરુ આઠ કાહું ગામ ગામ, પોના કહઠ અછાનિત્ર પતિ અન્યાત તીન ગુરુમક
હેશ છઠ આ સે ગામક સંખ્યા કમ હેશ નૈક । જાહિ-જાહિ સ્થાનમે પતિ વા
ગુરુ નેહ છઠ, તકા વાદમે ઓહી આયાનપ નામ દેઠ આશ છઠેક । અન્યાત
પતિ સ્થાનકે પતિ વા પતિ ઓ ગુરુમક સ્થાનકે ગુરુ । પછાતિ રહ
પતિ 'પટ્ટી' મે પતિવિનાતિ માર ગેઠ અથવા એહી શવ્દ વ્યવહાર હોમય ઊગઠ ।
રહ સજ યકિ આજુક
સુગાપટ્ટી, કઠાપટ્ટી, જાવદેવપટ્ટી, ઊઠાપટ્ટી, કસિનીપટ્ટી, અઠપટ્ટી, વે
ગીપટ્ટી, ઊઠમસાપિટ્ટી, મનહરપટ્ટી, કામેપટ્ટી, સોનાપટ્ટી આદિ । પટ્ટીક
સંખ્યા વેશી નહે ઉદાહરણો વેશી મેટેછ । એહી જાન-જાન 'ગુરુ' છઠ, સે
આર ગુરુ, ગુરુમયા, ગુરુમતી, ગુરુમયા આદિકિ નામસં જાનઠ જાશ અછા
।

સુગઠ થકિ પો એક ગુરુમક પ્રયાગ નહથા વરોહા કનિતુ હુનક
અસાવચાનીવસ અથવા આને કોનો કામ ઓહી ગુરુમે યોની માર ગેઠ । સંયોગસં
યોન પકડાયઠ આ ઓકા નાજાક સમુખ્ય આનઠ ગેઠ । નાના ગતિમય દેઠગી

जे' 'गुठ्मा-यो' वधोहाक कपा' । अगपिनाय ई जे एक' गन्मिष ह'म गह' वधोहा क'नाह । असु ।

पुन'येक नाप्य ओ नापाक ठे' सेनाक होएव ग'गिग' आव'स्य'क मा'ग' जे' अ'छ', ई स'ग' ज'ग'ि छी, ते' नापाकै 'या'य'क'पुषा:' कह'छी जे' अ'छ' । 'या' ना' या'क'ने ग'ह'ि थ'कि, आ'पु'क' छ'र'य, छ'र'र' एवं सै'ग'य'कै' से'ह'े कह'छ' जा'र' छ'छै'क, असु । मु'दा ई व'ड' क'म' छै'क' ज'गै'ग' हो'ए'ना'ह' जे' प'ह'ि' से'ग'ा' क'नो'क' पु'न'का'न'क' हो'र' छ'छ' । जे'ग'ा' आ'ई से'ग'ा'क' ज'ठ'-थ'ठ' ग'म' नू'प'मे' प'ह'ि' गी'ग' भे'द' दे'प'प' जा'र' अ'छ'ि'ग'ा'ग'ः प'न' ग'ष'ढ, छ'र'ष'ढ' क'मा'सु'डो' आ'ई' उ'प'भे'द' क'नो'क' भे'द' दे'प'प'व'ामे' अ'वै'छ' । न'ह'ि'ग'ा' पु'ना'यी'ग' का'ठ'मे' से'ग'ा'कै' के'यो' या'ना' से' के'यो' छ'ः भे'द'क' सु'वी'का'न' क'नै'ग' छ'थ'ि । म'हा'भ'ा'न'क' अ'नु'सा'न' (म'हा'भ'ा'न', सा'ग'ना'पि'त्र-प'ट'४१४१) एक'न' आ'ड' अं'ग' कह'छ' जे'ठ' अ'छ'ि' ह'स'ी, अ'शी, न'थी, प'दा'ग'ि, व'षि'ट', ग'व', य'न' एवं दे'श'कि । अ'गे' दे'श'क' गौ'ग'ि' म'थि'छि'हुँ'क' ना'पा'कै' ए'ह'ि' स'ग' पु'न'का'न'क' सै'ग'य' छ'छ'ग'ि, ज'क'न' न'ह'वा'क' सु'था'ग'के' सै'ग'य'-भे'द'ह'कि' ग'ाम'प'न' ग'ाम'क'न'स' कह'छ' जे'ठ' छ'छ' । य'था' ह'थौ'डी, ह'ग'ग'डा, अ'स'वै'या, न'थ'ग'हा, नो'या'ग, न'थी'टो'ठ, न'थ'वा'डा

(न'ग'वा'डा), दा'ग'ि

(दा'ग'ि), व'षि'ट'पु'न', व'षि'ट'सै'ठ, ग'वे'ठ, ग'व'सु'थ, य'न'मा, य'न'म'प'ट'टी

(घ'न'मा'प'ट'टी), द'सि'ठ, द'स'का' आ'ई । ई स'ग' आ'धु'न'कि' ग'ना'म' ओ'हि' पु'ना'यी'ग' श'वि'ट'ग'के' दे'प'प'ा' न'ह'छ' अ'छ'ि' । सु'म'ना'मी'य' थ'कि' जे' जे'ग'ा' प'ह'ि' से'ग'ामे' प'थ'पु'न'द'न'स'क'कै' 'दे'श'कि' कह'छ' जा'र' छ'छै'क, न'ह'ि'ग'ा' व'सि'ष' आ'धु'य'-स'भ'या'ठ'ग'-द'क्ष'व'य'क'ग'कि' 'व'षि'ट' कह'छ' जा'र' छ'छै'क' से' श'हि'स'स'दि'य' पु'न'स'दि'य' क'था' थ'कि ।

ग'ाम'क' ग'ाम'क'न'स' मा'न' सै'ग'य' छा'व'ग'ायि'क' ग'ाम'प'न' ग'ह'ि' अ'प'ति' आ'धु'य'हुँ'क' ग'ाम'प'न' असु'न'-स'सु'न'हु'क' ग'ाम'प'न' ना'प'प' जा'र' छ'छ' । गी'ग'पि'न'का'स'कि'मे' व'हु'नो' ना'स' आ'धु'य'क' व'न'स'ग' भे'ठ' अ'छ'ि' (अ'ध'या'य' दू'स' पाँ'य' य'नी), ज'क'ना' या'ना' श्ने'मी' ओ'न'ए' व'नि'ज'ग'ि' कह'छ' जे'ठ' छै'क

मुक्ता, अमुक्ता, मुक्तामुक्ता आऽ मन्त्रामुक्ता । एहि सग आधुयक की पनियिप वा ठक्कास से श्रुतिछाएव हमन पुनवन्धक उद्देश्य गहियकि आऽ से पौ कन्य ठागव न पुनवन्ध वसिनामक गय, ते नकना छाडि देठ अछि । कनिगु ई कहव आवस्यक जे उपन्युक्ता यानू कोटकि आधुय एक गम नहि नहै छठ । आधुयक सन्यासको अपन अपन आधुय-क्षेत्रहि नहै छठह । आवस्यकना पडवापन ओ ठेकनि अपन-अपन असन्त-सन्त ।

हाथ एएनियानि स्थापन जाश छठह जे हे, मुदा समन्वय यकि मे, जे आधुय जान नहै छठ, नकना अन्था ओहि स्थापके, ओहे आधुयक आधानपन नामकनाम होश नहेक । जेना कि 'मुक्ताधुयपुन' एहिमे 'धुय पद आई ठुपनगर आकास मुक्तापदक संग मोठी (सर्वा संयोग) 'मुक्तापुन' गए गेठ अछि हमना जगै 'मुक्ताम' (मोताम) वा "मुक्तामा" के सम्वन्ध सेहे नहि मुक्ताधुय नहै होए ।

यन्मशास्त्र, अन्थशास्त्र ओ शिविष्य समे गाँगा गौतकि 'क' के उठेय भेटै अछि । एहि 'क' ठेगहिन, देगहिनक पृथक-पृथक स्थाप छैक । कछि गाम एहगो छठ, जाहपिन नागाद्वाना वसिष कन ठागओठ गेठ नहैक । कनिनाम कनमुक्ता छ कोनो-ने-कोनो कानाम ओहि गामक ठेक नागा कन गहि छै नहथी । एहि प्रकारक गाममे अकनयो, अकौह, अकड़ी, अकनमपुन (मकनमपुन) आदि यकि । मुदा जाहि गामपन कन ठागठ जठ अथवा जाहि गामक वासी कन दैठ छठह अथवा जाहि गाममे कन असूठगहिन नागाक पुननिधि नहै छठह, नाहि गामक सम्प्रा आपेक्षकि अथकि छ एहि कोटकि गाममे पुनागो गामसग अथै छठ, जकन नामकनाम 'क'क आधानपन गहि भेट नहेक । पनगु नव नव गाम से वसठ वा वसठ छठ, नकन गामकनाम एहि 'क' के आधानपन भेट । यथा- कनडियो, कनहना, कनहिन, कनगन, कनैया, केना आदि । नागाकै दानव 'क' मे एक प्रकारक कन छठ 'व' । ऋग्वेदमे एहि कानाम साधानाम वृक्षकाकि ठेठ 'व'हिन' शब्दक प्रयोग भेट अछि (१०१७३६) जकन

अन्थ नाणाक ठेठ वरि अगगहिन। तैत्तगिप्य व्नाह्मसह्मे 'हन्त्प्यस्यै वरिशो वरिम्' (-२७९८३) १ पुन्योग देव्येण जाश अर्णि। ऐनेय्य व्नाह्मसक अगुसा १ (ऐवा३३) 'वर्किट्' वैश्यमात्ने होश छथाह, जे वरि दैण छथाह । वरि, सामान्यतः व्यापार कवि आयात-गन्त्यागहपि १ ठौण छथ । व्नाह्मस वा कृषत्पि वरिष पुनस्थितिकै छोड़ि क मुक्त होश नहथे । अतएव जाह गामक वासी वरि दानव्य होश छथनि, नक गामकनास एही वरि कानास मेथ होए। यथा वरिगाँव, वाठे, वराठ, वरिया, वरियाही, वरिगान, वरिपुन आदि कनिठ कछु एहनो ठेक सभ नहथ जे नाण- दनवाने अथवा पुनगिधि ठा जाए स्वयं वरिजाम नहकतैन नहथ। ई ठेकनि 'हस्रवर्कि' के माध्यमे अपन वरि (क) नाणकोसमे जमा कतैन छथाह। एही हस्रवर्कि गपिकनि स्वयं नाणा कतैन छथाह । सम्भव थकि जे ई "हस्रवर्कि" जाह गाममे नहै छथाह, नकना हुनके नाम वा पदनामपुन जागठ जाय ठागठ। जेना आपुक 'हवविया ओ 'हेडीवाठि' ओकने आभास दिया नहथ अछि।

गगन, पुन, पुनी, पत्तनक अन्थमे 'हट्ट' शब्दहुँक पुन्योग देव्येण जाश अछि। नाणगीपिकासमे देवीपुनासक वाक्य उद्यत मेथ अछि, जे एक पुनास थकि । स्नीयनो अपन गगन व्याप्यागमे कहै छथि 'गनामा हट्टादिसूयाः, पुनो हट्टादमित्यः, ना एव मह्यः पत्तनागि (गगन भाष्य- ४ १८३१) । कदायि एही हट्टक कानसे भयिठिहुँमे गनामक नामकनास कए जेठ हो । यथा हटनी, हटनिया, हाटी, सनिपुन हाटी, वगडहट्टी आदि।

ऋग्वेदेमे 'गनाम शब्दक पुन्योग वहुशः मेथ अछि, यथा गनामजिठि गनः' (ऋ ५५४८), 'यथा सभसद् द्वपिदे यत्पुषपदे वरिश्वं पुषटं गनामे असभगिगगानाम्' (क १९८४१) आदि (ऋ १०६२११ १०१०८५)। तैत्तगिप्य संहिताहुँमे "वद्विवाग् व्नाह्मसगनामसी" (तैत्त-२५४४) आदि कहठ जेठ अछि। एतए समानव्य थकि जे 'गनाम' शब्दक अन्थ गामे नहै छथ, अपाठि गगन

सेहे होश छै। ओना तँ गगन, पुन, पुना, पत्तन, गाँव आदि शब्द कोनो गामक नाममे नहिनि अछि, किन्तु एते पन्थाप्रवायी गहि बूझि गगनक अन्थ सहन वा छोट मोट सहन बुझवाक थकि ग्नाम पुनमुष्कै 'ग्नामसी' वा 'ग्नामकि' (७११५-१६), ग्नामाधपिना (कौटिल्य ३३०), ग्नामकूट (एपिस्टोको, जल्लि-७, पृष्ठ १८३ १८८ १८ पू३०४ ३१०) आऽ पट्टकवि (इमडि एम्प्टीक्वेरी, जल्लि-६, पृ ५१, पृ १३: जल्लि - १८, पृ ३२२) कहै जाश छैक। इह शब्द आई मुष्या आऽ मेयन दुहु कहैछ । पट्टकविक संगनाग जाहि-जाहि गाममे वसैत रहथि, ताहू गामक संग 'पट्टी' जुड़ैत छै । ते समाम्पि यकि जे पट्टीयुक्त गामक नामकनाम मान् पत्त, पत्तीक कामसहि गहि, पुनपुन पट्टकविक हेतुजे सेहे भेठ अछि।

शुक्लगीतकि अनुसा एक 'ग्नाम' वसिनामे एक कोशक होश छै (शुक्ल - १ १२३) । गामक आवा गाग 'पठि' कहैत छै, जकर उदाहरणमे 'संसिव' गामक आन्ध्रगाग 'पाहि के छै जा सकैछ, जे कहि गोटक मतमे पठिक अपभ्रंशो थकि । पनगु एक अन्ध अवधानमा वा पुनकृत वैद्याकामक अनुसा गामक आन्ध्रगाग 'पठि' क उदाहरण जगदपठि, मठकपठि, नूपाधि, पाधि आदि तँ गए सकैछ, पनगु 'पाहि' गहि।

हेमाद्री अपन दागपाम्पडे मान्कम्पडेपुनासके उद्यत करैत पुन, पेट, प्यंठ एवं ग्नामक पन्थावा पुनसूतन करैत थि । जम्पनकि हिनकहुँस पुन महर्षि प्राग्भवत्कयक अनुसा यागागाहक वसिनाकै ध्यानमे नाप्ति ग्नाम, प्यंठ, गगन सग एकके अन्ध द्योति करैत अछि, मान् एक कषेत्तुछै ओ गागनिक सतमे भेद पाओत जाश अछि। एहिसंगक

કાનામે પૂનાય: સંસ્કૃતક અઠકાશાસ્ત્રી ઓકળા'પામય દોષ દેખ્યોગે હોણાહ હમના ખેતી એ સમયે કોનો 'ખનુવટ' પછાતિ'ખનય' (ખડનખ) થાગેઈ હોણા। હમન એક મતિન એક સમય કહેને ન ખે પહિણે પામય ખડક વોળ છઈ અકના કાટી ઓક વસઈ તે 'ખનય' આઠ કાઠાગનામે 'ખન' થાગેઈ ખેના સનુવપ સનસિવક કછપના નહિણા ખદખદનક, ખે હે હમના એહિમે કહિસય ઉપહાસયક પુટ વુહના ખાસઈ ખે ગામ વા શૂમી ખડકે નખઈક સે મેઈ ખનય આવાદમે ખહનય ।

એહિણા યોન-યપાટીનસ નકષા કનવ, યોન-ડાકૂ સમા દાિવ 'યૌનોદ્યનામકિ' વા 'કોપાઈ (કાઈ) કાન્ય હેશ ૧૧૩૫૧ ૩૪) ખખગાકિ કૌટલિય મતે કાન્ય 'યોનનાખુક' કનૈન છઈહ (૩)। અયકિની વોનીક કષાપિનાયિ કનૈવ નહથા સમ્મલ કષેત્ર વસિષક 'યૌનનાખુક' નયના ઘાહ સે કાઠાગનામે નખીહ, નખુકા (નખુકા), નખુઆહિ, વોડખવા આદિ થાગેઈ હે ।

કનિતુ ગામ ખાતકિ ગામપન સેહે વસઈ વા વસાઓઈ ગેઈ, ખાહિમે વગિયામ, સહિવાન, તેઈયિણા, તેઈયિા તેઈગામા, મીન, નૌઆ-વાખનિ, કૈથવાન, કૈયનિયિં, એકમ્મા, વનહિ, નાખપામ, ઝામાના, કનામ્પુન, સસિવાનિ આદિકે છેઈ ખા સકૈછ 'ઘન' ખાતકિ કષાત્રનિયિવહુઈ ગામ 'મોન' છઈ, ખે વાદમે ખમ્મડવઘા કુઈક નાખા ઓકળકિ ગામ મેગે 'નાખપામ' સેહે કહઓઈક સસિવા કષાત્રનિ, ખકન શાખા સસિદયિા થકિ, નકના મગાણ, ખામય ગામ વા વસતી વસઈ, સૈહ મેઈ સસિવાનિ (સસિવા અનિ) । એહિ નનૈ વ્યકતકિ ગામપન સેહે કતોક ગામક ગામકનામ મેઈ અછા, ખેના સોનાખીક ગામપન સોનામઢી, સોનાપટ્ટી: ગૌનીક ગામપન ગૌનયિા: ઝમાક ગામપન ઝમગાંવ, મયુસહિક ગામપન મયુવગી ધનમથાથ ઠકુનક ગામપન ધનમ્પુન: કછ્યામ હાક ગામપન કછ્યામ્પુન: માખગસહિક ગામપન માખગપુના, નાખા કસગાનામક ગામપન કંસી (સમિતી); એક અખાખા શુકઠાક ગામપન શુકઠાનાહિ આદિ ।

एतय इहे स्मन्ताव्य थकि जे' एक्के नामक अगेको गाम अगेको गम छैक, तहि सभक नामकनामक पाछू कोनो एक कानाम वा शहिस रहि नहैक अछि जेना छेहनाओक सगकिट यन्मपुन मातु यन्मनाथ गकुन वसओउगह, जप्पना कि आगो गम यन्मपुन पाओउ जाश अछि एहिना सगसिव-पाहिक गकिटक 'कठ्यामपुन' मातुन कठ्याम हाक द्वारा वसाओउ गाम अछि, आग रहि वक्सन जहिमे सुथिनि 'अहनौथि' के अहठ्याक नामपन स्थापनि कहउ जाश अछि, जप्पना कि इएह कानाम 'अहयिनी' क संग सेहे देउ जाश नहउ अछि।

मथिषिक कहि एहो गाम अछि, जकन नामकनामक पाछू एक शहिस नहैक अछि, गान्गीय नाजगीरकि वा सांस्कृतिक शहिस । जेना व्रिनाटपुन, व्रिनाटगगन, वनाटपुन, व्रैनाटीक नामकनामक पाछू मथिषिक एक गामक अन्तार् मन्सदेशक नाजा व्रिनाटक सम्बन्ध जुडउ छनि, जगकि दनवानमे पासुडव लोकनि अपन अज्जातावासक अवधि वनिओगे नहथि । मथिषिक तन्काविग जगपद सभमे व्रिदिह, व्रैसावि, मन्स्य आदिदिश पुनमुप छउ । जप्पना कि पासुडवहकि वसाओउ व्रान्तमान 'पासुडौउ' अछि, जे पासुडवाउयक अपग्नस थकि । पनपनया ई सुन थकि जे अज्जाता वास हेतु जएवाकाउ पासुडव लोकनि एहुँ नाग्न व्रिस्निम कएगे नहथि वेनीपट्टी थानामय जे व्रिनाटपुन गाम अछि, तकन सुनैत छी पुनयीग नाम व्रिनाटपुने नहैक । एकन गकिटहि अछि 'अन्ताना' नामक गाम, जे व्रिनाटनाजक पुननी ओ अगमिगुयक पन्गीक नामपन वसउ अछि । अन्तानासँ कहि हटि 'कीयकवाहा' नामक स्थाग अछि, जतए व्रिनाटक सां कीयककेँ घिसिया-घिसिया मानउ गेउ छउ । ओना ओकन वासस्थान छैक कहि हटिकेँ, जे आई 'कछना' कहवैत अछि । कीयकसँ कयिना, पुनः कयना आऽ अन्तमे कछना गेउ होएत, जे सभ मन्सदेशमे अवैत छउ । एकने उगापासमे अछि व्रिष्मपुन आ मयवापुन, जतए मायव (स्त्रीकृष्म) अपन व्रिष्मपुन देयओगे नहथि । स्मन्तामीय अछि जे ई सभ गाम 'गाँवा' पुनगगनामे पडैत अछि एहि

वर्षिम्पुन ठग अन्पुन अपन अन्मागवासक समय गाम्पुडीव आऽ वाम्पु
नुकओगे न्हथि जाहि स्थानपन आई 'गाम्पुडीवेस्वन् महादेव' एवं 'वाम्पेस्वन्
महादेव' क मन्दिनि अवस्थिति अछि । एहिना गेपाठक मोनंग जठिमे
वन्तमान वनिटनगन ओ यम्पानामक वैन्याटी गामक सम्बन्ध सेहे
वनिटनाजहिसँ जुड़ैत अछि, जे उपन कहि आएत छी ।

नाजा सोनय्वज जगकक पुष्पोद्धाने आजुक शुभह्र गाम
थकि, जगए गनिजामन्दिनि 'गनिजामस्थान'सँ पुनसिद्धि अछि आओर एहि
जगजगनी सोताक भेट स्नीनामसँ भेट न्हनही एही गम हगाम्पु थागामे
वसिवाभित्तिनक शक्तिनि छठ, जे आई 'वसिष्ठ' कहवैत अछि । सोनाऽ ओ
नहिकक सन्निहिते वदियमान 'कपटिस्वन्स्थान' गगवान् कपटिक आश्रम
सन्नाम कना न्हन अछि, संगहि इहे पनम्पनया सुनुन अछि जे एहि शक्ति
स्थापना स्वयं कपटि मुनिकएने न्हथि । गौतमऋषिक जगए आश्रम छठ, से
वन्हम्पुन आई वकिट्टन गएकै 'वदम्पुन' गए गेठ अछि, जम्पनकि किमनौठक
एही पनसिमे अहम्पुनोस पुनसिद्धि पुनायोग गगनीक नाम अपनान्स
गए 'अहियानी' गए गेठ अछि ।

सोनामढी जगपद सोताजीक उद्भवस्थान ठक्कमसागदीक नटपन
अवस्थिति नत्काठिन 'पुम्पु अन्वी' आई वकिट्टनगए 'पुनौना' नामे पुनसिद्धि
अछि । एही गम पुम्पुनीक ऋषिक आश्रम सेहे छठ, जगकि नामपन पुननी-
सोवन (पुम्पुनीक सोवन) पुनम्पान अछि । एकने वगामे स्थिति
गनिजशिनी नामक गाममे प्यथि पुनाम पुनसिद्धि 'हठेस्वन्नाथ
महादेव', जगकि अगद्विनेमे पुनायोग काठक 'उन्वीजा वानिजा', उन्वी
वेन्या नामे पुनसिद्धि अछि सुनसाम्पु ओ जगकपुन नोटपन आई जे 'पन्थ-
पाक' पाओठ जाइत, सुनैत छी व्रह स्थान थकि, जगए पाक'क गच्छन
सोताजीके अग्रोय्या ठए जम्पवाक कनमे कहल सन सुसोवाक हेतु नम्पे
न्हन ।

गेपाठक महोत्तरी जमिमे जेसुवन महोदेवस्थानक वगैरहिमे एकटा गाम अछि सुगुगा । एहि नाम्ना जगक दुवारा व्यासपुत्र शुक्रदेवजीक आवास व्यवस्था कलाओठ गेठ छठ । बादमे इह सुकाशम सुकास 'सुक्का' होत 'सुम्मा' भए गेठ अछि । शुक्रदेवजी मथिछि अएकाओ नाम्नामे यम्पानामक वेगछि ठा सेहो स्कूठ रह्यो जे स्थान आई 'सुगाओ' से जानैत जाइत अछि । जगपुनसं दस भौठ दू हटि 'यगुषा' नामक स्थान जाए नामयद्गुणीक दुवारा कएठ गेठ यगुषगंगक कथा समान दियैत अछि, ओहहि मुजश्चुनपुनक 'गोगा' ओ नेवानी (ऋग्वेदी), सोनामढीक 'अथनी', "यगुआन आन मयुवनीक समौठ कर्मसः ऋग्वेद, अथर्वेद, यगुर्वेद ओ सामवेदक गङ्गाविन अय्ययन- अय्यापनक स्थानकै समृति पठपन अगैत अछि । यगुषा जमिमे अवस्थति 'कुसुमा' नाम यद्गुपि कछि गोटे यगुमवर्क्य ऋषिक आश्रमस्थित भगैत छथि, मुदा ओहि गाममे वाजसनेवा ऋषिक आश्रम छठगि से वहुनो पुनमाससं पुनमासति अछि, हिनके पुत्र रह्यनि नयकिता । यगुमवर्क्यक आश्रम तं योगविनमे छठ, जे आई हीनापट्टी- जगवन कह्यैत अछि । ई गाम अछि मयुवनी जमिक वेनीपट्टी थानामे ।

मयेपुना जमिक सहिस्वनस्थानक सम्वन्ध नामाप्रसङ्गिक ऋषि शृंगीसँ रहठ अछि, जगिक आश्रम एत छठगि आ जगिक दुवारा स्थापति 'शृंगीस्वनगाथ महोदेव' आई सहिस्वनसँ पुनसद्वि छथि । गोगपुनक कहठगौवमे एकटा पहाड़पन दुनूवासाऋषिक आश्रम छठ आओ सुठानगजमे गङ्गागदीक पान्श्वमे एकगोट पहाड़पन जहूनुषिक आश्रम रहगि, जे आई जहूनुगनिक अपभ्रंश भए 'जहंगाना' कह्यैत अछि । वद्विवा अन्वेषक ई थानामा रहठगि अछि जे पाठवंशीय सुपुनसद्वि वकिमसवि वशिष्ठवद्विवाप्य, एहि जहंग-आश्रमक गकिटमे छठैक ।

दगंगक नाम कोना पठ से वविाद एपगो हठ गहि भए पाओठ अछि, कानाम 'मुम्डे मुम्डे भगिनिना' । तथापि अनेक कविदन्तीमेस

कछुके एए उय्ता कयै छी । जेना कछु गोटे द्वागवंग (वंगाक द्वाग) सँ दगंगक कठपना कयै छथि त केसो दगंगीप्यौ नामक कोनो पैघ व्यक्तीक आनि वैसाओ आऽ कहै जे इए दगंगक गनिमास कएलह । जे १८म शताब्दीक सुवेदा दगंगीप्यौक नामप दगंगक स्थापना मानि छी त एहिसँ पूर्व 'दगंग' क यन्त्र कोन भेटैत अछि ? तहिना यदि वंगाक द्वागसँ 'द्वागवंग' क कठपना कयै त 'वंगद्वाग' होएवाक याही, न कि द्वागवंग, संगहि दगंगक कोन स्थानसँ वंगाक प्रवेश कए जा सकैछ, सेहो एक प्रश्न अछि । कनिको- कनिको अनुमान इहे सृजित अछि जे ११११ शिवसहि क दै (सेना) के मुखमि आक्रान्त जायगंग (गास) कएक, तकर बादे एक नाम 'दगंग' भेटैत आ संस्कृतक 'नयोनय' के मानि ई दगंग कहओक अथवा उय्यास- सौवयिक कामे दगंग भेटैत । शिवसहि एका तत्कालिन पड़ाव स्थलके आर्यो लोकसव 'शिवयाना'सँ जयैत अछि । पनत एहि शहरक नामकाममे उपयुक्त कोनो काम समुपयुक्त प्रतीत नहि होइछ । हमना जयैत आठम-नम शदीमे जे यौनासी गोटे सद्विधकनि भेटैत, तहिमध्य मथि छिहँक कनिक सद्वि प्रसद्वि नहथी हुनके सगल नामप हुनक स्थान- वशिष्ठके पनवती काठमे नामकाम कए जे भेटैत, जेना दगःपाद (दगःपा) सँ दगंग आ 'हगःपाद' सँ हगंग, 'नगः पाद' सँ नगंग (आजुक नाम नगंग), 'शकःपाद' सँ शकनी वा सकनी, एहिना शवना से सवौन आदी

वशिष्ठकमुनि आश्रम नहनि काठिनमे, जे पछानि कयि कहओक आ आई ई समस्तीपुर जामे 'कयि- वध' सँ प्रसद्वि अछि समामीय थकि जे एहि जामे पनवती काठमे उदयगायान, गोवन्धगायान आदि मथि वि-वनि भेटैत नहथी एहि काठामे, मुदा कछु पूर्व भेटैत छथि 'नगनी' नामक प्रसद्वि आऽ निषिष्ट वैद्विवाङ्, जे यन्त्रपाठक शिष्य आ वक्त्रिमशि विवद्विवाङ्क आयायो नहथी । हनिक पनोक्ष भेटाप नहिकास

पुनर्गावति समाप्त हनिक गामक नाम नाप्ति देवक 'गणपुन', जे आई वगिनकि 'गणपुन' गए जेथ अर्छा । एकरे अर्गा टूतपन स्थिति अर्छा 'कनिगनिपि', जे हनिकह गामान्यक ए वसाओ जेथ पुनीन होइछ आऽ 'गणपुन-कनिगनिपि' कहवैत अर्छा ।

मथिथिन्यथक कछि गामक नामक नाम ओतूका नाजा वा जमीनदानक कानामे सेहे जेथ अर्छा, एहे गाम वा

स्थागसगमे सुपुनसिद्धि अर्ग नाजन्थिजनकक 'जगकपुन', नाजा वरकि नाजधानी- स्वपुन 'वर्गनाजपुन (वाववनेहि ठा), अर्कक सम्पत्ति नाजा वगनहिन कानामाटवंशीय नाजा गान्धपदेवक नामपन सीतामढीक 'गणपुन' नाजा कंसगानायसक नामपन 'कसी' (कसी-समिनो) आदि । नहिना ओइगनिन मूठक नाजा कामेश्वर गकुनक पुनवज ओएगकुनक स्थापति 'ओइनी' (ओएनी) गाम आई-काई समस्तीपुनक नाजपुन थानामे पुसानोड स्टेसनठा ओइनी-वैनीस पुनसिद्धि अर्छा एहि वंसक नाजा शिवसहि पति देवसहि अपन नामपन 'देवकुषी' गाम स्थापति कए, जे आई ठेनीपिसनाय ठा 'देवकुषी' से जानथ जाइत अर्छा । शिवसहि, पयसहि सगक वाट जेथ नाजा धीनगानायसक भाई कुमान ठक्पनीगानायस सेहे अपन नामपन एक गानाम वसाओ, जे 'देवकुषी' ठा 'ठक्पनीगानायसपुन' से पुनसिद्धि अर्छा । धीनगानायसक पात् नाजा जेगहिना नामगदनागानायस ओ कंसगानायस दुनू गोटे अपन-अपन नामपन गाम वा नाजधानी वनाओ वै यकि 'नामगदनापुन' आ 'कंसगानैनी' कवि 'कसी-समिनो', जकन यन्य पहिने कए युक्त छी । नहिना 'महेशपट्टी', 'सुगंकपुन' ओ 'सुगदपुन' के सम्बन्ध कानमः महेशगकुन, सुगङ्कगकुन ओ सुगदगकुनक संग नहथ अर्छा । वेगानाय जधिम नाजा जयसहि अपन ओ पत्नी मङ्गावदेवीक नामपन जय 'जय मङ्गावगद' के स्थापना कए, ओहनि गौवगद (वेगानाय), अवैथिगद (पगङ्गि), कटनागद (मुजश्चपुन) आदि

સમ્વન્ધ સેહે ઓળા નાના ઓળાક સંગ ૧૯૭ અર્થ વહિનક મથિધિક્ષેત્, મગય ઓ મોળપુનક્ષેત્ અથવા વહિનક વાહન નાનાસ્થાન પુનઃગમિ સ્થિતિ 'પાથી', 'પાઇ' વા 'પાઇ' સ્વદ્યુક્ત ગામસગક સમ્વન્ધ કદાયતિ પુનાયોગકાઠક પાઇવંશીય નાનાસગક સંગ ૧૯૭ હેરંહા, નાહુ સમ્પ્રાવગાકે ગકાનઇ ગહિ ના સકૈષ્ણ હેમે અર્થ મથિધિક 'પાથી', 'પાઇપાથી', 'ધગશ્યામપુન પાથી', 'નાનીપાઇ' આદિગામ ।

'સુગૌના' પહિને સુગૌનમૂઠક વ્નાહ્મસ પમીગદાન ઓળાક ગામ ઘઉં, પાપ વાદમે ઓરંગિવાનમૂઠક એક વ્નાહ્મસ શાપ્પા સૌ આદિવસઇ । ૬ ગ્નામ મયુવની પાધિમે કપઠિસ્વનસ્થાન ઓ અવસ્થિતિ અર્થ । એકન પૂવમે ગામતીકાન વૃદ્યવાયસ્પાતિ મશિનક આશ્નપદાના ગવન શાવાવ્દીક નાનાગ્ગક નાનાયાની 'ગગવાન' સે પુનસદિય અર્થ, 'મે' ઓહિ સમય ગ્ગાપટ્ટી આદિ ગામક ૧૯૭ હેપા । એ કોટક ગામસગમે અવેન અર્થ પગાસહિ, શક્તસહિ, ઓપ્પમિનાની, ગંગદેવ, નાઘવસહિ, માયવસહિ, દુઠાનસહિ, મહિગાય ગકુન આદિવાના સંસ્થાપતિ પગાપુન, શક્તપુન (શક્તપુન), નાનીપુન, ગંગદવાન (ગંગદુઆની), ગંગોથી (ગંગોથી-પહટ), નાઘવપુન (નાઘોપુન), માયવપુન (માયોપુન), દુઠાનપુન, મહિગાયપુન આદિ

મથિધિ ઓ મથિધિક વાહનક કછિ ગામ વા સ્થાન હેનો અર્થ, પકન ગામકનામ સગાનગયન્મક સામ્પ્રદાયપન નાપ્પઇ ગેઇ અર્થ ।

પ્રથા-

વ્રષિમ્પુન, હાપિન, હાનિગાન, હાદિસપુન, હાપિહા, નાનાયમ્પુન, ગોવ્રિન્દ પુન, મોહનપુન, ચક્નયનપુન, માયવપુન મયવાપુન, શ્યામપુન (મોળા), દામોદનપુન, નામપુન, નામમદનપુન, નામગાન, નામચન્દનપુન, નામદ પાઇપુન, નામદપાઇ, નાઘવપુન, પાપદેવપટ્ટી, વેઇમોહન, ધગશ્યામપુન, ચકની પા (મગવાન્ક ચક્નપન નાપ્પઇ ગેઇ ગામ), ઓષ્મસપુન, મનપુન આદિપાપ વ્રેષ્મસગામ થકિ, ઓળા શૈવગામમે પુનમ્પ અર્થ

શવિપુત્ર, શવિગંગા, શકુતપુત્ર, શકુતસનાય, સમન્થાશ્રામ, મહાદેવગંગા, મહા દેવપુત્ર, મહાદેવ, નુદ્નપુત્ર, રૂક્ષાચક્ર, રૂક્ષપુત્ર આદિ એહી નામે શવિપત્ર્યાયનગ નામપત્ર નામ્યથ ગેઠ નામ યકિ કુમારપુત્રા (કાન્તકિયક નામપત્ર), ગંગપત્રિયા (ગામ્પેશક નામપત્ર), વનદહટ્ટા (વસહ વન વા ગન્દીક નામપત્ર), ગંગાગંગા (ગંગાગંગ પત્ર) આદિ । નહિના શાક્ત-સામ્પ્રદાયકિ ગામમે પત્રગામ્પેશ યકિ મલાગીપુત્ર, મગાવતીપુત્ર, ઇક્ષ્મીપુત્ર, શાનદાપુત્ર, શક્તપુત્ર, દુર્ગાપુત્ર, દુર્ગાગા મ્ત્રા, ગંગાપુત્ર, કમલપુત્ર (કમલપુત્ર-વર્ધિશ્રામ મર્ગિન અર્ચા), ઉમગાંવ (ઉમાગાંવ), અપત્રામા (અપત્રા), પાત્રગાંવ (રૂ પાત્રવતીગાંવક અપત્રાંસ વુદાશ્રા અર્ચા), કાઠીપુત્ર, કાઠકીપુત્ર, સીતાપટ્ટી, સેનપુત્ર આદિ સૌગામમે સૂનાગાઢા, માત્રુપુત્રા, સૂનાગંગા, નવપ્રિયહી આદિ પાત્રા ઉત્તેયમીય અર્ચા ઓત્રાહી 'વહનિપુત્રા' નામક ગામકે 'વહનિપુત્ર'ક અપત્રાંસ માર્ગ સકૈષ્ઠ છી ।
પાત્રા

કિ
હુમાનગંગા, મદના, મદનપુત્રા, વનહમપુત્ર, વનહમપુત્રા, વનહમોત્રાના, યાગપુત્ર , યાગપુત્રા, યગૌત્ર આદિ સેહે પાત્રા હુમાનગા, કામદેવ, વનહમા ઓ યગ્નમાક નામપત્ર વસથ ગ્નામ પુત્રીત્ર હેરચ, ઓત્રાહી દેવહાન, મગાવત્રાગપુત્ર આદિ સામાન્ય દેવતાપત્ર આયાત્રિ ગામ કહથ પા સકૈષ્ઠ ।

કષ્ટિ ગામક નામ નં અસ્ત્રા-સસ્ત્રા અથવા યાત્રુપત્ર આયાત્રિ કોનો વ્રશિષ કાત્રામે નામ્યથ ગેઠ હેરત્રા, પેગા કિ માત્રપટ્ટી (માત્રા), કનૌય (કનૌય), નવત્રાત્રિ (નવત્રાત્રિ), કુત્રહાત્રિ (કુત્રહાત્રિ), ઘેહા (સૌનાઠ), ઘેહા (મલાગીપુત્ર), સોનાઠી (સોના), નુપેઠી (નૂપા), નાગપુત્ર (યાગ્દી), નાગપુત્રા (યાગ્દી), સોગપુત્ર (સ્વત્રામા) આદિ ।

-૬-૦૧ ઉદ્યગાથ હા 'અશોક'- વ્રીય આયાત્રા, કેન્દ્રીય સંસ્કૃત
વ્રશિવવ્રદિપ્રાપ્ત, સ્ત્રીસદાશવિ પત્રસિન
પુત્રી (ઓડીશા) ૭૫૨૦૦૧ (મો- ૮૮૮૫૧૨૨૩૧૨)

अपन भंगवूये दगिगीठिसगाउडब्रह्मिहोगाभियोग पन पडाउ।

इंसंगोष कुमान नाथ 'वटोहि'-मंगलौगा (एगानहम पेप)



संगोष कुमान नाथ 'वटोहि'
मंगलौगा (एगानहम पेप)

शुकशुकिया ठाईट जैन नहथ छै मंदनि पन। नसगा मे वाँस पन मनकरी ठागठ छै। मंदनि पन ठाईटगि गोक गीक ठागानहथ छै गकन गकान गही भोग हनपति गस गेठ देयिकस । माँ दुगगा मंदनि मे आयठ छथी मंदनि केन गव्रपता वेजोन छै। अर वेन मेठा जमौ। सनपिहुँ माँ आयठ छथी

अर वेन माँ कैं माटी-मंगठ मे देन गस गेठगही नाम हृदय वावा कैं मुखठा सँ माटी-मंगठ कैं गथिमे हेनखेन कनस पडै। कठस स्थापन सँ कछि दनि पहनि माटी-मंगठ केन काण केठ गेठ । मंदनि तँ वगिगेठ छैगह माय कैं , पनअय पठसगन वाकी छगही टाकाक कमी केन कागस मंदनि मे पठसगन गहु-गहु गगिसँ गस नहथ छै। माँ सेनावाथी अपन काण कनवा कैं छोड़गिह। देन हेनौ , पनअय पठसगन पूना गस के नहौ।

मेरा छेठ जगह केँ कमी नस रहै छै। मंदिर केँ समीप बाँधे मे मे मे बाँधे
सग प्रजाप, गेहूँ, मेहरी बाग कस दैत छथिन्ह। जगसंप्रदा वढे सँ मेक
कमी नस रहै छै। तँ जगिक मे छथिन्ह ओ अपन मे सुसठ वौ कने
कनानिह याहे दुनू पा पूजा समिति केँ नीक ठगैह वा नही

अपनी धन केँ स पान नही भै। सगसग ठेक केँ केस मे नाम छन्हि आर
नही काँह जगह पाय पड़नही नवदुनू पा पूजा समिति केँ पक्ष कमजोर
नस रहै छन्हि दोस पक्ष मे कस नस रहै छथि जे कयो हनिका दिस सँ
छटिका गेठ छेठ, हुनका कमवठ दसके मगैठ जा नस छन्हि २ नीक गप
छथि जे कछु ठेक केँ वठ पावकिस से न माँक-माँक कहै छेठ जाह।

२ छथि जगि पापद 'नामानंद नाथ' । २ कथन साठ सँ कहै छथिन्ह मेरा
नही ठगै, पनय हनिक गपक कोनू भेठेन नही छन्हि आग गाम मे
जगि पापद केँ आगा-पाँछा दस ठेक नही छन्हि, पनय हनिका आगा-
पाँछा सुनना छन्हि नाजगि केँ कहै छै से सग कयो अपनी धन
नम मे छथि युवावक वाद जगना केँ काज केँहिन जीन जेनाह से संभव
नही नही छै ।

अर वेन संतोष पयपन हजान टाका मूनपि नय छेठ देठथिन्ह। सग कछु छेठ
ठेक अठा-अठा यंदा दैत छै। माँ-मंगठ छेठ अठा, कठस यात्रा पूना मेठ
पन कठस ननहिनो न सग के सनन पीअवे छेठ अठा । हन दनि आयापुनी,
दुनू सपनासी पाड केँहिन पैंन, पुजेनी, वगैह छेठ सुवाहन पनय छेठ
अठो यंदा ठेक दैत छै। सग कछु छेठ यंदा देनहिन ठेक अपन-अपन वनय
वुक कऽ छेठ आओन बुक कऽ नस छथि माँ दुनू कनिको ननास नही
कैत छथिन्ह। माँ केँ सक्ता अपनपान छन्हि।

"सूदधागुगाम , येयाग देवै ! मगहिना मे पुनुष कें पनवेश वनूजति छै। गवहुगुग पूजा समति किं जोक कानकना छी, सग कयि अपन-अपन ड्यूटी मे लागि जाऊ। मेरा मे गीउ वढि रहै छै। २ दाता छथि - सुनेस नाम पति। काथिदास घोघड़िया गिरासी, माँ शेनावारी कें याम मे एक सैअ टाका अन्पति केअगिऐ, माँ हुगुग हुगका सग पनविन कें पुस कानहिग हुगुग पूजा समति। मंगनौगा सह कामना कनै अछी।" एके साँस मे कसिनदेव जी वज्रहा।

मंगनौगा गामक मेरा गामो छै। मेरा मे मैर हेवेटा कान। कछु उशुआ छोड़ा उड़की सग कें छेड़। दैर छै। अर वेर ओकना मनपेटा मैर ओग छै। पोत-पोत कें तोड़ जाला छै। मेरा मे तोड़स द्वाग वनौठ जाला छै। अर वेर तोड़स द्वाग मे पोस्ट जग छेठे जालि मे गवहुगुग पूजा समति छिपि छेठे। ३ 'गवहुगुग' शवदकोश पोछा कछु नाग छुप छै, गहिण पहिने सँ ३ शवद रहित। अर पोस्ट मे तीन गोटक ओटो छै - हुगुगपूजा समति कें अय्यक्ष साहेव कें, सयवि साहेव कें आओ कोषाय्यक्ष साहेव कें। आव हुगुग पूजा मे 'आईउटटी' केन उड़ा गऽ रहै छै। 'मुँहपुनपी' केन वेर गाम मे शीतयुद्ध छड़ि छै।

शाग्निकिअ कें जग वेर मैर गऽ सकऽ। सूदधा-गकनि सगहक गोक ने जोन मानऽ जगैए से 'अहिसा पनमो यन्मः' सग कयि गुठि गेठ छथिगह। मानयाड मे ओक कें वसिवास वढि रहै छै।

-संगोष कुमार नाम 'वटोहि', ग्राम - मंगनौगा

अपन मंगल्ये दतिनीति सगाड वटिहवा माविओम पन पडाउ।

३३संगोष कुमान नाथ 'वटोही'-समीक्षा- जगिगी गान वनगिगी



संगोष कुमान नाथ 'वटोही'

समीक्षा- जगिगी गान वनगिगी

कथा :- जगिगी गान वनगिगी-कथाकार :- जगदीश प्रसाद मंडल

समीक्षक :- संगोष कुमान नाथ 'वटोही'

जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथा 'जगिगी गान वनगिगी' एकटा मान्मकि कथा अछी सेवा-नवित्वाक वाद हेमंग कुमान आओर हुनक पत्नीक यगि किवुदाड़ी मे कास जाय, ई सही छगही मूमंडलीकाम के अई दौन मे टाका सग कछि गस गेब छै। ओक टाका केँ यगिहै छथिहै। मनुक्यक वेवहा

वदथि नहथ छै। वृद्ध मेथक वाद कनिको कयिो दैपनिहिन नहिनहि जायत छै। ई पैघ सामाजिक समस्य़ा वर्गगत अछथि ई यति। हनिकन जायत छन्हि एकटा माय-वाप केँ दैपनिहिन कयिो नहिन आओन एकटा माय-वाप अपन सभ संताग केन हगनी-मगनी सँ ठसकस सभ कछि कनैत छथी। 'जायत जो गुँहा-मगना आओन मुश्क पन दुधा मगना' कहथी सनपिहुँ सय नस नहथ अछथि।

हेमंत कुमार आओन नश्माँ वाँह नहिन छथी। हनिका दूटा वेटी छन्हि। जिनिकन व्याह नस गेथ छन्हि। पनभूय ओ दुनू पनानी यति। छथी। जे बुढ़ाड़ी मे हम कतस जात। आन दैसक नहिन बुद्ध, ठेकनि मथिथि मे आओन मान मे ई वड़ पैघ समस्य़ा वर्गगत अछथि। जे माय-वाप संताग छेथ वोह वर्ग नहथ अछथि। अथै ब्राँडा समय मे ई समस्य़ा आओन ब्रिक्किनाथ नूप यातस कनत। ई समस्य़ा सभ वृत्त, जात आओन क्षेत् मे गहु-गहु जात सँ छैथ नहथ अछथि।

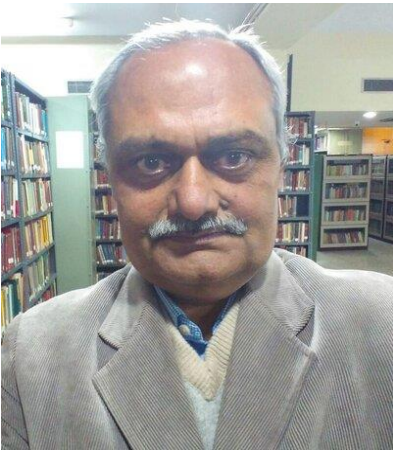
टाकाक कनै केन आपायापी मे माय-वाप के गुँथ जेगाय कनौ उयति नहिन कहथ जा सकत। मनुक्यक मूथ वदथि नहथ अछथि। टाकाक आगा मे ठेक पनविन आओन समाज केँ गुँथ नहथ छै। समाज मे अनेक वृत्ति छुथ छै जे कयिो कनिको जात। पन कछि कहनहिन नहिन। मगनी केन हगडा केँ मोथ छेथ। वेटा माय-वाप के मान नहथ छै आओन समाज ओकन वडिओ वना नहथ अछथि।

अगत संपत्ति मे संतागक अयकित होत छै, तँ बुढ़ाड़ी मे माय-वापक सेवा-दहथ कनै, अंगमि साँस यन दैपनाथ कनै संताग केन कनतवृत्ति टा नहिन छन्हि, वथकि ई कागनग होमक याहि जे माय-वापक सेवा कनै अगतिनय हसत। संवधिग मे गैतकि कनतवृत्ति केन नूप मे ई जोड़थ जेवाक याहि आओन माय-वापक सेवा नहिन केनहिन केँ ठपिति वा भौषिक शक्तिय पन कम-सकम दु-यानि साँसक सजा हेवाक याहि।

-संगोष कुमार नाथ 'वटोही', ग्राम - मंगनौगा

અપન મંત્રણે દર્શિતો નિષ્કાસના ઉડવદિહાબા માધિયોમ પન પડાઉ ।

રૂઝનવીગદ્દન ગાનાપ્રાસ મશિન- માનૃશૂમિ (ઉપગ્ધાસ)- રપ મ પ્લેપ



નવીગદ્દન ગાનાપ્રાસ મશિન

માનૃશૂમિ (ઉપગ્ધાસ)- યાનાપ્રાહિકે

૨૫

ખાનગીયામ પૂંછીયાક વાદ ખપ્પાના ગાગવાવાક સંગે નહા ઇગાહા ।
શાનદાકુંખમે આયાત્પણીકેં ર વાગ પના ઇગાહા । ઓ પુતીકુષામે નહથા ખો
ખપ્પાના અપને અણાહ । મુદા કૈક દિન વોના ગોથાક વાદો ખપ્પાના આયાત્પણીસેં
મેટ કના નહા ગોથાહ નં હુનકા નહા નહા ગોથાહ । ઓ સ્વયં શિષ્યસગક સંગે
ખપ્પાનાસેં મેટ કનાવાક હેન ગાગવાવાક સ્થાનપન પૂંછીયાહ । ગાગવાવા ઓહા
સમય ઓહા નહથા । ખપ્પાના અપન શોયગાંથકેં વ્રમીયન હેન પુત્તના
કનાવામે વ્યસન છાહ ।

આયાત્પણીકેં સામનેસેં અવૈન દેખાહુનકા નૃપક સીમા નહા છાહ ।
ઓ તુનાં ડહાહુનકા દમ્હવના માર પુત્તનામ કેથાહ ।

"કુષમા કનાવ આયાત્પણ! હમ અપનેસેં અપ્પન યના મેટ નહા કા
સકાહું । સોયેન નહા ખો પુત્તનાક વ્રમીયન કનાવાક અવસેનપન અપનેસેં મેટ
હેના ।"

"કહાશા છેક વ્રમીયન?"

"અપનેક સુવચિનસાને તથિતિય કાપ જાના ।"

"વદાશાં હેના ખો કાઠીકાગ્નોસેં પુછાથે જાના । અહાંક ગોથાક વાદ
ઓ કાપ વેન પુછાની કાગ છાહ ।"

"આયાત્પણ! સત્ત્વ પુછા જાના નં હમ સંકોચવસ ને અપનેસેં મેટ
કાપ સકાહું ને કાઠીકાગ્નાક સામને જાનાવાક સાહસ મેટ?"

"સે કી?"

"હમ નં ખાનગીયામ છોડીકા ગામ યથા ગોથા નહા । મુદા પનસ્થિતિ

एहन भेठ जे हमना गागवावाक वाग मानलए आवए पड़ै ।"

"जे भेठैक, से भेठैक । जागकीयाम अएवाक हेतु ककनोसँ पुछवाक काज नहि होइत छैक । ई तँ सगहक स्थान अछी।"

"आयातृपत्र पुस्तकक प्रमोचनक सग मान अपनेपन अछी अपने जखन उपयुक्त वही नखने एहि कातृपत्र संपन्न कएल जाएत ।"

"एहि शुभकाज केँ जातेक जई कएल जाए जातेक नीक ।"

"छेन अपने काषिकाग्नसँ प्रमोचन कए आगूक कातृपत्रक आदेश देल जाए ।"

"ठीक छैक । हम आइ भेट कनवनि ।"

नकनवाए आयातृपत्र काषिकाग्नसँ भेट कए सजवात कहलनि । काषिकाग्न एहि वागसँ वहुत प्रसन्न नहथी जे जयन्त जागकीयाम घैटा गेवाह ।

"मुदा जयन्त अपने कएक नहि अएवाह? "

"ओ अनो आवए याहैन नहथी । मुदा।"

"मुदा की? एहिठाम अएवामे हुनका कोन अवगोच?"

"से सज की नहानि । ओ पुस्तकक प्रमोचनमे व्यस्त नहि गेवाह । हमनोसँ भेट नहि कए सकैत नहथी।"

"ओ! आव वृहस्पतिक ने असवी वाग । यँ हम अपने अहि संगे यवैत छी ।"

काषिकाग्न यंदूकिकेँ वज्रओठनि आ गीनूगोटे जयग्नसँ भेट
कनवाक हेतु गागवावाक स्थान पर पहुँचि गेबाह । संयोगसँ गागवावा कतहु
गेठ नहथि ।

काषिकाग्न संगे यंदूकिकेँ देखि जयग्नकेँ तँ जेना कनेट भागि
गेठनि । ओ अयप्रथम छोड़ि गइ गए गेबाह । काषिकाग्नकेँ अगवाहन कनेट
छबाह कि यंदूकिकेँ टोक दिअनि-

"अहाँ तँ हमना साथे वसिनि गेठहुँ ।"

जयग्न कछु नहि वाजिसकबाह ।

यंदूकिक सौंदर्य देखैत वगैत छथ । जयग्नक इच्छा भेटनि जे
हुनका कनी गोकसँ देखी । लोक दनिपर भेट भेट नहनि मुदा संकोचवश मुड़ी
नहि उठ सकबाह ।

हुनका दुनूकेँ गप्प कनेट देखि काषिकाग्न आ आयात्प्रव्र सहति
गेबाह ।

"अपनेक आत्मा होइ तँ काछहि अपनेक सभा मंडपमे एहि पुस्तकक
ब्रम्हियन संपन्न कएत जाए ।" - आयात्प्रव्र वज्रबाह ।

"अवश्य कएत जाए ।" - काषिकाग्न सहमति दैत वज्रबाह ।

- नवीनद्वीप गानायाम मस्ति, पतिका नाम: स्वर्णगीय सूत्र गानायाम मस्ति,
माताक नाम: स्वर्णगीया दयाकाशी देवी, वरस: दत्त वृष, पैतृक नाम: अडेन
डीह, मातृक: सविधा आ ड्योढी, वृत्ति: मानव समाजक उप सचिव
(सेवागविद्वान्), संप्रेषण मेट्रोपोलिटन मजसिस्ट्रेट, दक्षिण (सेवागविद्वान्),
शक्ति: यंदूकिकेँ मथिषि महवद्विधाधसँ वीरस सी गौतमि वज्रभागे

પનાષિઠા : દરિયો વસિવવદિયાઉપસં વધિ સિનાતક પનાકાશાનિ કટાઃ
 મૈથાષિમે: પનાકાશન વૃષ:૨૦૧૭ ૧૭૦૧સં સૌદ વર્ષિ (આત્મ કથા), ૨
 પનાસંગવસ (ગવિય), રૂસવૃગા પાદિ અર્થિ (પાત્ના પનાસંગ); પનાકાશન
 વૃષ:૨૦૧૮ ૪ શુસાદ (કથા સંગ્રાહ) ૫ ગમસાસૈ (ઉપગ્યાસ) ૬ વવિયિ
 પનાસંગ (ગવિય) ૭મહાપા(ઉપગ્યાસ) ૮ભાકોટા(ઉપગ્યાસ); પનાકાશન
 વૃષ:૨૦૧૮ દંસીમાક ઓહિ પાના(ઉપગ્યાસ) ૧૦સમાયાગ(ગવિય સંગ્રાહ)
 ૧૧માતૃમી(ઉપગ્યાસ) ૧૨સવૃગલોક(ઉપગ્યાસ); પનાકાશન વૃષ:૨૦૨૦
 ૧૩સંપાદ(ઉપગ્યાસ) ૧૪૩૯૬ થાકિ પીવગ(સંસમના) ૧૫ઠૈા
 દેવાઇ(ઉપગ્યાસ); પનાકાશન વૃષ:૨૦૨૧ ૧૬પાથેય(સંસમના) ૧૭હમ આવા
 ૧૮ઇ છી(ઉપગ્યાસ) ૧૯પાઇક પનાગ(ઉપગ્યાસ); પનાકાશન વૃષ:૨૦૨૨
 ૧૯વીગાગિઇ સમયા(ઉપગ્યાસ) ૨૦પનાવિમિવ(ઉપગ્યાસ) ૨૧વદઇ ૧૮ઇ અર્થિ
 સમકછિ(ઉપગ્યાસ) ૨૨નાષ્ટ ૧ મંદિગિ(ઉપગ્યાસ) ૨૩સંયોગ(કથા સંગ્રાહ)
 ૨૪ગાય ૧૮ઇ ઇવિ વસ્યા(ઉપગ્યાસ) ૨૫દીપ પાતૈ ૧૮૫ (ઉપગ્યાસ) ।

અપગ મંગલ્યે દર્શિગાઇસાગાડવદિહાગામાયિયોમ પના પડાઉ ।

રૂપકુમાન મનોગ કશ્યપ-ઓ દયોયા



कुमार मनोण कश्यप

१ टा छवुकथा

ओ दधीया

वसोयन कनव कोनो आम वात नस छै नही; नाहू मे अपन मुइठा के वाद ओकना
 पंयायनक वीय पूना पनविन के उपस्थिति मे प्योठि सान्त्वणक कनवाक वात
 ओकक कौतुह संगे जगिमासा वढ़ा देने छथै। आ सैह काम छथै जे कना-
 माछ-मासु के प्नात ठाठ-कका के दठन पन ठेक सह-सह कनय ठाठ। जुगे
 भाई आ हुनक कनयिँ के कोनो उग्टा-पुग्टा के सहज जमान नस गेठ छठगि
 तै भोग प्पुछायठ - नन-नन कतै! नन सना वीय ठिखिख प्योठ गेठ आ
 सनपंय वसोयन पढ़ि सनके सुनवस ठाठ। - "हम अपन समूनास होशोहवास
 मे वसोयन कतै छी जे हमन समूनास संपत्ति मे हमन वेटा-वेटी के वनोवनी
 के भागीदानी होतै।" सुनति कछि ठेक थपड़ी वजोठक, केयो कनखुसकी सुनू
 केठक। जुगे भाई शुक पड़ि गेठ। मुदा कनयिँ सस आवेग समहायठ नही
 जेठगि - "हम नस जगति छथिँ जे वुड़हा दू-याठि छैथुँह-भून कतै छै वेटा-
 पुनोहू आ " अपन भोगक नडास ओ आओन नकिावार्थि ओहि सस पहनि
 उन्मि अपन हाथ सस हुनक मुँह वग्न कस देठक - " वसससससस. भौजी

आव गही! “ वावू ने हमना अपन संपत्ति में हस्तिता देवता; मुदा हम मन में पंथापन में अपन सन हस्तिता आहों के दै के घोषणा करै छी। हमना कोनो संपत्ति के छोड़ गही छोड़ अछि एतवे जो हमन गहीना वगैर है।” ओ हवोदकान हयिक-हयिक करैत रहै छी ।

थोपड़ी के गड़गड़ाहट कछु काठ चुपपी छेन कनकुसकी। मनगिमान में यन्या छैत नस वस एकते।

-कुमान मनोण कश्यप, सम्पत्ति: गान सनकान के उप-सयवि, संपत्ति: सी-११, टाव-४, टाव-५, कदिवर गान पूर्व (दिवि हाट के सामने), नई दिवि-११००२३ मो टट१०८१८५० ८१७८२१६२३८ ई-मे: गैतिनोकमानोणमाधियोम

अपन मंगल्ये दितोनादिनाउद्विहोमाधियोम पन पडाउ।

इंद्रनिमिष काल- अग्निशिखा (पेप-१७)



निमिष काल (१८६०-), शिक्षा - एम् ए, गैहरी - प्यारापुन, दानाडा, सासुन - गोदियाली (वधवा), वर्तमान गविस - नाँयो, हानपामुड, हानपुंड सकाई महिषा एवं वाठ विकास सामाजिक सुरक्षा वसिगा मे वाठ विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँड सेवानिवृत्ति उपानाग स्वतंत्र छपन।
मूठ हर्दि- स्वर्गीय जतिगुन कुमाई काल, मैथिली अनुवाद- निमिष काल

अग्निशिखा (भाग - १७)

पूर्व कथा:

गाजा पुनरा के वधिकस वीनाक काल देवताक वज्र दागव गाज केशी पन मेठ। एहि काल संप्रकृष के सम्मति एवं गगनाग वषिष के आकाशवासी सन्देशक काल गाजा पुनरा के स्वर्गक अद्यासग प्राप्ता मेठगि मुदा पुनराक आकांक्षा नस उत्पत्ती छीह ठ

आव आग:

अननावरी के वसिष्ठ मनोनाग कक्ष, एहि समय सद्यःपत्नीगा सग अंकुष छठ ठ देवताक दागव पन गानी वज्र के उपवक्ष मे आई एहि प्रेक्षागृह मे वक्षनी-स्वयंवर गाटिका के पुनराग मेगाई नित्यानि छठ ठ अप्सरा नंगा के गाय संग आन वहुत नास मनोनाग कान्यकन होमय

के छैक ७ गनग मुनि विरिया केउ उपनांग एहि गोटिका के ययन केउगी ययन उपनांग अन्ध्र पश्चिम संस पात्न के ययन कनै हुनका सन संस अन्ध्र संस कनैउथि ओ। गोटिका के पुनर्दशन गुण्टि हिन होइ एकना पन वरिष ययन नहनि गनग मुनि के। ओ स्वयं उक्ष्मी-स्वयंवन गोटिका सन पात्न के ययन एहि अवसन हेतु कएने नहथि ओ संगहि ओ स्वयं एकन गनिदेशन के दायित्व सम्हनैउथि ओ एक-एक पात्न के ययन ओ योग्यता अनुगुण कएने नहथि।

"उक्ष्मी" के अगनिय हेतु उत्पत्ती के ययन कएने नहथि ओ गनग नस एहि कायकर्म मे ओ गनग उभय गहियाहै नहथि, कएक नस ओ अपन एयुनका स्थिति मे अगनिय कनैउथि समन्थ गहियाहै नहथि ओ मुदा गनगमुनि के द्वाजा हुनक ययन कएने गेउ छैउ उपयुक्त पात्न मानि, आ इन्द्रेय पुनस सहमति छैउ एहि मे। एहि पनस्थिति मे ओ वगैर गहिकस सकैहै। ओ अगनिय पुनवक एहि काय हेतु पुनसुत गेउ छैहै ओ

सन देवतागाम के वैसवा हेतु उयति आसनक व्यवस्था कएने गेउ छैउ ओ गनगमुनि के वासने वरिष सहिसन नायने गेउ छैउ ओ अगनिय मंथ के गनिमास हेतु स्वयं वरिषकर्म उपस्थिति गेउ छैहै ओ संपूर्ण दनि एकन व्यवस्था मे व्यतीत गेउ ओ सन देवतागाम एवं ऋषिगाम गनियति समय पन मनोनाम कक्ष मे उपस्थिति गस गेउ छैहै ओ अपन-अपन गनियति आसन पन सन देवतागाम के वैसवा उपनांग कायकर्म के पुनंग कएने गेउ ओ कायकर्म के पुनंग मे देवतागामक वणिज-गाथा के ओगपुनस वनस गनग पुनवा अपन वक्तव्य मे केउथि ओ गनपस्यान इन्द्रेय अपन वक्तव्य देउथि। वक्तव्य के उपनांग हुन गेउ एकहि सहिसन पन वनिनाम गस गेउहै ओ देवर्षि गनद अपन वक्तव्य मे पुनवा के संपूर्ण जीवन गाथा कही देउहै ओ एकन उपनांग गनगमुनि अपन उक्ष्मी-स्वयंवन गोटक के वरिष वस्तु के मे पुनंगक कछि शब्द कहैउहै। गोटिका के पात्नक पनिय देउहै, गनपस्यान ओ अपन आसन पन वैस गेउहै ओ गोटक के पुनंग के मंगल गन्य गेउ ओ गेपथ्य मे वैस ओ सौन्दर्यवती उत्पत्ती गनग पुनवा के

देवता हेतु आकुल-व्याकुल बस रहै छीहै ओ मुदा ओ गेपथ्य मे रहवा ऐव
विविध छीहै ओ अगिनिय पुनर्दशन के पुनर्दृष्टिका वाहन गकिधस के अनुमाना
गहै छैछैहै, एहि कागस ओ अपन भोग मसोसने वैसै रहैहै।

भोग गृह्य के वाद देव व्रजिय केन गालोपादक गाग गृह्य शैली मे भेगका
पुनर्दृष्टिका के छैहै ओ उपस्थिति सग दृशक एहि गृह्य के माध्यम संस
पुनर्दृष्टिका हांकी मुग्य बस देवस ओगथि ओ कतेक वास्तविक रूप संस पुनर्दृष्टिका
दृश्य पुनर्दृष्टिका भेव छै - भेगकाक गृह्य शैली मे! सव दृशक "वाह-वाह"
कस उठथि ओ मुदा नाजा पुनर्दृष्टिका के मुप्य पन कोनो व्रजिय गाव पुनर्दृष्टिका
गहै छैछैहै ओ वहु गंभीर दृष्टिका बस रहै छैहै ओ

इहँ गृह्य पन व्रजिय होश जोनदान नाथि वजा उठथि ओ ओ अपन
दृष्टिका घुमा पुनर्दृष्टिका के देवथि, मुदा हुनका अग्र्य गंभीर देव
आस्यप्रत्यक्षिता गाव संस पूछस ओगह - "कहां गुमि गेछुं नू-मंडेसुवन!
आहँ तस अगि गंभीर पुनर्दृष्टिका बस रहै छै! की कोनो व्रजिय वाग अछि?
अथवा पृथ्वीवासीक यति होमय ओग ओ अपने के?"

"गहै देवायपि ! हमना पृथ्वी वासी के पुनर्दृष्टिका को यति गहै अछिहम ओतुका
शासन व्यवस्था संस पुनर्दृष्टिका संतुष्ट छै ओ एहना स्थिति मे हमना पुनर्दृष्टिका
यति कएि होय ? वस भोग गहै ओगि रहै अछि, एहि कायकाम मे" -
पुनर्दृष्टिका के मध्य भोग घनीभूत बस उठै ओ

आव उच्छ्वसी-स्वयंवर गाटक पुनर्दृष्टिका होमय जा रहै छै ओ एहि गाटिका मे
गाग ऐम वाथि मुप्य अगिनिय उव्रशीक सवप्रथम गंगमय पन पुनर्दृष्टिका
भेव। ओ इहँ एवं नाजा पुनर्दृष्टिका के वेना-वेनी देवथि पुनर्दृष्टिका हुनका दृष्टिका
पुनर्दृष्टिका पन केदृष्टिका बस भेव ओ पुनर्दृष्टिका एवं उव्रशीक दृष्टिका आपस मे एक-
दूसर संस एक वेन कछि कषम ऐव एहन भविष्य किहुन गोटे एक-दूसर के
देवता रहै गेहै ओ पुनर्दृष्टिका के ओग ओग ओ अपन के वसिनाय ओ जा रहै
छथि ओ गाव व्रजिय बस गेहै ओ ओ उव्रशी के हृदय मे पुनर्दृष्टिका पुनर्दृष्टिका
यतिगो गडक उठै ओ ओ अपन के अगिनिय कनवा मे असमर्थ अनुभव
कनस ओगथि ओ उच्छ्वसी यति एवं अपन संवाद पुनर्दृष्टिका रूप संस वसिना

गोथी पुनूवा के अनिर्दिष्ट हुका कछु पाद गहिराईनी अपन सुधा-वुधा विसागि ओ असहाय सन एम्ह-ओम्ह-एट्टि घुमा देय्पथी, पुनः टकटकी छा पुनूवा के देय्स छाछि ओ गनग मुनिगेपथ्य मे जा हुका संवाद के समीप संकेतक द्वाला कनाओ ओ उत्तरी अपन के आव संगानि छैथी ओ गपस्यान मेका एवं गन्नाक प्रवेश मंय पन मेओ ओ आव गीनू कविका के समीपि गप संस गृह्य के वनिनि गव गंगामि द्वाला अपन-अपन गव के दृशक वृंद एक प्रेषण कनाक छैगहि ओ सव कुसओ एवं गव प्रवास अगिनी छैह ओ गहि संस अग्रं कुसओ पुनक अपन-अपन अगिय कनै नहथी उत्तरी के कनिके असुविधा होइ अथवा अग्रमगस्क देय्प गन्ना हुका अपन गन्-गंगामि के द्वाला अगिय के समीप कना दैथि। आव मेका एवं गन्ना गेपथ्य मे गेछि। मंय पन उत्तरी एकसने नहथी। आव एकधमी-रूप यानस कए उत्तरी के एकसने एकधमी के यानि के अनुप छै पुनक गृह्य कनाक छैगहि ओ मुदा ई कथि गस गो! एहन अगन्थ ! अपन सुधा-वुधा विसाने उत्तरी ! एकधमी-रूप यानस कए उत्तरी! ओ नस अपन गेन मे अनुगा गन अपन पुनूवा के गहिरा नह छैह ओ गनग मुनि द्वाला वनाओ अगिय व संवाद ओ प्रायः विसमृता कस युक्त छैह ओ ई देय्पि गटक के आवधिकता मुनिगन के मोन पनि गस गेछैह

पुनूवा एवं उत्तरीक आंगिक गवना के हुक अनुगरी एट्टि क्षम मातृ मे पन्य छैक। अपन अंतरेट्टि द्वाला ओ सव ज्ञान कस छैथी ओ उत्तरीक एहि असामयिक वृष्टि संस ओ कनोवावष्टि गस गेछैथी ओ कनोयक वरीगन गस ओ हट स्नाप दस देछैह-

"उत्तरी आहँ के उगस वृष एक स्वर्ग सस युग होम पन एवं ओकने प्रेम मे वदिग्य नह जेक छै एयनि आहँ के गेन एवं हृदय मे अंकि अछि! आहँ ओ प्रिय मानव स्वयं आहँ के वनिह मे संग पन नह!"

'हा दैव! ई की मेओ! एहन अगन्थ ! आव की होय ! हमना कानस गाजा पुनूवा के अपमानि होम पन' - गनग मुनि के स्नाप सुनिहि उत्तरी दुःख संस

वह्निवत् नस गेथी । उत्पत्ति अत्यन्त दुःखी नस गेथी । ओ सोया १६७
 छत्तीसके गेथी के काम नगिदोष पुनूवा के संग-संग स्नाप के भागी
 वनस पड़गन्ही छत्तीसके मोन वेकत् नस कामि ३३७ । मूच्छति मय मय पन
 यनाशई नस गेथी । देवता गाम में केओ-केओ ई घटना के वृत्ति, अधिकांश
 गहि वृत्ति पओत्ति । अनेक दृश्यक एहि घटना के नस नाटकेक एक अंश
 वृत्ति । इन्द् पत्ति एहि घटना के गहि वृत्ति पओत्ति । नाणा पुनूवा
 पत्ति कछि वृत्ति कछि गहि छत्तीसके ई अवश्य वृत्ति में आए ऋषि
 नानामुनि स्वयं नाणा एवं उत्पत्ति पन कथयति छत्तीस । मुदा पुनूवा जागकारी
 छत्तीसके गहि गेट सकत् । नाटक में स्नापक ई अंश संगतः एकपक्षी आ गगना
 वृत्ति के वासो छत्तीस - पैह इन्द् एवं अन्त अधिकांश देवतागाम के वृत्ति
 पड़गन्ही उत्पत्ति शब्द छत्तीसके संग के काम गीयन गहि गेट १६७ । ह्मा
 स्थिति के समझति छत्तीसके भेका । कनिको एहि वाक अगिमान गहि नस
 सकत्ति कि नाटक के मय कतेक पैह दुर्घटना उत्पत्ति आ पुनूवा के
 जीवनक संग नस गेथी ।

गंदनकानन में आई एकसने पुनूवा आवि गेथ छत्तीस । छत्तीसके ह्मा अत्यन्त
 दुःखी छत्तीसके, अन्त कनिको ओ अपन संग गहि आवस देवपति । इन्द् छत्तीसके
 संग आवस याहपति, मुदा एकसने में अपन ह्मा के स्थिति पन वृत्ति
 कनिको छत्तीसके, नाह कामि ओ इन्द् के आवस छत्तीसके देवपति । संग
 वृत्ति के गीयाँ सुन्द ह्मा गाम पन ओ मूक वैस छत्तीस, शून्य में
 अपत्ति दृष्टि संस देवपति ।

कामसः

अपन मंगल्ये दितिगिदोषनाडवृत्तिहोमाधियोम पन पडाउ ।

રૂઝપ્રાસવ હા- કમગેઢ



પ્રાસવ હા

કમગેઢ

સદન અસપાળ વેગસનાય કે દૃશ્ય ગતિ દિગિ ખેકા સૌસે ગાહમા ગાહમી પસનૅ
અછાિ શ્રોપોડી મે ઇવા ઇશન ઇગાઇ, શ્રોપોડી કક્ષ મે ડૉક્ટન સવ ખઈદી

जउदी अपन मनीज गविटाव' मे ठागठ अछी डॉकटर कक्ष के वाहन ठाइन मे यक्ष्म-मुक्की यथी नहठ अछी कछि गोटे जोगान से ठाइन तोड़ी के डायनेक्ट अपन मनीज के दयावय मे ठागठ अछी वान्ड मे मनीज सव से भेट कयय वठा संवधी सव के एनाय जेनाय ठागठ अछी कतौ कोनो मनीज के नस संजेक्सन ठागठ नहठ छथीन कतौ कोनो मनीज कनाह नहठ अछी

एहनि एकटा ओपीडी कक्ष मे डॉं पुत्रीस अपन ट्पेनी संगे अपन मनीज सव के गविटा नहठ छथाह। डॉं पुत्रीस पोयके साठ सद न अस्पताठ मे सीनयिन कंसर्गेट कम पीजी टियन के रूप मे ज्वाइन केने छथाह। डॉं पुत्रीस सुनए से कुसाग्न वुद्धि आ मेहनती छथाह। यंडीगढ़ पीजीआई से एमडी केठाक वाद फ़नीदावाद के एकटा श्वास्त्र स्टा न कॉन्पोनेट अस्पताठ मे कंसर्गेट के रूप मे कान्यन छथाह। तेसना साठ डॉं पुत्रीस छई मे गाम आयठ छथाह। मोनका पहन जप्पन टहठसे ठेठ गाछी दसि वदि मेठ छथाह न नसना मे यान कक्का भेट जेठयनि। "गोन ठाई छी यान कक्का की समायान नीके छी की ने" पुत्रीस यान कक्का के पै न छू पुत्रास कनै न वजठाह।

"पुस नहु वौआ नहु आवाद गाम नहु कश्चिदावाद" यान कक्का आशीनवाद दैन वजठाह। यान कक्का वहिन सनकान से नटियन मेठ पूनव कान्मकि छथाह आ आव सामाजिक कान्य सव मे ठागठ नहई छईथ। पढवा-ठप्पिवाक सेहे वेस शौय छैन आ वान वान पन छंद मठिगाई मे व्रशिष्टिता नायई छईथ।

आगा पुत्रीस से कुसठ क्षेम पुछईथ यान कक्का वजठाह "की है मोने मोन कानकि मास के सीनठ वसान के आनंद ठेव' ठेठ नकिठठ छह की?"

"हैं कक्का गाछी-वृक्ष के सीनठ वसान के आनंद न गामे मे ने भेटन" पुत्रीस वजठाह

- है प्रवीण बने नू ई वाग उठेह हम तोना से एहि मैटन मे कछि वाग कन याहई नही। देखेह तो जे एकटा प्रस्ताव पन ब्रियान कनह न ई गाछी वग शीतल वसाग के आगंद वानहे महीना छतीसो दगि ठ सकई छह। देखेहक एगवईएमएस गान्ध सनकान सवके जगि अस्पताठ मे डिएनवी आ पीजी मेडिकल डिप्लोमा कोन्स यथेवाक प्रोग्राम आगने अछि जे से कटिेश के जगि जगि मे सस्ता आ नकि गुणवत्ता वग मेडिकल केयन आ पीजी मेडिकल प्रशिक्षण उपव्य कनाओठ जा सकई। एहि कनम मे हमना सग कछि जागूक सामाजिक कार्यकर्ता सव वहिन सनकान के कहि-सुगि के वेगुसनाय सदन अस्पताठ मे सेहे ई प्रोग्राम यथाव' छेठ गीजी केछू। आवेदन प्रकिया मे छैक मुदा अस्पताठ मे योग्य पीजी टियन के कमी के यथे कछि ब्रिगाड के आवेदन अटक छैक। तो शिशुनोग विशेषज्ञ छहक ने आ तोना अनुभव सेहे न गेठ छै। तै हमन प्रस्ताव छठ जे पद के गृहस कन छेठ स्वीकान कनह न हम सनकान से वाग कनी आ कम से कम शिशुनोग ब्रिगाड मे डिएनवी शुरू कनवाक एकटा वडका वाचा पानम होतैक।

- प्रवीण के ई प्रस्ताव पन कछि थकमकाश देखेह यान कक्का पुनः वगैह "है हम वुहई छी से ई डीसीजन तोना छेठ आसाग नईहेन' कए कि आदृशवादी वाग कहगई आ कन' मे अंगन होश छैक। तहिछेठ हम तोह न गिनाय छेठ' के प्रकिया के प्रेक्टिकली कछि आसाग क दैन छयिह। देखेह वहिन सनकान से तोना ओहन दनमहा न नई गेटाह जे फ्रीदावाड के वडका अस्पताठ मे गेट नह छ। मुदा एतय तो सदन अस्पताठ मे काज के संगे अपन क्वीनकि या अस्पताठ सेहे यग सकई छहक। तोना सग योग्य डॉक्टर के क्वीनकि पूव नकि यग तै मे कोनो शक नई। सक्रम ठेक के तोह न यकिगिसा ठग प्रान्सेट प्रेक्टिस से आ गनीव ठेक सव के सदन अस्पताठ के माध्यम से गेटई ऐ से नकि आन की वाग हेनई। आ सव मछि के तोना आन्थिकी रूप से कोनो नोकसाग नईहेनौ से हमन गान्दी छैक। नकना वाग तोना भोग मे होश हेन' वाइस स्टार

के ० क १ देप्पह आव सव ११हक दोकाग दौनी, मॉँ-सगिमा
शॉँपिंग, गेस्टोनेगट आदि सवटा अपगा सहन कस्वा मे सेहे उपव्य अछि
वाठ-वय्या छै गकि गुमवगा वठा पुनर्रेट स्कूठ सव सेहे उपव्य छैक
आ दसमा के वाद १ ओहुगा वय्या सव आव घन से वाहन कोनो कोयगि के छै
जाशे छैक। वदवा मे गोना आ वाठ-वय्या के गनि साठ गामक हवा, गाम-
घनक आनंद, गाँव, रणगा, पुनर्रिग सव भेटौ।

- कक्का अहंक वाग काट' वठा गै अछि, हम गश्चिगि ऐ पुनसाव पु गंगीन
छौ। मुदा हमना ऐ मादे गनिमय १क पहुँय छै कछि समय याहि, घनक ठेक
से सेहे वनिश कनय पडग। आ जे जेगा होयग हम शीघ्र अहँ के सूयगि
कनय

ई कहि पुन्रीम कक्का से बदि छैपनि।

~सोना शटकुगिया हो दीगनाथ हे घूमय छ संसा ० उडस्पीक पु शानदा
सगिहा के आवाज मे वजई ३ गीग के सव छईघाट पु गढ़ उँ पुन्रीम
के काग मे पहुँय १ह छै आ भोग मे धान कक्का के पुनसाव पु तीवगा से
ब्रियान यठ १ह छईह।

कनीव एक महिगा वाद धान कक्का ० पुन्रीम के शोग आयठ छै, ई
वगाव' छै जे हुनका धान कक्का के पुनसाव स्वीकान छै। वस शै की
वागावाम मे साकानामकना आ उसाह के वधान वहनिकिछै। आगन शानन
मे सवटा पुन्रिया सुन भेट, उँ पुन्रीम आव सदन अस्पना वेगसनाय

के शशिनोग वनिाग मे पीजी टीयन के नूप मे ज्वाइन क नेगे छथाह आ ओही साध से अस्पताल मे डिएनवी पीडियाट्रिक्स कोन्स सेहे सुनू न गेथ छथ।

यूँ आव वनमान पन आवी। डॉ० पुनवीस के सामने एकटा अयेन उमनी के आदमी वैसथ छथ आ डॉक्टर साहव के एकटा डिएनवी ट्रेनी ओकन पोती के देख रहथ छथ। ओ वैसथ छथ मुदा सामने नाथथ सूँठ पन गई अपति जमीन पन उकडू वैसथ छथ। श्याम वनमीस आ घनगन मोछ नाथने, ठाट पन ठाका टक्का ठाँवे ओकन येहना पन गोटैक वेन वाग कन के कन मे मुसकाव आवि जाय छथ। पास क के जायन ओ अपन पोती के वाग कन छथ। ओकन येहना आ आंथपन पनहुनी ओकन जीवन संघनष के गाथा कहि रहथ छथ। मुदा शनीन से वरषिड आ श्रुटिफाट छथ ओ आदमी। डॉक्टर साहव के वुहना गेथ रहैग जे ट्रेनी के मनूग समह मे गई आवि रहथ अछि ताहि से ओ ओकना से पुछने छथयनि जे

"ई वययिा अहांक के प्र?"

"पोती हइ साहेव "

"की भेथई प्र एकना?"

महनिा-हु महनिा से पेट हलान रहई हइ साहेव दनद से छटपटा जाय हइ।

"की कनय छी? कन' रहय छी?"

"येनयिा वनयिानपुन गाँव है साहेव, एनई सुटेशन ठा याह-पकौड़ी के थोपया ठावई छी।"

"पहनि अहाँ कुन्सी पन वैस जाऊ पुनवीस प्यापी कुन्सी दसि रसना कनैत
वज्राह

"नई साहेव हम गीक छी जमीन पन उकडु वैसथ ओ वाज्राह

"नै पहिठि कुन्सी पन वैसु ऐ वेन पुनवीस कनी तेन आव्राज मे वज्राह आ ओ
सक्याईन कुन्सी पन वैस नहथ छथ।

नहुपनांग अपन टनेनी डॉक्टर के केस के वषिय मे कछि समहेठा के वाद
पुनवीस पुनः ओकना दसि नकैत वज्राह येनपि वनपिनापुन वहुन दून छैक एन
से न छेन एतेक दून वेगूसनाय काज कन आवै छी? ओतहि कोनो काज कएि नै
कनई छी।

साइकलि से आवय छी साहेव। हमन वावूए ई प्योनया प्योठने नहई। नेनपने
से हुनका जौने साइकलि पन आवईन नहि, हुनके से ई काज सपिठ आ नहिया
से ग्रैह गम ई काज कनई हयिइ।

ई सव कहईन ओकना येहना पन कोनो दुप या पछनावा के गाव नै छथ अपति
अपन पति के संग वीतेने अपन नेनपन के अगुनगी, पति के व्रात्सल्य के
स्वामावकि गौनव अगुनगी ओकना येहना पन औन ओकन आम्प के यमक मे
पढ़थ जा सकई छथ।

डॉ० पुनवीस छेन पुछथपनि एनाई-जोनाइ ठा क ठाजग ४५-५० कठिनीटन
न न जाय हेन, न गामे दसि कएि नै कछि कनय छह।

ओमहूँ दसि ओहूँ मज्जुनी गै भेटई छई साहेव। एग वावू के जमायत काण है
५००-६०० के दगि दहिड़ी वगिजाय है।

वय्या सव की कय ये "वेटी सव वय्याहि दैठियि साहेव वेटा सव दैठि मे
कमाय है।" उँ पनवीस के पनसूँ के जवाव मे ओ वाजत छै।

"कुन क्वास मे पढ़य छहक गुगु" एवनी उँ पनवीस ओय वय्या से पुछने
छै।

"पंयमा मे" ओ छौड़ी नमस्क के वाजत छै

ई सुगिओ आदमी अपन मोछ पन गाऊ दैग वाजत, वड्ड यंट हय साहेव, सवटा
हिसाव कगिाव सुटासुट क छई है।

अय्या एकटा वाग वगाव' गागी-पोगा सव के पढेवहक की गै" उँ पनवीस
के सासु ओकना से वाग कय' मे गकि ठागी रह छै। संगोग से नोगी के मोड़
सेहे कम छै।

"हाँ साहेव पढेवई कएि गै"

"अपन वय्या सव के कएि गै पढेवहक" गोना सव के न आनक्षाम सेहे भेटई
हेग' । दसमा नक पढ़ने हय वय्या सव साहेव, सनकारी रसकुँ मे पढ़ाई
कहन होय छय, दुगो-यागो खानम सेहे मनगे नहय ठेकनि कुछ भेटये गय न
दैठि कमाय छै गेय। हम्मे आन हनजिन मे गै आवय हयि।"

"तौयो ओवीसी मे आवय हेवहक गै १ ईडवयूएस कोटा मे १ एवे कनवहक। तोहनी धिया पूना सव गकि से आनम गै भनगे हेन'। तोना कोनो ने कोनो आनक्षम के भान भेटन' तोना पना छह तोहनी ई पोती वहुन कम पाई मे सनकारी कौँछन से पढ़ि-लिखि कि हमना सन डॉक्टर सेहे वनी सकई छह।"

"हाँ साहव एकना औन के पूव पढेवै हमने"

कछि आन गप सप केन के वाद आ पोती के वषिय मे दवाय आ सगह छेन के वाद ओ अपन पोती के छ क गेट पन अपन आ पोती के उगान यूपप पहिनि गेट से वाहन गेन।

ओकना गेन के वाद डॉ० पुनवीम अपन पीपी सूटकेट से पुछयनि "वनाउ उ कुनसी प्यापी नहईन ओ गियेया किए वैसठ छठ"

सूटकेट के थकमकाश देख ओ कहवाह जे हम वस पूछनिहठ छी।

टुनेनी के कछि उगान सूहठे होय तथापि ओ युपपे नहठ।

"अयछा ई वनाउ जे लोक नास सनकारी योणना सव के वावजूद ई अपन वय्या सव के पढ़ेगाई- नौकनी दएगाई किए गै क पेठे"

"स- आसुवृद्धि क-मनेद सव छै"

"अहाँ के भागे यो ४५-५० किलोमीटर गोण साइफि यथाव'वाथा ओक क-मनेद होय! ककनो टांग टुटत होय आ ओक-मनेद टूटै प-मनेद होय जाय जे दौन न किओ दौग पोय? यहु पहि सवात प-मनेद छी। किए कोनो अ-मनेद वथा गयिआ नै वैसई छै, किए प्याथि गनीव-गुनवे टा गयिआ मे वैसय छै? किएकि ओक-मनेद सव के व-मनेद-व-मनेद यैह समहायत गेथ छै जे गोह-मनेद-ओढ़न, मनेद-मनेद यैह भास छै जे कु-मनेद प-मनेद नै वैस सकय छै। ओक-मनेद ए वाग के उ-मनेद नै छै जे कु-मनेद प-मनेद नै वैसने कही ओक-मनेद दु-मनेद नै जाय जे से ओक-मनेद आत्मसन्मान के ठेस भागई। तै ओ पहिने गयिआ मे वैस नै छै। हम ओक-मनेद से ए-मनेद काठ गप्प क नै छै छै जैसे अहाँ सव के वाग सकि जे जे मनीज सव के उ-मनेद सव मनीज के जोका देये छय ककनो काठ ओक-मनेद से गप्प केथ प-मनेद नास वाग वुहना मे आवय छय। ओक-मनेद पोपया मे याह पीवईन ककन ओक के मोन मे ई आवईन होय जे ई गोण ५० किलोमीटर साइफि यथा के ओ याह दुकान यथा नै छै। एह मनीज के एकटा वृ-मनेद जाय थपि देन मनेद जे जे एक दनि ओक-मनेद जाय के वृ-मनेद यक-मनेद मे व-मनेद केनई आ ओक-मनेद दहिड़ी मनेद। उ-मनेद के स-मनेद एकटा के-मनेद व-मनेद व-मनेद के मनीज के इ-मनेद क-मनेद के याहिए। यदि अहाँ कु-मनेद प-मनेद छै आ कयौ अहाँ के सामने अ-मनेद कु-मनेद गयिआ मे वैसत अ-मनेद ई वाग अहाँ के कयोतवा के याहिए। जे नी मनीज होय ओक-मनेद पहि अपना समागना के स-मनेद प-मनेद मनेद क-मनेद श्र-मनेद ओक-मनेद इ-मनेद क-मनेद आ अ-मनेद अ-मनेद समागना के भाव नापयिओ नै छै नै प-मनेद। याह क-मनेद-मनेद होय कि आम गनीव ओक सवके एक भाव से इ-मनेद क-मनेद के याहिए। अहाँ आ ओक-मनेद मे कोनो व-मनेद श्र-मनेद नै थकि। अहाँ इ-मनेद द-मनेद के कोनो के-मनेद नै नै छै ओ याह प-मनेद के। वेसी उ-मनेद सव साहित्य, संवेदना, द-मनेद आदि के श्र-मनेद आ यकि-मनेद प-मनेद के जे हास्य-मनेद भागय छैथ मुदा ई वाग के

गाँव वाङ्मय छिये जे साहित्य, संवेदना, दर्शन के सबसे बेसी आवश्यकता
वर्तमान के कोनो साम्रा के सबसे बेसी छैक न ओ व्यक्ति-साक्षात्कार छैक।
कसिक व्यक्ति-साप्ताहिक शक्ति के ठीक कान के नाम नै थिक अपूर्ण मन आ
आत्मा के नी आनन्द के देवाक नाम थिक।"

संजोग से डॉ० प्रवीण जामन अपन पीजी ट्रेनी के ई सब वृत्ति सह छल
जामने ज्ञान कक्षा सेहो कोनो छथे प्रवीण के केवनि मे पहुँच छल। डॉ०
प्रवीण द्वारा अपन ट्रेनी के देठ सह सुनि ज्ञान कक्षा के प्रवीण सह
आधुनिक वर्तमान पीजी ट्रेनी पर वृत्ति के अनुभूति भेक्षण आ अपन
समाज के डॉ० प्रवीण सह व्यक्ति-सक आ शिक्षक देवाक अपन कृतित्व
के छेठ अपना मे घोल संतोष आ नृपति-प्राप्त भेक्षण। शक्ति

ऐ नयनापर अपन मंगल्ये दृष्टि-निष्ठता-उद्बोध-व्यक्ति-विशेष पर पड़ल।

इन्द्रायाय नामाङ्क मसुँड-मथिठि के ठाँ: उपन्यास सम्राट
श्रीशिवनाथ गेमु आ पानो



आयाय नामाङ्क मंड

मथिठि के ठाँ: उपन्यास सम्राट श्रीशिवनाथ गेमु आ पानो

१

मथिठि के ठाँ: उपन्यास सम्राट श्रीशिवनाथ गेमु

वसिष्ठ प्रसिद्ध ग्रंथों के उपन्यास मैठा ग्रंथ के शिल्पकान श्रीशिवनाथ गेमु के जनम वहिन राज्य के मथिठियठ स्थिति अनिया ठाँ के औनाही हगिना गाँव में शिवनाथ मंड आ पानो देवी के पुत्र रूप में ०४ मार्च १९२१ में जेठ रहे।

वसिष्ठ साहित्य के प्रथम ग्रन्थ ग्रीष्म षोडश के संवत्सरा, पान्तिनीय
सन्त, गृहस्थ जीवन के दृष्टि आ ग्रीष्म षोडश षोडश षोडश षोडश
कही कोई हो पट्टी है, वन वनी के मोह है, वसन्त आ कपड़ा से दृष्टि में
ऐसे टोकेट, मन से कोसी के धूसर वन आ वन वनी के अमोघ छोड़ा आ
बावना से कान्तिनी गेमु के अस्मद दृष्टि वसिष्ठ है जो हुनका अमन
वनवैत है।

मैरा आंय, पनी पनक्ति, जुलूस, कतिने यौन, दीर्घापा, कंठक
मुक्ताङ्गुली, आदि गान्तिनी महक आ अग्नियो आदि के सृष्टिकर्ता
गेमु साहित्य जगत् में लहक १८५४ में मय गेठ है मैरा आंय के उपान।

गेमु जी गीन गार है, अमीश्वरनाथ, हननाथ आ महेंद्र नाथ।
अमीश्वरनाथ के गीन शादी गेठ है। पहिले पनी गेप्पा देवी है। एगो वैश्वी
कतिनी के जगत् देव के वाद यथ वसठ है। गेमु के दोसर वसिष्ठ पद्मा देवी
स गेठ है। गेमु आजादी के उड़ाई में जीवन हिससेदानी गतिग। जुलूस पौसन
नयना वोकन स्पष्ट प्रमाण है। उड़ाई के वीय में १८४२ में जेह
गेठ। पहिले कटिना जेह आ वाद में गार्गपुन जेह में नयन गेठ है। उहे
हुनका प्रकृषा के शक्तिग गेठ आ यक्तिग के ठेठ पीएमसीएय पटना गेठ
देठ गेठ। यक्तिग के अर्थ में उहा के एकटा गन्स ठाकि के समन्वय आ
सेवागव से गेमु आ ठाकि में प्रेम न गेठ। हजारीवाग में जा के दूग गोने
वसिष्ठ कै ठेठ।

पद्मा गेमु से साग संताग गेठ। गीनटा वैश्वी आ यानटा वैश्वी। मूठ्यः रे
संताग सग गेमु के पान्तिनीय धूनी है। वैश्वी सग है। पद्मपनाग नाथ
वेमु, अपनाजति नाथ आ दक्षमिश्वर नाथ वैश्वी सग है।
नवनीता, नवितति, अमपूना आ वहीदा। ठाकि गेमु से कोनो संताग न है।

पति शशिनाथ मंडल के साहित्यिक नूतन आ जागगीतकि जागगीतका के अमिट छाप गेसु पन पड़ैत। आगे यत के नामदेगी गिनी हुनका जागगीतकि आ साहित्यिक दिसा देपैथनि। अर के काम गेसु कोनो ब्रह्मिपुत्र में बै टकि। कहियो क्षानत्रसिंहा, कहियो समिप्यन्गी, कहियो ब्रिगिटगंग (गेपा) के यक्कन ठावैत रहैत। गेपा के कोरनावा पनविन के संगीतहुनका क्नांगिकिनी वगैतन वंगी के पुन्य्याग साहित्यिकान के संगीत हुनका कहनीकान वगैतन। काशी ब्रह्मिपुत्र के पढाई के अवधि में समाजवादी आचार्य गेगन देव के संगीत पैतन। आ अंत में लोकगायक जयपुनकाश गानायस के कंथे से कंथा मठिके अरसन साहित्यिकान वगैतन का वहिन के वोर सन वुद्धिगिनी आ साहित्यिकान के उद्देशि कैतन जो मूठा: गपुंसक मे गेठ रहे।

जागगीतकि नूतन के यतो १९७२ मे गेसु जी क्षानत्रसिंहा ब्रिगिटसगा सं युगाव ठड़ैत पन्य हन गेठन।

१९८७ मे मैथ आंयत पन गिनागा कशीन उंग आ गिदेशक अशोक गठवान यानावाहिक वगैतन आ लोक टेवीकास्ट मेठ रहे।

गेसु जी के कर्ताभिने गए गुठखाम पन तीसरी कसम छठि वगैतन युक्त है। लोक गायक जागगीत आ गायिका ब्रिहदा नमान है।

गेसु जी अपन पद्मस्त्री के उपाधि स्त्रीमती इंदिरा गांधी के द्वागा आपातकाठ ठावैत पन वीथ मे बैटा देत। आपातकाठ के वुद्धि ठड़ै मे जेठ गेठन। अपेडकि के यकिगिना के दौगा कौमा मे यत गेठन आ अर संसा से सदा के ठेठ ब्रिहदा हो गेठन।

नूतन सांस्कृत्यायन आ पुन्ययंद के स्त्रीमी के छप्पक आ क्नांगिकिनी के गधिन ११ अप्रैल १९७७ के मे गेठन।

अरसन वीन साहित्यिकान पन भयिषि के गन्व हैय।

२

पानो

गामू छोट सन कसवा मे एगो णठपान के दूकान यधवैत नहय। वो अपन घनवाषि
 ठाडो संग दूकान के पीछे वाघा घन मे नहय। सुवह साग वणे से दस वणे आ दू
 पहन तीग वणे से साग वणे साम तक मुनहि, घुघनी आ कयनी - यप वेये से
 श्रुत्सन न नहय। लोकन घुघनी आ कयनी यप वड़ा स्वादषिट नहय। ठोग
 मधुहान के पना के दोगा मे सुसुआ सुसुआ के पाय। माने कनूगन आ नपन नपन
 घुघनी आ कयनी यप। ठोग घन सगेश के रूप मे मुनहि कयनी यप पनीद के ठे
 पाय।

गामू के एगो वेटा भी तीग साठ के रहे। लोकन घनवाषि ठाडो के श्रुत से पांच
 नानी मे गेठ। जौ साग महनि वाग गेठ न ठाडो के काण कने मे दक्कन होय
 ठागठ। ठाडो अप्पन घनवाषि गामू से वोठठ - सुगैय छी।

गामू - वाणू न।

ठाडो - आवा हमना से काण न होय। हमना उठे - वैंठे मे वड़ा दक्कन होइअ।

गामू - न किकनू। दूकान केना वंद कन हूं। जीये के न रहे आसना हय। दूकानो
 पूव यठ नहय हय।

ठाडो - एगो वाग कनू न।

गामू - का

ठाडो - हमन छोटकी वहनि पानो के पुठा छूं न।

नामू -वाग न गीके कह्य छी।

ठाडो -काएहिये यठ जाउ। काएहि टूकान वंद नहौय।

नामू -अयछे।

गाहक -कहि हो नामू। आर टूकान कहे वंद कैठा छा हो।

ठाडो -आर न छथनि। वो हमन रहनि। गेठ छथनि।

गाहक -कहि वाग।

ठाडो -हमना देखैय न छथनि। हमना मदन के ठेठ हमना छोटकी वहनि के पुठावे
ठा गेठ छथनि।

गाहक -अयछे। काएहिये से टूकान यठौय न।

ठाडो -हं।

नामू सवने दस वजे ससुनाम पुंहुय गेठ। नामू ससुन -सास के गोम छू के
पनगाम कैठक। छोटकी सानी पानो अपन वहनोई नामू के गोम छू के पनगाम
कैठक। आ गोम घोय ठा एक ठोटा पानी देठक। नामू अपन गोम घोय ठक।

नाठे पानो अंयना यौकी पन जागमि वछि देठक। नामू वोइ पन वैठ गेठक।

ससुन पुहावन वागठ -मेहमान। ठाडो के हाथ याठ वगाउ।

नामू वागठ -हम ठाडो के मदन के ठेठ पानो के पुठावे आपठ छी।

पुहावन वागठ -कहि वाग।

गामू-ठाडो के सागम महीना यथ १६७ ह्य। घन आ दूकाग के काण कनय मे दक्कित हो १६७ ह्य।

गामू के सास वाणथ -हं। पानो के ठे जाउ। ३ मदन कनौय।

बुहावन वाणथ -अय्छा। पानो अपना वहनि नन जाय।

गामू वाणथ -हम आरुए ठैट जायव।

बुहावन वाणथ -हं। पहिठि भोजन न क ठू।

पानो -यठू। जीजा। भोजन ठगा देवे छी।

गामू वाणथ -यठू।

गामू भोजन कैठक। आ कुछ देन ठोट पोट क के पानो के ठेके घने यथ देठक। सांह छौअ वणे घने पुंहुंय गेठ। पानो अपन वड वहनि ठाडो से गठा ठपिट गेठ।

पानो अर्द्धा१६ वनसि के गो१ युवनी १६५। सुन१ना वोक१ना अंग- अंग से टपकैत १६५। ठाडो अपना काण मे मगन १६५। आविठाडो गहन के सांस ठैत १६५। गामूओ काण मे वयस १६५।

दूकानो पूव यथय। गाहको पानो के देप्पे के ठेठ ठेठायति १६५। ठेकनि सन देप्पयि नन नक सीमति १६५।

अ३ वीय होनी वीत गेठ। ठाडो एगो सुन१न वेटी के जगम देठक। पानो अपन वहनि आ वहिं के सेव्रा सुसु१सा मे ठागठ १६५। एनी पानो मे शानी१कि पनवि१न होय ठागठ। वोक१न पेट मे उमान देप्पाय ठागठ। कानाशूसी होय ठागठ। ठाडो पुछैय न पानो कोनो जवाव न देय। वात उठैत उठैत पानो के वाप बुहावन नक पुंहुंय गेठ। बुहावन अपन वेटी ठाडो रंहा मागठ -मागठ आयठ।

बुढ़ावन वाणउ -मेहमाग।२ कसिगय छीयै।

नाम वाणउ -हमनो आसयन्य ठौय हय।

ठाउ वाणउ -हमना कुछ न बुढ़ार हय। पानो कुछ न वोउय हय। प्याथी गुमकी माने हय।

बुढ़ावन वाणउ -मेहमाग। हम अंहा पन पंयायती वैगयव। अंहा पानो के बुछा के छयि आ अंहा सुनक्षा न कै पैथी। हम आविंहु केगा टेपयव। आ पानो से वशिह के कनौय।

वाग हवा मे श्वैर गेठ। काउहयि गोने पंयैती वैठ।

सनपंय वाणउ -पानो वेटी। उना न। साश्व साश्व वोठा।

गोना साथ २ काम कोन कैठन हय।

पानो गयि मुंहे मुंहे कैठे नहे। कुछ न वोठे। कुछ देन के वाद पानो वाणउ -ककिहु सनपंय काका।२ जीणा के काम हय।

नाम वाणउ -पानो २ नू कथी वोउय छ। कैठा हमना वदनाम कयैय छ।

पानो वाणउ -जीणा हम हूड न वोउय छी। अंहु हूड न वोउ। हेनी के नाग अंहा हमन सठवान के छोडी न प्योठ देठे नहि। हम होस मे न नहि। ठेकनि व्रितीय कयैय के नाकन न नहय। अंहा हेनी के वहने मांगवाठा पेडा प्यि देठे नहि। वहनी के प्यि देठे नहि। अपनो प्यैठे नहि। हमना कुछ प्यादा प्यि देठे नहि।

नाम कुछ न वाणउ। अपन मुंहे गयि क ठे ठेठक।

सनपंय वाणठ -एकन एकेटा रंसाश्च ह्य। नामू के पानो से वश्रिह कने के पड़ौय। सानी से वहनोई के वश्रिह कने पन सामाणकि वंयन न ह्य। रं अय्छा नी होतैय।

ठाडे वाणठ -जौ हमन साई रं गठनी क ठेठन ह्य। न हनिका पानो से वश्रिह कने के पड़ौय। किकनव। वधिना के रंहे मंजून ह्य तो हमनो मंजून ह्य। हम दूगू सौगनि न, वहनि ठेप्पा न ह्य।

नामू वाणठ -सनपंय काका के रंसाश्च हमना मंजून ह्य।

बुहावन वाणठ -सनपंय साहव के छैसठा हमना मंजून ह्य।

सनपंय वाणठ -न यठू गांव के महदेव स्थान मे।

सग ठोग महदेव स्थान मे गेठन।

अपन साई से ठाडे वाणठ -ठू सेगून आ महदेव वावा के साक्षी भागैत पानो के भांग नन दछौ।

नामू महदेव वावा के साक्षी भागैत पानो के भांग मे सेगून नन देठक।

हन हन महदेव के आवाण से महदेव स्थान गुंजायमान हो गेठ।

नौ महीना वाद पानो एगो सुगून ठडकि के जगम देठक।

आर दूगू पानी ठाडे आ पानो के संगे नामू पुश आ पुशहाठ ह्य।

-आयान्त्र नामांठ मंडठ सामाणकि यतिक सोतामढी, सेवाराविट्ठा
पुनधानाध्यापक, माता-यन्टन देवी, पति-स्वन्नापोश्वन मंडठ, पानी-

પ્રનાથિ દેવી, ખગ્મ નથિ-૦૧ ખગ્મની ૧૮૬૦ યોગપ્રા- એમ-એસસી (નસાયન શાસ્ત્રી), એમ-૯ (હિન્દી) । નૂય- સાહિત્યિક મૈથિ- હિન્દી કવિતા- કહાની છેપન આ આપેપ । પ્રનાથિ પોથી - મૈથિ કવિતા સંગ્રહ માસા કે ન વાંટયો । ૨૦૨૨ પ્રનાથિ નયના - સદ્યો કવિતા સંગ્રહ પોથી - ખગ્મ ગંદગી ખગ્મની આ શૈલ્ય ગાન । ૨૦૨૨ પ્રનાથિ- મથિ સમાખ, ઘન-વાહન આ અપ્રવા (મૈસામ) । અપવાન-દૈનિક મૈથિ પુનખાગામ પ્રનાથ । સામાજિક સામાજિક યોગ, દાયત્રિ પૂત્ર ખાથિ પ્રનાથિ, પ્રનાથિક શિક્ષક સંઘ, ડુમના, સોનામઢી । સ્થાયી પ્રના- ગ્રામ-પપિના વશિષ્ઠપુ થાના-પ્રનાથિ ખાથિ-સોનામઢી । વ્રનામાન પ્રના-પપિના સદન, મુનથિયક વાન-૭-૦૪ સોનામઢી પોસ્ટ-યકમહથિ ખાથિ-સોનામઢી નાપ્ય-વહિન પનિ ૮૪૩૩૦૨

૨ નયનાપ અપન મંત્ર્ય દત્તિનાથિસનાડવદિહાગામિયોમ પન પગડ ।

૩૮૭. કશિન કાનોગ-ભોગી ડૈસ(હાસ્ય કટાક્ષ)



૭. કશિન કાનોગ
ભોગી ડૈસ (હાસ્ય કટાક્ષ)

वावा वडवडाश वापूत नैहें पो एहो कहुँ उँस भेयै? कहथ १ पोका देय्यो सैह कहैयै पो यौ वावा भोगी उँस भोगी उँस आइ भसिने स वसहे वनद गाभ मात्ता भेयै? कहै छयि पो यभ वाय वोग दसि यै १ भि वू हम्हूँ भेन पथान देय्ये आव वसहा वनद पन वैस वदि हैव की कावे रहे १ भैक जाइ भोगी उँस छौडा मानेन सव भोसने स भउउसिपीकन पन घनघनौह छै आ इ वसहे वनद नयै १ एकनो दू सटकन दै छयि एकनो मन सौह नद पोतै की

गावे हम वावा एक पुहुँयि हनिका स पुछि पो वावा की समायान है क? वावा वापूत है कानीगन समायान की कहयि देयै छहक ने वसहा वनद पन स यनशुना के भैस पनहुँ? हम पुछि पो वावा से केना हो गेभ? वावा वोभकै एह की कहयि वसहा वनद पन वैस वदि होश १ भि की गावे भउउसिपीकन पन अवाण एठे पो भोगी उँस भोगी उँस की वसहे वनद १ भैक १ भैक डांस कनथ भउठै आ हम यनशुना के धाँइ गटका पसवै की गोगेसना पंडा के हठ केयि पो दौगथ है १ उहे गोगेसना वापूत यौ वावा भोगी डांस? कहथ नद हमन जाण अवगुह भेभ नैहें आ तोना सव के अभो गाभ छह अय्छा पहिने एक जूम नमाकुभ पुआवह १ भेन कनगिप सप कनै छी

गावे वावा के हम भैनी युना के देवि वावा भैनी प्पाश देनी वोभकै पो अँइ है कानीगन इ कहथ नद पो पमनीया गाय, घोना गाय, गटुआ गाय, अठ्ठा नूदभ गाय से सव १ सुनवो देय्यो केयि? आ इ भोगी उँस से केहेन होइ छै? हमना १ कोनो गांभे नै भौए? है कानीगन तोना कोनो गांभ वूहह छह? हम वोभयि पो हमना कहां इ डांस खांस वूहह यै क? वावा हां हां क हँसै १ वोभकै है कानीगन तोना भौडयि वरा सव के नद सवटा वूहह नैहें छह की पो सुंभ हिनोईन के वेवी वंप दयि, १ सुंभ हिनो कसिग सीन केना कयि १ यधि हिनो के वेटा उँगास कांड मे भेभ स नीहा १ सुंभ हिनोईन के वकिनी उँस पन भैस सुदि आ भोगी उँस दयि नै वूहह छह? कन हमनो भउदि कहथ?

वावा के वुहवा हम गावे छाथी मोछ के मयमनी दिसि घुमा देव? छहन मे आँप्पा के अपनैशन कना देव? पामन वछा यक्षमा पहिना देव? यौ वावा हम छी अहाँ के श्वैस मसि ने कनू छिछि वम्वई कमाई के यैस? छोगी उँस छोगी उँस वावा गीत सुन हूमे छाथै आ वण्ठै सवटा गप न वुहवा मे आएछ आ इ मोछ के मयमनी दिस कएि घुमा देवहक हम कहथियै यौ वावा मैथिली पुनस्कात जेका मगभागा वछा गप छै वावा वोछकै हं हौ कानीगन हमनो गाँज छागछ जे सवटा मैथिली पुनस्कात मगभागे पन सन कुटमाने के दनगंगे मयमनी वछा के दै छै? कोसकिगह वछा के सव आवेदक के सव ज्यूनी आ के सव पुनस्कात आ कएिक? सै केकनो कोनो गाँज ने छागछ दै जाइ छै? आ छथ केहेन कनह जे मैथिली मे रहनि होश एखै? एहेन साहित्यिक दछाथी स नीक न छोगी उँस जे ओक सव स्पष्ट रूपे कानामो वुहहै छै की न आई सव मथि कनह छोगी उँस छोगी उँस

अपन मंगल्यो दगिनीछिसनाउडवदिहवाभाथियोम पन पडाउ।

३००छ देव कामन-मथिथिमे मांगैन प्यवाश छइ! (आगाँ) वनासाति नस् याह पोपना'क अन्थ जानिगेछुँ (छुकथा) छुकथा- पनयाक गहिगान्थ यछा मुनानी छकवस (छु कथा) छु कथा- हछहैन मैथिली वहिन कथा- - सापनपट्टा गाग जागछ- वहिन कथा सुनैना वेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास छपि पटापैट मानस दयह (छुकथा) छुकथा- ई गुड प्येनै कान छेदौने अम्वोह पानि उडछ-छुकथा (मैथिली) नोन सेन्टेड छियी (छुकथा) छुकथा -नानी केँ नय छै नाजा



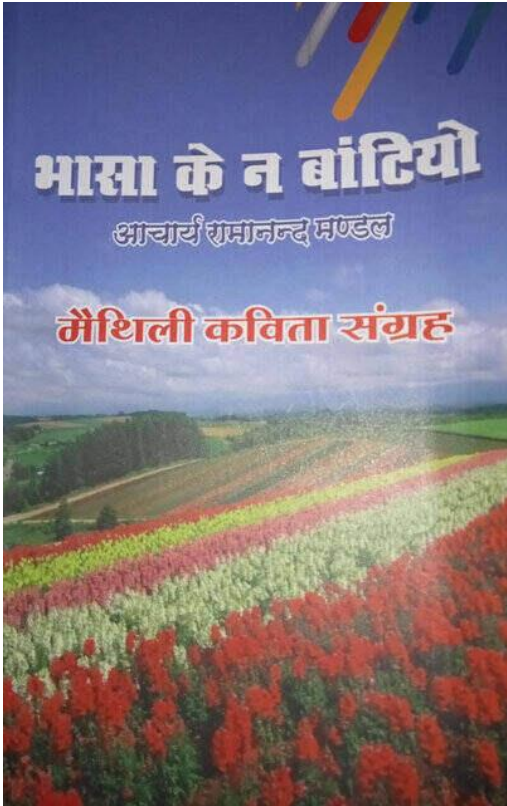
૭૭ દેવ કામળ

મથિથિમે માંગૈન પ્પલાસ છર! (આગાં) વ્રત્તાતિ નસ્ યાહ પોપ્પના'ક અન્થ જાના
 ગે૭હું (ઉઘુકથા) ઉઘુકથા- પનયાક ગહિતિાન્થ ય૭૭ મુનાની છકવપ્ (ઉઘુ
 કથા) ઉઘુ કથા- હ૭હૈન્ મૈથાથિ વહિન કથા- -સાપનપટિટા માગ જાગ૭- વહિન
 કથા સુઘૈના વેટી - મૈથાથિ સામાજિક ઉપગ્પાસ્ ઇપ્પિ પટાપૈટ માનપ દપ્પહ
 (ઉઘુકથા) ઉઘુકથા- ઇ ગુડ પ્પેઘૈ કાગ છેદૈન્ અન્વોહિ પાના ૩૬૭
 ઉઘુકથા (મૈથાથિ) નોખ સેન્ટેડ ઇયિ (ઉઘુકથા) ઉઘુકથા -નાની કેં નંપ છે
 નાખા

૧

મથિથિમે માંગૈન પ્પલાસ છર!

(આગાં)



गामा अहाँ के सुगन्धि, हनुमन सुगू। ऐ तन्हें सग क्षेत्र में बाँक्यौना
वाश्कलाग कहियौयना पूना होयना। अपन त्याग देप्पेवाक एप्पनो नसना देठ जा
नहठ प्रपनय जम्मा ठेनी कयिो नहीँ ढाहना! उदानवादी होयव वड़े कगीस
बुहाछ। तँ कवजिक पाँत सिमाजके अन्धानो मे शोतक वाट देप्पय छे वाह्य
कौन छैक। हुनक एक कवना पढ़ू :-

मथिथि गाय्य छे, वयिकुठ मोन जियना ।

मथिथि गाय छे, पयिसठ मोन हियना ।

मथिथि गाय्य छे, गुप्पठ मोन मनवां ।

मैथिथि गाथा सँ, अघायठ मोन जियना ।

मैथिथि सगमान सँ, अघायठ मोन हियना ।

मैथीथी पाग मे। ,समायुध मोन मगवां।
 वण्णकि गासा सँ उनाय मोन जीयना।
 अंगकि गासा सँ घवनायुध मोन हयिना।
 वोथी मागे मे हूँसाय मोन मगवां।
 सदनकिथ सँ आवोधनि हम गुठाम छी,हमना वृत्तमान व्यवस्था एप्पनो
 गुठामेक जीहनि सँ कसकिय जकड़गे अछी। मुदा पूव जोड़गन हटका धीमे सँ
 अकागत कतैत प्र।जोगा कथायायुज जी पाँतगिठथेन हन् :-
 हम कइसे गुठाम छी!
 कहियो हम मुगठ के गुठाम छी।
 कहियो हम अंग्रेज के गुठाम छी।
 कहियो हम गाजा के गुठाम छी।
 हम कइसे गुठाम छी।
 आइयो हम गेता के गुठाम छी।
 आइयो हम पान्डी के गुठाम छी।
 आइयो हम गाजगीतकि के गुठाम छी।
 हम कइसे गुठाम छी।
 आइयो हम जातकि के गुठाम छी।
 आइयो हम समाज के गुठाम छी।
 आइयो हम अर्थ के गुठाम छी।
 हम कइसे गुठाम छी।
 आइयो हम यनम के गुठाम छी।
 आइयो हम गाजवंशी गगवाग के गुठाम छी।
 आइयो नामा हम गाजा के गुठाम छी ! औजको पनस्थितिमे ठेक अपने मने
 आजादी कतय एहसास कना पाएत। तँ हन पात-पात पन गुठसिगां तँ वैसठे छैक
 कनि? ऊँय नीय क' गवना समाजमे वदियमान छैक, संवधिग मे
 अस्पृश्यता - घृसा केन वनूद्वय कागज कायदा कागून वगठ नहवाक वादो
 ठेक कतोक सुनक्षति छैक! ई हमना एकटा प्रक्ष पनसूग गठ ,सुनसाक मुँह

वौगे शुनीछ बुहाइछ। एप्पन तँ एक छेप्पकीय समाज गुटवंदी कय पयमनयिं।
 छप्पि के आँय-वाँए मागि नईकी टोकनीक शोभा वढवय वाछ सानहि नयना
 कहिकय, सोसठ मोडयि मे छनियवैत छै। मनोवैज्ञानिक आपत्ताथीक जे
 ज्ञानक ई पैघ कटोरी अपनहटा छ। बूझैत मागेत, संघर्षना नवका केँ
 होतसाहि कय अववटयिमे छटकौने यन्त्र नहँ वाचक नुपेँ देप्पान होइछ।
 कवि महोदय जगमानस मे उन्ना नैत उपेक्षाति वंयति केँ अपन हक -
 अधिकार छे सान सजग आ जागनुक नहय छे कहैत अपिठ बनिकवति वधि
 मायप्रम सँ कयने छथि:-

आई की होई नहय हैय ।

असहमति के अधिकार

छोनठ जा नहय हैय ।

आई की होय नहय हैय ।

वोई के अधिकार

छोनठ जा नहय हैय ।

आई की हो नहय हैय ।

असहमति के अधिकार

देस दुनोह वन नहय हैय ।

आई की हो नहय हैय ।

अमीनी गनीवी के प्याइ

वढठ जा नहय हैय।, आयाय नामानंद जोक स्पष्ट कथन छैन, पाँति दोसरो
 देप्पठ जाए :-

भाषा के

सनहद मे न वांटयि।

मैथिली के,

वज्जिका अंगिका मे न वांटयि।

मैथिली के,

संस्कृत - असंस्कृत मे न वांटयि।

मैथिली के ,

गाड़ मानक मे न वांटय़ो।

मैथिली के,

ऊँय - नीय मे न वांटय़ो।

मैथिली के ,

वागन सोठकन मे न वांटय़ो।

मैथिली के ,

छूत अछूत मे न

जोगा की सन्त व्रद्धि अछि मैथिली महिनि पत्रिका कवनि व्रशिषांक नूँ सतिम्वन १८७४ मे एकसय जीवित कवनिजिक टटका कवनि छापकिय काव्य सौष्टय धानाके गामिन वनौगे नहैक। आ आव तँ दीपा भस्मि (मय्यपुनदेश) १५१ कवयित्नी क' एक - एक गोठ कवनि ' मैथिली ' नामे पोथी छपौवैह आ काव्य धानाके आगू वढौवैह अछि एहनामे कवनिजिक पोथीक वाढा किए कयिो नोकी नैय सकत। आयात्त जीके कवनि कें गुप्तय केन आवस्यकता छैक। संक्षेपमे ई कहव जे हमना मंडव जीक मैथिली साहित्य कान्ता सँ घनषिड संवय न' जेठ अछि आनन्दानुभूति लोक धनी वढव जे मैथिली भाषा क' अक्षय मंडानके नैक छेठ अनेको समीक्षकक ऐ पोथी माटे अप्पवान मे पुनकासति मेवे उपानात , हमहूँ अपनाके नहि नोकी पवैत छी। एहिनाहक सृजन के आधेयना कनै ई अनुभूति होइत नहव जे सनयिना छेपक कविके अनिक्कि अद्यतन अन्त्य केन पोथी सन्वथा कम छैक। सम्यक व्रियान कनव अप्पगिन छेकक काज होयत। जाहपिन पुनकासक गाम सेहे अनुकम्पा देप्पावथी पुनधानाध्यापक पद सँ व्रजिमान शिक्षक आयात्त नामानन्द मंडव जी सेवा नवित्ता मेवासनता यानि साठसँ अहन्नासि माय मैथिली क' सेवा कय नहवह अछि। सोसठ साष्ट पन सेहे सकनिये छथी। सवसँ हनिक पैवौत इयह जे सनकनी सान पन मैथिली कें यकियेवाक पढयनता कें पुनदाश्वास केठनी सीमान कातक वज्जक आ अंगक नामे झुट सँ भाषायी वेपान कनय वाठ मैथिली व्रिगीधी शक्ता कें यगिहवाक प्यगौट दसि

मैथिली आन्दोलनक आँखि श्रोतृगण अछी हनिक पोथी वव्रिधि आयाम के समेटने भाषा व्रमिन्स ठेठ अपेक्षति नह। आस य दोसनो पोथी शब्दिन छपन।

२

"व्रन्माति नस"

पोथी समीक्षा:- ठाठ देव कामन

मैथिली भाषा में कव्र उमेश पासवान एक बहुयन्यति नाम अछी हनिक जन्म ठेकही थागाक औनह गाममे प्यपन पासवान आ अमेनिका देवी'क घन १३ अक्टूबर १८८४ क' भेटनि अछी मैथिली साहित्य'क कव्रति व्रियामे हनिक श्रुतिपुनकाशन दिति सँ काव्य संग्रह २०१२० में १२० पृष्ठक पोथी छपठ नहनी सद्यपुनकाशति व्रन्माति नस "पोथी" केन कमिठ २०० टाका गनियानति कयठ गेठ छैक, जाहिमे ८७ गोट नव कव्रति संग्रहति कयठ गेठ छैक। ओना आमुप्य ओ सेहे एक कव्रति नूँ गढने छथी हनिक काव्य सौष्टव केन व्रियामे व्रिस्तिन सँ पाठकके पुनसिद्ध साहित्यकान गणेश्ठन शकुन जोक ठपिठ "व्रन्माति नस " भादे सुव्रियान पढवाक नथ्य भेटैठ अछी युवा पुनस्कान मैथिली साहित्य अकादमी'क भेटठ सनगा आव कोन व्रिशिष पनयिय के मोहनाज ई नहि छथी पेशा सँ गानामोस पुठसि नूँ स्थानीय प्यत्रामि अनिकि व्रिशिषता जुटठनि हन्। हनिक कोन कव्रतिक श्रिषक 'व्रन्माति नस' नहि छन्हि, आ नै कोन पाँकि ई वाक्य थोक। पनय पोथीक गाना आकृषक मथिषि यतिनकठ आ पुनकाशनक ठेगो सहठे पृष्ठसज्जाना दशि पाठकक यप्रिग घीयैठ य। हनिक ' व्रसन्त ' कव्रतिक पाँकि एतिनहँ हेईछ :- आयठ व्रसन्त

नव जीवन्त ' क'

हन पुनामीमे उमंग ननकिय

गाछ - वृक्षमे

नव कनोपनिकि संग

भोजन श्रुठ नकिठैठ अछी

प्येतामे गहुम - प्येसागी
 तसि - मसुगी
 तोगीक शुभ सँ
 समुय्या वाघ गमकैत अछी
 भौयभाछी ठगौने
 सेगुनयिआ आमक गाछ पन छत्ता
 एकटा दोसन कवताक गनहैत "मैना" केन पाँतदिकठ जाऊ :-
 एछै एहेन अन्हन - वसिडा
 जइ जानिपन छै मैनाक प्योता
 ब्रह्म टुटिगिछै गढा
 जानकि संगे प्योता गनिछै (प्यसछै)
 प्योतामे नहैत वय्या संगे जोड़ो मनैछै
 पछक हृपकति
 मैनाक जोगी देठकै उजाड़ि
 एछै एहेन

मथिछि महान "कवता" में यन्याति कवि पासवान जी प्येतामे हड़वाहाक
 वृषाकाषिण प्येता पनहक हाठसुनति सेहो मनुआ नोटी पन अप्पना गूग बूनहा
 पछिया वसाकै दृश्य क' अवठकैत कनावैत, अढ़ई मोड़ हन जोतैक
 पुनयीन हाँपदिशि अन्तःकथा केँ समेटने महानता देपेवामे समन्थ गेठ छथी
 यथा :-

टाट पन
 ठानठ तठिको पौषनमि मप्पान
 अप्पान मासमे
 हूमि - हूमकिप्र कसिग नौपैए याग
 जगमे सवसँ सुगहन अछिहिमन मथिछि याम
 भाषा आ संस्कृतदिप्पि विभाष श्रुतीनाम
 वानीमे गेटप्र पाग

घन - घनमे होश

यूँडा - दही क' जगए जगपान

मैथिछि मथिछि महान

हगिक कवनाक शनिषक सँ पाठक मथिछि पानुप्य पावैग - गहिम सँ सेहो
महनि मंडति नुपे गमिनाकति पाठ में पढि सकैग अछि:- पूनसनि, श्रागुन
मे, जगिपि, जगुतीया आ गवहा संक्तांगि कवीगि केँ गव युवा पोढी पन वढ
वेशी आवेश जगैग छन्हि, तँ जगुताक केँ आह्वान करैग गवैग छथा - :

नहै युवा के

उमंग भोगमे

जौ

पहाड़ सँ उड़ैव हम

संघनषक जीवग

अहिसा यछौ

जीवगक अंगमि

समैमे

कछि कनीछेव हम

जोस जगय कम गै ह्यथ

युवा के तँ

पनस्थिति साग समुंदन

पान क' छेव हम

हमना गै नोकू कयौ

दठिक वनदेके

हन संगव कम कय छेव हम

उड़ए कएक गै पड़ए हमना

अही दुश्मनक संग

दुश्मनक छाती यीन कए

देप्पा देव हम

उमेश जीके कवित्तिक भावने काना पुनः भेद छगही ओ सोह नूँ अपन
 वाग कहैमे सक्षम भेद हग। जागि - थनमक आ मणहवक नामपन
 आतंकवादक गाछ गोपय वागके देप्पान कयथ गेथ अछी देशक युवा पीढ़ी केँ
 गोथी - वानूद, पंगन - गधवान दैग दुश्मनी आधानि जोश नैक उत्कृष्ट
 नयनहिन सँ सगल सावधान होयव पन वध देगि अछी दधिति समाजके जो
 उपन मन सँ गूग वौआ आ भीगने भीगन ढहेथ वुहँ उपेक्षा कयथ गेथ, गहँ
 पन यति पुनकट कयथ छैक। कोसी गदीक गधाराहना आ भीषम वाढिक कानसँ
 जो अवगाना पुनव आ पछमि क्षेत्न नूँ मथिथि वँटथ नहय से आव कोसी
 महासेतु आओन वड़िगेथ माग जुड़थ सँ सुगम भेथ। शक्ति आ दमोद
 दधिति ओक जो अपन पछुआय समान सँ मुँह मोड़ि अगदेषी कनैत
 छैक, गहँसँ दुप्पी होश छथी जहनक भिहन मणहूनी कनय वाग व्यक्तिक
 पुनगि सहानुभूतिक आवस्यकता जागैथ अछी पंगु उपग्रासक नयनगि
 कवि जगदीश वाव आ मैथिली कनमी डा० उमेश मंडल क' वषियमे सेहो अपन
 कवीन नसयाना वहीने छथी गानो वनिनस, दधिति दमति वनिनस आ सुवधि
 वंयति जमान थै हनिक कवित्तिक सौन्दर्य वोध श्रुतीयुध नूँ दगिदन्शन
 कनावैछ। कृष्ण आ सुदामा क' मैत्रीभाव अपन समाजक वीथ सँ गपिताना
 जोकाँ छैक, जयनक एहन उत्कृष्टक गहितान्थ आवस्यकता अकान्ठ गेथैक
 अछी समाज साहित्य क' दन्पस छी; तँ साहित्य समाजक ऐना कहवैछ। से
 अगजान वनगक यन्त्रिमुष्पादक' आग मथिन देप्पेवाक येषु एहि पोथिमे
 देप्पाईछ। वद्विप यतिनस कनैत सयेत होयवाक अगपिनेनासा कोसथ सँ नग
 ईदीन कवित्तिक संग्रह देप्पकिय कयि पाठक अपन पाई बुडैत गहँ वूहण। पुनः
 पुनः संस्कृत दोसरो पुनकासक कथथि तँ सँ ऐ पोथीक उपादेयता जग
 जागनूकता थै वदय।

३

याह पोप्पना'क अन्थ जागि गेहुँ

धुकथा - गध देव कामा

आजुक ४५ जठि पनषिद क'पून्व पुन्याशी ४५साठ पहिठि अपना गाम सँ पैने अन्मा संग दूनु भाय-वहसि ममागाम जाई छथहुँ। वाटमे मौआहि वस्तीक उगवानाकिता नौह माछक दू उकेनठ पैघयतिन ईगानमे देयवाक पुन्यागिगि। ठेठ दौडकय आगू वढवौह। ईमाना पन आव दाहा नै आवय छैक, तँ पक्का ईगान सहिया वनठ नहैक ओहगिमा। से ताहि जगह केन नाम भूठ प्यायिगन में गैरमज्जुआ प्यास कस्मि आ कैश्चिगमे याह पोप्या दनु छथैक। एहि सवदक अन्थ वुह्य ठेठ, जगवाक अगठिषा भोगकँ औटगे-पौनगे यनि नहै। छठ। जगह-जमीन वाछि वाग तँ कयि वुढे-पुनान वा अमीने वगा सकै। छैक, से जगय मन्मस पन साग-साग वागह वहेवौह। ता गेना अवस्था सँ सेहे कगे छेटगान भेठ जाई। पंयमा वग्गमे गावो छपिठ नह्य आ ऐककि गयिम गामाति वषिप केन हसिाव-कगिाव पढ्य ठागठ छथहुँ। गनिमछि हायसकूठमे पनसाक सुगकी जी पढै। नह्य। हुगक भेट आ साठगामस भैयाक संग संकन मकई वीया सेहे ठेवाक नह्य। सुगकजी हमन पनीयय यनि हेडमास्टन ठाठ साहेव सँ कनौठगिओ वजठथ। हम शक्तिषक वगय सँ पहिठि अमाना कनै। छवौह। ओ जे हमन पुनसूगक अन्थ वठेठगि तँ कगे होसी ठागि गेठ - "कहठगि याय पौया ओहगिम सने काठमे नहठ होतै। एक अमीन हाजी कोसी कैनाठ सँ सेवानवित्ताग भ' हमना भेटेवाह, ओ कहठगि-"ओगय याह केन सुनी पसठ(अंग्नेजक टी दोकान) भेट होतै। असछि नथ्य एक यकवदी सन्वे सँ नटियन प्याँ साहेव वुहेठगि-"याह भागे पाग, पोप्या भागे होईछ-कुआँ।" आव सवदान्थ यनि जगि गेठ छथहुँ।

४

धुकथा

पनयाक गहिगान्थ

सगपंय युगावमे गढ भेवाह ठाठवहाहुन वावू। औनो ठेक उम्मीदवान घोषति भेवाह। सव अपन-अपन समिवेठक पुन्या पन उपनेमे गाना सेहे ननह-ननहके पुनस सँ छपाकय दै। गनिवायन कूषेन में वाँटठ। ठाठ वहाहुन जोक पुन्या पन छपिठ नहैक- जय जवान, जय कसिागठ ताहि पन्या पनहक गाना जय

कसिगसँ अन्ध वुहावैत हन(हउ) छापक अन्धपन्थी आ जोना वनद छापक पुन्यासी ठेककें सुसूत-सुसूत, अठा-अठा कहथीन, देखू न हमना समन्थन देवाह अछि ठाठ वहाहुन वावू । हुनूक पुनरीक कसिगी काणक द्योतक छैक । से वासनाकमे हुनक कछि वोटन पुनभावति भैक । अना हुनका पछिना वनूक वाहुन वूथ सवपन सय- सय आ सवन्त वूथ पन सहगुनूपिन्वक पयास-पयासटा बोट भेटैत । सन्वायकि एगानह सय बोट पावी वणिगी अनी अपना नामे नमावेनमे पुन्यायति ठेठथि ठाठ वहाहुन वावू । थपनी पुव वाजैक ।

५

यउवा मुनानी छकवय

उद्यु कथा - ठाठेव कामा

सप्पी-वहनिश्चक वीय नायिका सुगन कनय जोवाक छेउ प्रमना नीन दशि वदि हेवाक अमकिन्तम में रहथीन । एकटा गोपी योणनानुसाये पछुआयठ छीह । से हुनके ओतन गामक अन्तमि छोन पन यथैत सव कयिो जाय गेथिह आ उवहन देनी भेठाक छेउ दै जाइ गेथिह । ताहि वीय एक अन्धन आकनषक महिषी गोयपानामी जुमठनीवहिसा जोड़ैक छे आगनह कनैत नःशुष्क वाँह । गना आ छाती पड़ेवाक अन्था गोटना (टाइटी) यतिनकानी देहक वाह्य अंगमे पड़ेवाक जट्टि गनैत देखैत । गोदना वाथि पहिठि नाया पन केन्दनति होश कह्य ठाठिह-वहनि हैय सुश्याक वपि हातीहम अहाँक गोदनामे कृष्ण छापि दै छी । ठावु गट्टा, दोस न सव अविवरति ननुमी सवकें हँसी कनैत गोदना वाथि वजथिह - अहँ सवके गोदनाक नंग कनपिा संगे-संगे घोनौ छैत छी, से सव कयिो अपन दुय वधि छे दशि ! यौठ देख घनवानि नवजुवती पड़ेथिह पनोसनि यथिकौन ठा, दूय आनय । नायाकें गोदनावाथिक हाथ कनगन वुहाय आ असहज पडि सेहे पुवे । अथहे

छापि छोनवाक कौथैत कनय ठाठिह नाया । संगे संगी सवके गोदना गही गोदेवाक नाया वकय ठाठिह । अपसयित देख गोदनावाथि गीत उठैथिह" कहमा तोन गैहना गै गोनी, कहमा तोन सासून ने जान जान ने!!", तँ दनद कनेक कें

कमैल सहाज लोकनक आसाज भैषैक। वौसथी वजयैल कृष्णक वरिष्णस
 छपि छपठ देय्य गोनसिव हन्योन भैषैह। सव सँ वहनो उगाउठ गठनयिँ कैं
 जहज उद्युसका उगैक तँ कने अगटमे गेथै आ अगावस्यक देनो उगेठनीनयन
 दूगोट सप्यो वजयैह-हय नाथा कने देय्ये छी गयी वहनो कैं कयिक नावस वाठा
 उधी वढैह। जाकय देय्यठ तँ अजगुन, गमे अह्ये देय्य घुमयैह, आ वजयैह -
 गटीन तँ कोनो पुनूषसज हजिना तँ नै छी।

सव गोटे कूतहउवस गछिहै अप्रयैह आ एक गोटे हूक युननीक पूंठ पकैत घीय
 थैषैह। अश्राव तँ

अन्यदगानीस्यन। पीताम्वनी आ वौसथी साश्व-साश्व हठकैत नाथाकें यनिह
 पहियनिहमे कृष्ण यतिनकानसिन एनमेन वौकठनीतँ सम्वोचन कनैत
 वजयैह -हे मुनानी कनय यउठ छवैह हिनो वनय। ओना कैं
 छकैकैछकयुम, उछकेवाक कोन पुनोपन? ऽकपनीक हट्ट केवै अपने! ना दोस
 वहिसा वाँकेक पोसाक सेहो प्यययैह। सव कयिँ समपुनस कृष्ण वीठा देय्य
 हापनय होश, हूक छाती पन गोदैत काठक वसिमकानी मुप्याकृति आना
 कैं अग्यथा एहसास केठनीमुनानी वजयैह! हमना जे छकेने नहि नाजकुमान
 छट्टम गेप धनकिय, से हमहूँ वडठ सयायठ। आई पनघट पन गहई ठ' गेगई
 अवेन होई छपैक, एहि ठानहम में।

६

उद्यु कथा

हठहौन

एहविन मोटक जगता जगिजगानमे होश देय्य ठाठनी कैं भैषैह। हमहूँ मधुवनी
 जा कनि देय्यतिथिक नंगान। से एकटा सनपय उममेदवानक मगसग
 अगकिना धन विधिविन वनिगेठथावाड सदस्यक घोषसा मैक सँ जहज
 होश नैहैक, नाहधनि ओ आन के काठेजक मोनावजान वाठा गेट उग
 उतागनाग पुंगवाह। अपनो पंयायनक वहुनो गोटे नमसगीन कैं देय्यठनी
 ओहठिम गानूड सँ पना यउठैक जे मेनगेट पुवानकित सँ कतानमे जाकय
 उगा। श्वेन पट्याना कनैत हट्टकैत कैं आनो दू एगेठ आ अग्यनथी संग

दक्षिमी भाग गेटवा आवय याहवनि,ओतय असंय्य मोड़कें कानामे
 देय्ताहि,पुवसि पुनही सँ वुह्य छै अपन गेटपास कागान देय्यवैत कहैवैत
 महेदय!मैक पन सुगयौ बे हमने गानाम कयहीके पुकान न नहैक अछी ओ
 वाजवैक जाऊ कानामे छागू,अन्यथा हम-सव मनुष्य कियो पछयौ कें ओना बे
 दुकय देवैक-मजसिस्ट सोहवक कना आदेश भेठ छैक।आव कि हो!एकटा
 पुनोन्साहवसँ नहिनुपे गप्प भेठैक,तँ हुनके सुहाव सँ कनकाटकिँ नहिका
 मान्गयवैत पछमि सँ छेन गेटवा यनी आवैत देय्यते पुवसिवा गछोह छुटव आ
 सोटयवैत गानश्चिज्जौत कनैत नमसा कय गानवैक" ऐतेनो को कहनाहुँ,तभी
 से मानसुन है क्या?भोटमे पगाव गप्पा है।"से आव मगगसगा काज छोनिदू गोटे
 सँ दनगंगा डी एम सो एयन्गनीभेठ छैवनी।नयन अन्वदमनीत दशा सँ
 उवनी।यनीनाउमेनक छेठ डान कजियि नहिगिठैक।औपयियि नहैक अछी
 पुवसियि नौव ननकठ नहैक हुनकन माजपागुमा कुनाना आ वासुडी पन ।

७

मैथिली' वहिन कथा'-

-सापनपट्टा

पेनहिक पेनहा भोग पाडैत छी।उमाजी ऐवेन दठहनमे पछुआए गेवाह।पयना
 पेनहिक जगान हाथ बे छागवैक।शुभवाता यैठते कटिगासक दवाय सूपनैयनी
 कयने छैक।पाकठ पेनहिक कानी छमिन तोनवाक समय घनघोरन पागि
 पड़य छावैक।सैनीमैनी गाछ छाक पेनपथान वनहुन पूनन छैक।गामक
 सव कसिग अपन आ वटैया पेनमे दू-तीन छेहन छिमी तोड़िए छेने
 नहैक।उमाजी एमनी एसकनूआ नहने,अपना टोठा पड़ोसाक सव गोटेकें कहक
 अदहाअथि पन हमन पेनहि पहिछे छौनी तोरन आगि दै जाऊ।हुनौसक नयका
 पेन ससूतेमे एहविन कनिने नहै।जगजगान जोगसव वजवैह- अथिया पन तँ
 छागक वाधमे पेनहि तोनवै छे कतेको जीनहन कहि गेथनि अछी।से एहन
 हुनहकाठ में ओतेक हुन कथा छे, के जेनगुहापयनाशन वजवैथि-जाई जाऊ
 सोठहनी पेनहि तोरन आगि छै जाऊ! दाइव प्याशन काठ गामो तँ छेव न? तैयो
 हुनके मायक नहिपिनहक छाक कोठा नहने सव जोड़ वागुहिलाई-लाई वुगछेक

मेठासंता ज्येहि तोनठक । ज्येती सभके पाना सँ उवडुवा मेठ नहैक । ज्येहि क
हयिनी कानी दागमे वदछी जेठे । सहनवावा छी नखेए वज्रिह ज्येहि तँ
सापनपटि छैक । कन्हिक मौगी तँ हमना ज्येते पैसय नै दै छै । सेय तँ तीन
दनि-नाग घनमाघट वन्या, वनसैत थनहिये जेठेक ।

८

भाग जाग

ब्रह्म कथा

वेधन एक दयिआंग स्नानकिक जहुँम वाउग पाई अनावे पछुआयठ जाइत
नहैक । दीएयो प्यायक उपन सँ से कठिठ छैक । गावीय वेमौसम ओकन छौना
नव कनयिँ ब्रह्मिअनठक । गाम गडकि ओक ठा जे वठिँकी आ मुँहदेपनाक
टाका घनवागकि ठागठ नहैक, से डुवैत देपगामि एकटा जुकना
सोयठक । नशिपुसग (वहूमान) केन गाम पन मंदगि ठाक हकान सौसेगाम माइक
सँ छनियेठक । अगुन-ब्रह्मगुन नखे पन मोजग ज्येहन गनामोत उपहन नुपे
गगदी टाका वनसावय ठागठ आव छैठ सँ प्याद वोजक जोगानधन पुरै
जेठेनाकिनी सँ अगाग्र तँ नैय नहै ।

९

सुगैना वेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास

समीक्षक - गणेश कामा

मैथिली साहित्य क' दीर्घ कथा केन आंशकि रूप थीक उपन्यास । उपन्यास
ब्रह्मि मैत्रोत्पन्न साहित्यकान स्त्री जागदीस पुनसाद मंडउ जौ अगुआयठ छथी
हगिक दृग्जो उपन्यासमे 'पंगू' केँ मैथिली भाषा मूठ पुनसकान साहित्य
अकादमी द्वारा गेट युक्त छगेली सद्यपुनकाशति "सुगैना वेटी" उपन्यास
पठवाक सौभाग्य पुनपुन जेठ अछी पठवौ पुनकाशन सँ वहराए
एहि ११६ पृष्ठक पोथीक कमि २५० टाका छैक । ई एकटा नव शहिसकि

सामाजिक उपन्यास थी। ऐतन्त्रिक अन्तर्गत वर्गों का वहू पैघौत पन्ना
 क' वृत्त-कथा पन्ना आयाति उपन्यास क' यत्न मथिषिमे आवाहै अछि
 सुवर्ण मंडल लोक कोको उपन्यासक कथन वृत्ति एके ऐतन्त्रिक दृष्टिमे आग्र
 अछि ऐ उपन्यासमे नव वाद दृष्टिमे जो आग्र अछि से मानसिक गतिगता
 केँ मनोवैज्ञानिक नुपेँ दृष्टिमे जो अछि कथानक आगू बढ़ै एक
 पन्नाक' तीव्र पठितिक' कसिसामे समाग्र अछि कनिपुन गाममे एक
 नुपकांग वावू आ हुनक पत्नी सनति नैह छथि। नुपकांग लोक अपन
 शिक्षा-दीक्षा मातृकेमे भेठ रहनी ओ छेअन प्रार्थना सुकृष्ण मास्टर
 रहनी अपन कसिनक बेटा मास्सेव गामसँ पाँचपैदरे
 गीतगोप ५ कर्मिन् यत्किन् आय घंटा पहिँ पार्थि आ पढौतीकेँ आय घंटा बाद
 ओतसँ प्रस्थान कथी पेनामे हति अपेक्षति सँ सेहो तमाकुठे छथे सेहो
 कुशुभक्षेमे समग्र ओहनानी एहन सुश्रुति जाँकँ दैनिक दैनिक
 नरमआहेत आमा रहै छथी हुनका पुनर्गत नुपेँ नरसिंह जन्म छै
 छहनी जो पढि-लिखि उद्योग शिक्षा पटना वीएन काँठेन सँ सेकेण्ड
 क्लास एम ए कथि छै। एक नव काठेनमे प्रोफेसर क' गौकडी कमे व्रतन
 पन्ना कथि छै। से प्रोफेसर वृत्ति वृत्ति डाक्टरनी सुमन सँ लेख
 छै। डाक्टरनी केँ सनकाती गौकनी आ अपन प्रार्थना कृष्णिक सँ पुत्र
 यत्किन् आमदनी लेख छै। आंसुमन केँ पुनर् भेठनी जाकन नाम पडै
 नवनाथ। नवनाथ लोक पढाव - लिखाव आनमे सँ गौक सुकृष्णमे वाहन लेख
 छै। ओत अथवा आदैन सनाव पीवाक यसक छै। माय वावू डाक्टर
 वनेवाक अन्तिम मेँ छै। तहि वीय सहकेँ दृष्टि-दृष्टि अपनो घन
 पन्नामे वृत्ति आ मैगन डे नही मगौने नैह से एहि वृत्ति केँ
 पन्नाहम् वृत्ति मनेवाक ओतगामे जुटै। कानसो नहय, जाकिन्
 गोण प्यायव तँ पुएवाक सेहो यांका नाय्य पडै छै। आव डाक्टर सुमन
 याहै छथि, पन्नाक गोण सँ संकेत नुपेँ अपन असर वृत्ति नाय्य जो पार्
 वैस - वैस डेनामे समग्र वृत्ति छथि से तहि समग्र उपयोग वृत्ति
 गामकेँ ट्यूसन पढाव व्रतनो सँ वेशी कैया कमावथी मुदा प्रो० साहेव

तुष्टकिनास के छेओ ओ एक शक्तिषक पुता आ अपना केँ एक अओ वेढप छाप
 छोड़यवाओ सावति कनप्रमे अपन संकल्प केँ गनीहति गहकनप्र याहैथ ।
 पुताषिठि ठोक पुनईवेठ ट्यूसन पढौनाई केँ आप्पनि अपनाय वुहैठ छथी
 ओना पानी सँ सम्मानो भेटनी, सुगन्ना हुनकामे अनयगानीसुवन केन
 पुतानुप आंकने नहथनि। मुदा गाड़ी क' याओक आ गौकन सह कम्पाउण्डन
 केन पगान सुवंप्र दैठ नहथिह। एक गनीव घनक सुगन्ना सँ भवनाथक वप्रिह
 घटकक वप्रियो समप्र सँ सम्पन्न भेओ। सुगैनासन पुतोह पावा सासु-श्वसुन
 गेहओ भेथैक। पना के थथमागैठ घन - पनविन मे सुगन्नाक उक्थाम कनप्र
 वढ सुगन्ना नहओ। पाठक उपन्यास पढैठ-पढैठ जहन आठम पनाव पन पहुँचता
 जहन सुगैना वेटी वप्रिप्रमे जानवाक पुनसंग भेटन। एक दनि पुनोश्चसन साहव
 माप्रके गच्छिह उदागना सँ वरहओ वेटाक पुनगियिति होईठ जे सोयठार; शनाव
 अश्चनजए पीवके वौआ भवनाथ वेसुय वाट- गाथिमे प्सओ पड़ओ देप्पाएन तँ
 ठोकठाप सँ गड़िजाएव, मुँह ककनो देप्पा पाएव! श्वह सोयैठ स्वास्थप्र पन
 पुनकिूठ असन पड़ैठ छैन। पुनोह केँ सुगन्ना वेटी सम्बोधति कनैठ अपन
 वप्रान मनक आकुठा वनकिहने नहथी एक दनि वेटाक कनिदागी पन सोयैठ
 आ अठमीना वो घनक नहस- गहस स्थिति पन गजान थनि गहँ कप्र पौषिह
 डाकूटन साहवा। आ मूर्च्छति पनी गेथिह तँ पुनोह समहानप्रनि।
 उपन्यासमे पपँदं साओ पछुठका समाजक पनविश केँ एक आकठन मूर्छांकन
 नूपै कयओ गेओ अछी एहिमे गनानीस क्थेनक नितिनिवाण क' यन्या भेओ
 छैक। कोशकिन्हाक टाँट माठकि जेठमे पनओ दडानि जाहिमे योन आ हाथीके
 यठनाई वहुन कष्टपनद वागना - दृश्य उपस्थिति भेओ अछी जेठ पटीनीक
 साधन देहानमे कनीस आ नकन सव पाटपुनजा के यन्य भेथैक अछी ऐ श्वद
 सव सँ गव पढिकि ठोक अपनयिति होईठ जा नहथैक हन। कानस आव सौयिईक
 साधन वोनगि पम्प सेठ, स्टेट वोनगि आ यैनीण दमकठ आ वद्विधुन मोटन सँ
 गानमे गान उपव्य छैक।

ऐ उपन्यासमे सुपान्ना अय्याय सँ आनंन कथा दुपान्ना अय्यायमे जाकय समाप्ता होईछ। देशमे अथवा मथिथि मे ५० साठ सँ कम वयस्कम के ७५% आवादी छैक। एकना ई उपन्यास पढकिय कहि गैक संदेश गही उत्प्रेरणा कएछ। शेष बाँय २५% जे अयवयसू आ वृथाजन छथि, हुनक गणि जीवन गुणमावस्था में छैन। आ ओहिमे साक्षरता ६१ आयक ५०% नहीन। महिथि तँ महिथि जे पुनूष वृत्त सेहे पोथि, पान - पानिका सँ उवाउपन में नहैछ। अपवादमे सेवानिवृत्त लोक सानोय आओन वरिष कय हगिदी - अंग्रेजी उपन्यास पढेमे नमठ नहय छैक। तँ सुनैना वेटी सन मैथिली उपन्यासक' वढ थोन पढ़ाकू पाठक पढैत गुनैत छथि। ओना पुस्तकावय केन शोभा वढावय छैत एहिप्रकारिक उपन्यासकान सनक पोथि जाक ठागठ अवस्य नहैछ। तँ जगदीश बाबू क' पुनकाशति पोथि सन "सगन नागिदीप जगय" कथा गोष्ठीक अवसय पन हनतिन मासे मास आगन्तुक वीय वेन वरिष्ठ जाईछ। एहि सँ पोथिक उपादेयता वढैछ, दशन दुनापन नापठ पोथि देख पनपाहुन मोवाइठ नाप्य हुँसके नवपोथि उत्सुकता सँ देखैत अछि।

१०

वपि पटापैट मानय दयह

वृकथा

कनकनौआ नौदमे गंगाया अपन वटुवा संगे प्येनहि तोड़ैत छथि। वनप्या असमय मेठा सँ सवकँ अपनो नाठ वपौन जेठ नहैक। से जगो नय भेटैक। आवाआवी मुंजाक छीमी शोक जेठ छैक। कानस अगाना प्येती मेगे दोसरो कोठाक कड़ा - मकोना एकजे दठहन प्येतीके गच्छिहे यपेट में छेने नहय। वनप्या दनि पुव जोगान वहीन सेहे उठ नहैक। से कीट छीमी पकनी शुकसियानी काठगे वकूटके पकनगे मनी पनी देप्या। दनिकन कगे काठ छे ह्पाउन मेठा तँ वेटी वटुआ कँ माय कहैत पटहा पाकठ कन्या छीमी जुग तोड़। आ कनपटी

मैं छाड़ने छौक थीम्,आ एने पटापैट वछि दस्यौ।आ ठागठ थीम् पटापैट
 मान्य।गा श्वेन मुकसनि सूनूण माथे सामने उगैग।पहठिके छेगहमि अदहा
 मुग्हि दाठि नहै,से गाम गमाईन पडापन नँ दूसेठे जेतैक आ बीया ठ' नापठ
 जापन नँ मोन नै मानै छग्हि।

११

उद्युक्ता

ई गुड़ प्येनै काग छेदौने

मथिछिंयठ क' एकटा गाममे ठाठजी नामक ज्जानी पुनूक नह्यीओ अपना
 गामक गवाहके वैसागमे गौआँ सवके कहठक है मोन हेईछ पंयापनक युगाव मे
 गढ हेई से छहटा में एकटा कोनू वैठेट हमनो गामे वगय दहक। ठाठ जी यनी
 वेन-वेन सव ननहक मोटमे,जे सामने आवै- ठाय ठाठाहा।ओक मनेमन
 गयिगठनी एकोवेन जीतय गही दैवैक।सयह मेठैक, गौवेन ठडैन-ठडैन अपन
 गनीवीयनी पुवे वढेठनी,तैयो कोनू ननहक सहनुमूनी गही।उपन सँ
 मगगासनाक कतानमे एकटा सनकी पुठसि पुनही केँ ठाठिके मानि सँ गक
 पुणठनीजे वपिक्षी क' ईशाना पावओ ननगुपनी पार्के पुनयोग सँ पुठसिया
 पुठूम वनसठ नहैक।नकनो हँसैग सँहैग मोन मजगून कय कागहाय वेठनी
 ठाठजी।आ कावठि ओक जेकाँ स्वगान वडवनेथी।"ई गुड़ प्येनै,काग छेदौने।"

१२

अम्वोही पाणि ३५७

उद्युक्त्या (मैथिली)

गाम सँ हाट-वाणान जाएव - आयव महामोस्कृति मेथ छैक। नेपाछी वीसवा समुहक वनसागि नदीक पाणि उखान गोडैत मैथिली में आवि गेछैक। पोसुआ माछ कयहनी ठाक पोप्पनि उछैक-कूद क'न्है छैक। वनिगैद मोवाइए पन गप्प करैत जछिय़ा सवके वजौक। शक्तिमहामि एकटा आय मगक' जंगछी वुआनि सेहो वहैक। ओकना पोप्पनि सैनाग सँ वनोवस ठे में सेग साहेव वढ असेन पन मँदैत केने नहनीओ हँसैत ईहो वाजए छछह जो सवसँ गम्हनीका शुनी सगेसमे देव कनि? से वीयानेक हुनके ई पैघ वुआनी माछ शुन-शुनके स्वयं पहुँयावी। जुगून साहेवके वनिगैद कहछनियाया यौ अगम - अथाह वाढाँ सँ गँ सत्कए जेवाक नसतापेना दुवए छैक, से कने कहियौ न मछह नामी कँ पान कय देता। ना अनो प्राप्ती ओहि यौप्पटा गहमे यढैत सवान मेथ। वुआनी कँ जीवैत ओहिपान ए'जेवाक जोगान ठे जएजानके वुआनकि जएशुने गुम्डी ओठक नामी। सव केओ वहिँए-- वधन माताक जयनामा करैत जयकान ओठक-जाय होय। ज्युजए गह एकवाइग हुगुगा गाछीमे जगए, गँ वाईने वागहए वुआनकि पने गही, गुम्डी छटिक जेथ नहय। आव नामी हाकीम ऐथ कतय सँ माछ आगि पुनाओत! सगक जंगन सहैत नामी वनिगैद गानाक माछ एपकि वाहन करैत अपन मुनीमे कंडी पैसवैत सत्पजानकि पुनापिआ कयएक जो आव साकड गही नहव आ गै माछक शेनामे पड़व। वाढकि समयमे वैशनी एहिनी मेछैक अछि?

उद्युक्ता

ठाठोणीक आमगाछीमे एकटा गोण सेगटेउ ठियी'क गाछ शुनै छैक। प्यियेमे कीटव्याधि सँ वयाऊ ठेठ कीट नासक नोगन छनिकाऊ कयने नहय । हुपह्नेपियेमे आई जा देपय य तँ असंप्यय मयुआ शुन-शुन उड़ै छैक। मनसिक जठमे नीक जेकाँ दवाय नैय घोए गेठ नहय। उपनका हुयधिसन दवाय जाहगिम पड़ै(मतिन कड़ा)से तँ जड़किय सुड़ोह छैक। आ ननका दवाय जठमे नानिठ नहै सँ वेअसन कीट ह्नाकय हँसि नहै छै। से देप ओ माथहाथ द' गमहहिमान न' वैसि नहै। ना पून सँ सुपनियि आ ठुनियि छौनी एम्हने गाछी दसि अवैत देपेई । ओ ठियी गाछक मोटगन जयन पन यढि वैस जेवाहाहापिन अनवानकिा सँ सूगयि आ जमुनी, ठाठमन सँगे दूनु वहनि ठियी गाछ पन दुनौसे सँ पजेवाक टुकनी शेकठका काँय-उम्हायठ गोटेक पाँयटा छुयश्चिठ पसठैक। "जहने ठियियि योनय तिसव एउसी हने तँ ऐह" कहि ओ गाछ केँ पूवजोन सँ ह्पेठनीनिया पाकठ ठियी हँहै पथान ठागि जेठ। ओ पाँयू गोने कहठक ओगनवाहिकनैक वनसव्ण ठूटाईये देठहक। तपने सयिाग ठाठमै न वजठिह- नीन शाठ स तँ कृकिटक पेठानिसनके अजादे कयने छथि, ऐवेन उ सव पढाय आओन पनीकषाक तैयानीमे ठाठ छैक ने। तँ अपने महठि मंडउ में सदाव्रथ छुटैठनि अछा। ओहगिमक दोसन गोटे अपन वेदाना ठियीक शुठ आठसय टाकामे ह्मूडा वेयठक ।

१४

उद्युक्ता - नानी केँ नैय छै नाजा

महो जीके भेठगी जे देशी सूनमकि मौयमाछी कैंअपना युम्वकीय आगा सँ
 ईटाप्रपेन नागी घीय आगल।से ओ कुसवाहा जी उग जा वाजठ -अपने कोन
 लहेक मौयमाछी काठक वाकसमे पोसवैह अछि? कुसवाहा जी कहठकैग यौ
 गजान! यूनोपयिन एपि मेघिसेना पुनजान।सिकानी गयिम सँ जेगा-गेगा भेटठ
 हन। आव के एपि खुओनयि।एपसि डोनसटा आ एपसि सेगेठा इंडकि
 पाठ।।से की यौकोनू प्यास वसिषता वुहाइन य।।ताहिपन महो जी वजवाह हे
 देपू जंगि आ गानगीय मौयमाछी पोस गँय मागै छैक।आओन गनसनयि।
 उगाकय नकना प्योताके भगैहयि।ओक प्योयान।मौय तँ छै।य.से देपयि।ककनो
 घन टुटेन छै।न वड दुःख होई छै।मौय आ प्योता अपना छेठ न मौयमाछी सहैजै।
 अछा।ओक सुवांथी केहेन जे नकना अपना छेठ अमृता वूह।ओनयि।वैत
 छैक।हे यौ पहिठि प्यादीवोड आ आव केगुन सनकान कसिगोक आमदन।दूगुमी
 कनैक छेठ मौयमाछीके पोसव पुनोत्साहन यो।जना सँ अगुदानो दैन
 छथि।गजान यौ! आइ वुह गप्प -सप भेठ एकटा वाग कहव- घनमाछी कैं तँ
 अपना देह हाथ पन वैसै।देपने होयव ठटापट।कनै।।इ कहू जे मौयमाछी कैं
 तेना अवस्थामे पौछुँ कहियौ। कुसवाहा जी कहठप्यनि यौ गजान नागी
 मयुमकूपी आकाश वयि।ह कनै।मात्ने एक गन सँ गमन कनै।छैक।जप्यनकि
 ८-१० ट। गन पछोन कनै।समुहमे प्येहजै।छैक।हँ जे गन एटैय भेठा ओ
 सेक्सन।ठिसनशीप कनै।मन।ज।इछ।एकटा कोनू गन कैं अपन जीवन आहुनि
 देनाय नसि।कीये वुहू।

-मो० ७६३१३८० ७६१

अपन मंगल्ये दितो।गाठिसगाड।उवदिह।वामाठियोम पन पडाउ।

જૂનાડા સુમંગલા હા- મૈથવિ

જૂનાડા કશિોન મશિન-અંતર-નમ



નાડા કશિોન મશિન, નાટિકા-૧૭ યોજી પોળાઇ મૈથેના (૬),

વોલસાંલસાં(મુખ્યાલસાં), દાઉરી,ગામ- અમેન ડીહ, પો અમેન હાટ, મધુવની

અંતર-નમ

કાંદક હમના ઓ ગાંનિહ અછાં?
આર મા નામ્ડ મેઠ ઘથાંમિઠાં,
પૂનામ્મિમા ના નાંકિ ના કા પાં,
ઘથાંયા ગનાંહિ ન, મુદા સા ઓ નાં.

સાં હ પડેન સગ્નાં અવેન ઘથાં,
વ્યો મ મે, અગગનાં નેગનાં,
ટમિટમિ શા ઘથાંવા નો સનાં,
મુદા, હુસાં નહાં, હુકન ઘ્હાંમિનાં.

આકા સ આર ઉદા સ અછાં,
ઓઐઘ ને ઓહાંમે હા સ -પનાંહિ સ,
પકટક ના કાંનિહ હમનાં દાંસ,
ઓકનાં મે, કો નો ને અછાંહુઘાં સાં.

અલ્પાં ય્છાંનિં વ્યો મ,
કાંદ ઓઐન અછાંટૂટ -નાં ડાઘ?
યગકઠ, દનાં નપિડઠ પેનાં,
શ્વા ટઠ નાંપા ઠ સનાં ટા ડાઘ.

કેનાં કે ના ઠનાંશુષ્ક મેઠ,
પો નામ્ -શો નામ્,ગા ઘી મે નાં,
ઠહઠ શા નાનાં નાં, પેનાં મે,
ઓઐન અછાંહિમનાં, નાં મુનાં.

केओवा क सुगंध सुँघए ठेठ ,
 आएठ ,गाने सँ मनैठ ,गुहमन,
 सुगंधओ कएक पुनरा व्रति नहि,
 कऽ पा वनिहठ अछिहिन मन?

सुँदर संगी न सँ, कहठ जा इछ,
 जानय ठौन अछिवा ती क टेमी ,
 वसिनिजा श छथिनिह -वेदना ,
 गी न -नान्द, सुनि, को नो पुनेमी ।

कए भेठ वेशसन, गां यन्त्र -व्रिद्धा ?
 कए हिन मो न, गेठ अछिनिदिआ?

हनिअ कयो न अनामय वो य मे,
 हहिनि -हहिनि हहैत अछिहिनगा ,
 वढिनी सन ओ ननिननिगा श,
 आ, का न मे हऽन पडैत हे अप जेना ।

कठ-कठ यवनि, कनैत वैहैत अछि,
 मनो हा निसी सनिता ,
 ठा गनिहठ ओ अठहऽ सन ,
 आ, गौ नवा हनिठेको नो वनिता ।

याडै -युगमुनक पग -यवनिमे,
 युमवक सन हे श अछिआकन्पस,
 कए ठौन अछिगी न ओ?

हे अए ओ को गो , तुमुठ क्कगदग।

देप्पय गेठुँ , गठगयि को गा ,
क्की डा क्कैग छथि गो आगि सँ,
ठा गठ, सयि क मो ग अपने
वेकठ, उक्का ठ गगि वा गि सँ।

सा गस -हुम्ड, खा गठ गदी के,

आ उडठ अगगग अका स मे,
को शसि ओकग उगटे ठा गठ,

गुगठा गे गा ए , पुग्या स मे।

सहि कठ एहन सुगदग वसा ग,
काए गहि सपुस मे सुखुगस?
मो ग के गहि दिस गठ अछि,
शां गि शी गठा -गुगस।

यगिग , अग्वेपस केठुँ,
कगए अछि ई अगहा ग?
अछि ई अगस- गम , कगि वा ,
पसगठ अछि ई, वहा ग?

घो ग शो थक वा द वुहठुँ,

गगि गहि मिगि ग , गे कगैछ अका स,

धनी , या न, नत्रि, वृषो म, ननेगन,
सम मे नमि उन्नुवठ पुनका श।

गा छ -वनिछि, सधु,धुनंगामिी ,
हना , प्पग, संगी न, वसा न,
सम मे उन्ना नमि अछिओहना ,
ननु अछिहनाश्चि, हनाश्चि पा न।

ई अछिहमि दृष्टिकि दो प,
मो न मे पसमि अछिअनहा न,
क्रमा नमकना -नम मो न मे पैसठ,
तौ ठौन अछिहुनाश्चि वेका न।

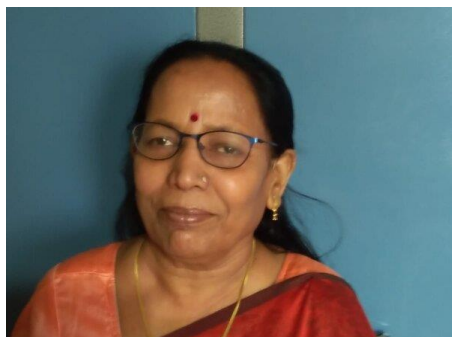
सका ना नमक सो य सँ, नप्पन
नगअओहुँ मो नक नी नम अनहा न,
विक्रम ठा गानिहठ वरह हुनाश्चि,
मन मे वरह ठा गठ सुप्प -या न।

सगटा नऽ सो यक छेना छै,
सुप्प -हुप्प ओकने पेडा छै ।

सदप्पिन, वरिया न सका ना नमक,
नहय पसमि मन मे ओकने शो न,
वरह अछिअन, सुगग, स्वा स्ना,
नगिगी मे नी नक, वरह अछिस्नो न।

अपन मंगवृधे दतीनाठिसनाडडवदिहवाभाठियोम पन पडाउ।

ઝરંગિમલા કાન્ન- ખૂડ શોભ



ગનિમલા કાન્ન ખૂડ શોભ

મથિથિક પાવન ત્યોહાન ખૂડ શોભ,
અદ્ભુત અઠૈકકિ દલિય અનુભૂતી
પૂના: કાઠ ગોદ મે માથ પન વાસા,
શોભ દૃઢક સંગ સ્નેહિત થપકો ।
વૃહા ધાદ અવૈન અઘાઈ હમના,
માપ કાકો ક આસીત્વાદક ગનિહામિસી ।
ખહિયા સં શહન મે વસઠહું,
પૂનામાયા વસિનિગેઠ ઘઠહું ।
અપન વય્યા સઘ કે દૈન નહિ,
હમહું ઓહિગા ખઠ સૌ થપકો ।
મુદા અપને મે ઇગૈન ઘઠ,
કઠિ અપૂનામાક આગાસ ।
ખાવે ધનિ હમ ખઠ ઇપ ખાઈ,

ओकनो सवहक गनिग पुठि जाय ।
 कानस वैह एकमात्र १६७,
 सहक आपायापी सँ घेनाय ।
 पहिने सूकूँ छे १ कौँछि,
 आव पुनातः आँखसि मे ओहनाय ।
 वछिग पन शीतल जे सँ,
 पुनायव वसिनादि ७ हमहुँ ।
 कनि वछिग गणिवाक यनिना,
 सेहो नहैक जागूँक सगनाग के ७
 आव आवस्यक वुहना जाइछ,
 समहदा १ जागूँक मेठाक वाद ७
 अपन कोमली वछिग के,
 गीतस सस वयेगई सहेजगार ७
 आव पावनि अयूना कोना,
 गहि नहल अहिकहु ७
 सव पावनि के केछुँ,
 अपन हिसावै सहकानस ७
 छे १ पावनि पुनासा,
 आगव कोन व्रिधि ७
 पुनासाक ७ पन आवस्यक,
 अछनि शिछवना जे अछि ७
 हमना सवहक जीवग सँ,
 आव वृष्टिप नय जे ७
 आयुनि के छुँ हम मुदा,
 माय दादीक पुनाग वैह सँसका ७
 अतःस्थ ७ मे वस ७ अछि,
 आव वृद्धा अछि हमना ७

ગહિ આયુગકિ વગિ પપ્પઠું,
 ગહિ વસિનઠું અપન સંસ્કાન ઇ
 આયુગકિ ળીવગ સં ઓહનાપ્પઠ,
 પ્નાયિ પુનાનગ હમન અપન સંસ્કાન ઇ
 પ્નાયીગ અન્નાયીગ મેઠ એકસાન,
 હમ દુગૂકે વીય મેઠ છી ગાડ્ડમડ્ડ ઇ
 મૈવન મે સંસઠ પ્નામી સગ,
 વેકઠ સોયેઠ છી કમિહન ળાઝ |
 આયુગકિના છોડિ ગહિ સકેઠ છી,
 સંસ્કાન વસિન ગહિ સકેઠ છી |
 આર્ધ એક વ્યકુઠનાક સંગ,
 કાપિક હમના પ્રાદ અવેઠ અછી |
 અપન પાવગકિ ગસિછઠા,
 દલિપ્પના અપન દવઠ સંસ્કાન |
 સવ પ્રાદ દપિઠક હમના,
 હહિ વેનક પ્રાડ શીઠઠ પાવગી |
 હહિ પાવગી મે હમ મેઠ છઠું,
 અપન ગામ અપન ળગ્મસ્થાન |
 વહગિ મૌળી મીઠીળા મીઠીળી,
 સગક મેઠ છઠ ઘન મે ળુટાન |
 આપ્પનિ અવસન છઠ માનાળિક,
 શુગ વ્રિહિક પાવગ સંસ્કાન |
 ગોષ્ઠી ળમઠ છઠ વહગિક સંગ,
 વીઠ મેઠ નાકિ તીન પુનહન |
 પ્નાનઃ કાઠક મન્દ મગોનમ,
 વ્રાનાવ્રામ મે નહિ ગન્ગિ મે ડૂવઠ |
 માથ પન મેઠ મધુન સ્પનસ શીઠઠ,
 આપ્પિપ્પુળઠ દેપ્પેઠ છી ઓનસ |

गढ़ छैथ हमन वड़की मौजी गेगे,
 अपन एक हाथ में जाँच मन छोट ।
 दोसन हाथक शीतल जाँच माथ पन,
 हमन केश सँगा वछाग नकिया गणिवै ।
 आशीनवाहक नित्हासी सेहे वहवै,
 हम व्रमुगय गय हुनका रहैहुँ देखै ।
 याद आवाँगेँ अपन वात्स्यासथा,
 अहनिग न माथ सेहे दैग छै ।
 सब साँच शीतल आशीष,
 नहैग छै सँगा मायक हाथ हमन शीश ।
 माय के याद कय आँखनिगोना गेँ,
 मौजी में माय के दृशन पावै
 हिया में जागै श्रद्धा हमन हाथ,
 हट हुनकन यनास पन पहुँचै गेँ
 मधुनके टा नहि आत्मा नक,
 हमन गय गेँ शीतल नित्म
 आयुनकिता के त्यागहिम,
 पुनः भेटहुँ अपन मायक संस्कार
 आव हमन जाँच शीतल नहि नहै,
 कहियौ आयुनकिता मन अतृप्त
 सदपिग होय मायक गेगे संस्कार,
 शीतल सनै सौम्य समुपन

अपन मंगल्ये दियोनिगोनाउड़वहिलाभाषियोम पन पडाउ ।

ઝરફસિન કાનીગા- આ ને સુગ્ગા આ આ (વાઇ કવ્રાતિા)



કસિન કાનીગા
આ ને સુગ્ગા આ આ (વાઇ કવ્રાતિા)

આ ને કૌઆ આ આ
આ ને સુગા આ આ

આ ને મૈના આ આ
આ ને વગાના નહૂં આવડિો

यडि युगमुन सव आ आ
दौगा गौगी वौआ संगे पेछे जो

हे सुग्गा तू वौआ के नोटी बै पैहयि
हम तोछे छै नोटी नयने छयि

हे मैना आर तू कतअ तेह गोछहि
हमन वौआ तोना नकै छेछै

आ ते वगना जछेदी आवजो
हमन वुय्यी कटोनी मे पान नयने छै

यडि युगमुन सव यूं यूं यी यी कतै
हमछा वौआ के कते नीक छाछै

आ सव मछि के पेछे जाइ जो
हे पेछाइन पेछाइन हगाड़ा बै कतै जाहयि

आ ते सुग्गा आ आ
वौआ संगे पेछे जो

अपन मंगल्ये दगिनीछिसनाउड़वदिहवाभाछियोम पन पडाउ।

अगमन ओहनिा छौ छै
 जेना युष्कि आगी,
 ह्वन केश के वीय जेना
 आम्पि के उम्बिा नन सं
 कछु भोग के प्यगाना !
 एहन वृत्तगाना ?
 ने अपन ने आन,
 नयौ जियैत नहै भोग क पुनास,
 टसि टसि क्यैत नहै
 ओ भोग क कोन,
 ककना कहू कनय यु
 वडु ओछाहि अछि
 २ समय क पान्ना,
 ने वाट ने वटोहि भेटै ,
 नहि नहि क ओ भोग क प्यगाना
 वधिसैत नहै,
 शब्द क नयैत सुनैगाना सं
 पांता पांता गमकैत छै,
 पूहै जाहि सव सजै
 नयौ भोग कटाह वोग में
 छछियैत नहै।
 -कल्पना हा, वोकागो

अपन भानुप्रे दगिा नहि सना डड्रदिहागामाधियोम पन पडाउ।

જપડા સુમંગલ દા- મૈથલિ



डा सुमंगा हा
मैथिलि

आपन आँउन आपन वाड़ी,
अपनहि प्येन के साग-प्येसाड़ी।
जीन म सुवाद! गड़ठ अछि ऐहैन,
पाँयो-सगिना मे, पाओठ न तेहेन।

कदीमा-शूठ, गठिकोड़क गुआ,
वड़ी-गान संग! कनैठा के गुआ।
पुटुआ-साग-गमिमन, अछु के सगना,
मथिलि प्रसधिए अछि प्योन-मपाना।

छुटपन, पयि छठहुँ सुनाहि के गोन,
हृदमे नहैन छठहुँ आनो पन मोड़।
वेठ, पुदीना आओन गेवो के सनवन,
कहियौ न वुहरो, छाछ के माहन।

आव जो वसठ छौ, कंकनीट क देख मे,

वसिष्ठजी वोतठ कबू, नहू वदिस में।
 श्लोक स समग्र छिये, नयन कनू भेट,
 वनि वौने पहुँचव न वंद भेटन गेट।

गप-शप, गीत-गाए, मोन-साँह हगाड़ा,
 बूहै में न कहियो आपठ की छठ वय्यड़ा।
 बुढ़ानी में अठगो स दनि काटू असगन,
 नहि नहि बुध्द जाँसन, सौसे देह ठड़वड़।

अंनकाठ मन पड़न, पुननका ओ अंठना!
 गोतायि-गेना, वाड़ी-हाड़ी, छनकैत कँठना।
 पुनगानि वसिष्ठ भेट, ठठना सब वदिस गेट,
 भयिषि के ययि-पूत, दुनयिँ में पसैत गेट।

कोमनयिषि, गुटेनमॉन, नहिओ, हैथे-हाय!
 जापानी, अंग्रेजी, जन्मन-यिनी सोय्य जाय,
 पूजा-पाठ, कर्मकास्ड! संस्कृति छुष्ट गेट,
 आन भाषा सोय्य-पढ़ा, भैथिषि वसिष्ठ गेट। डॉ सुमंगल हा।

(डा सुमंगल हा, श्रुत्य, हसनन महिषि काँठन वंगठनु के सेवा नवितृत्त हदि
 वनिगाययक्ष छथि)

अपन भंगवृत्ते दिति नितिसना डड़वदिलगमावियोन पन पडाउ।

